जनवरी 2009 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

BSA LADYBIRD
Your best friend for life.
Introducing
BSA LADYBIRD XS
Act Create Play
Push your boundaries and explore new horizons. Because with the all-new Ladybird XS you can go wherever you want to. The perfect combination of stylish, feminine looks and a strong, rugged frame, it's the right companion for girls who believe in having the best of every world.
Bring home a Ladybird XS and bring out the adventurer in you.
www.ticyclesindia.com

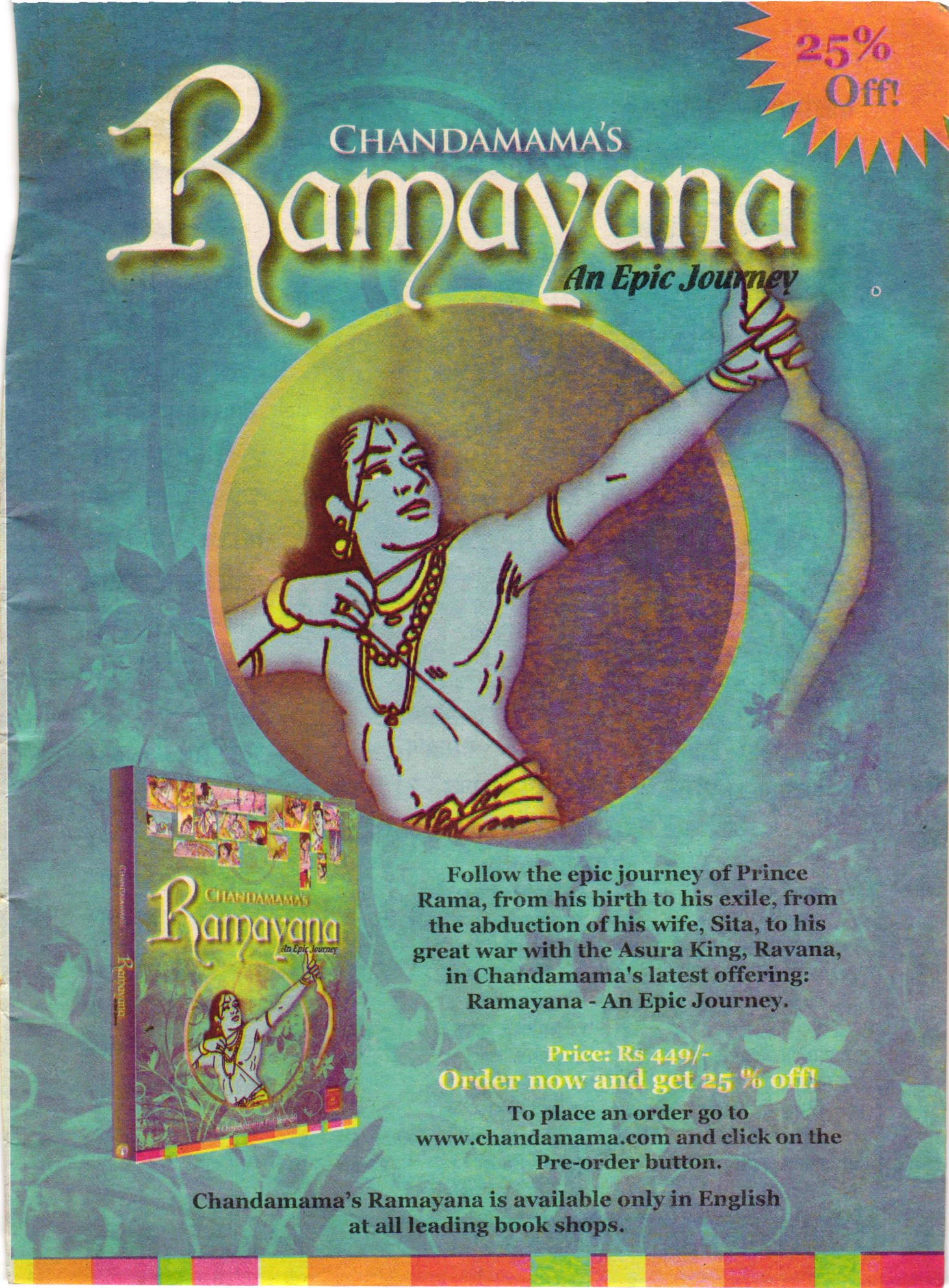

25% Off!
CHANDAMAMA'S
Ramayana
An Epic Journey
CHANDAMAMA'S
Ramayana
An Epic Journey
Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.
Price: Rs 449/-
Order now and get 25 % off!
To place an order go to www.chandamama.com and click on the Pre-order button.
Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

चन्दामामा सम्पुट-६० जनवरी २००९ सञ्चिका - १

विशेष आकर्षण

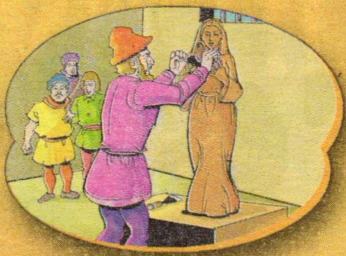

शशिकला का निर्णय (वेताल कथाएँ) ...१९

स्वीटजरलैण्ड की एक कथा ...४४

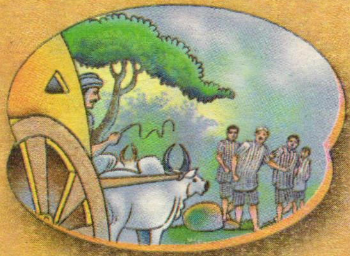

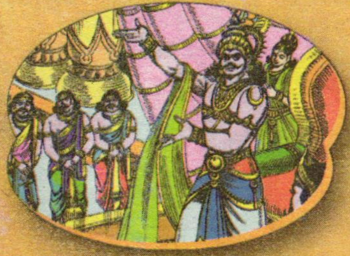

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१५ ...४८

रामायण (युद्ध काण्ड - १) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* कल्पवृक्ष ...०७
* क्रिकेट एवं संविधान ...११
* पाताल दुर्ग-६ ...१३
* बच्चे अख़बार की सुर्खियों में ...२५
* पौराणिक युवा नायक-८ ...२६
* भारत दर्शक ...३०
* बीरबल की कहानियाँ-१७ ...३२
* उदीयमान सितारा ...३७
* अपना-अपना अभिप्राय ...३८
* भारत के धरोहर-स्थल ...३९
* कागल गाँव का व्हेल ...४०
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३६ ...४६
* सचिन क्रिकेट के एवरेस्ट पर ...५१
* समाचार झलक ...५२
* जातक कथा ...५३
* अग्नि-परीक्षा ...६३
* सच्चा राजा ...६७
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१२ ...७१
* आप के पन्ने ...७३
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

अमर वाणी

समर्थ व्यक्ति के लिए बोझ क्या चीज़ है? कार्य-साधक के लिए दूर ही क्या है? विद्वान के लिए विदेश से क्या मतलब है? इसी तरह मीठी बात करने वाले का दुश्मन ही कौन होता है?

इस संसार में कोई भी व्यक्ति केवल अपने स्वभाव से दूसरे की दृष्टि में अच्छा या खराब व्यक्ति नहीं कहलाता, बल्कि मनुष्य का बड़प्पन या नीचता उसके कार्यों के द्वारा आंकी जाती है।

युवावर्ग के लिए ''उत्तिष्ठ व जाग्रत'' की वेला

''उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की सिद्धि नहीं हो जाती।'' सन् १८९३ में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद (वर्ल्ड पार्लमेण्ट ऑफ रिलिजन्स) में गूंजे स्वामी विवेकानन्द के प्रायः उद्धरित इन शब्दों की महत्ता १२५ वर्षों के बाद आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन शब्दों का आशय था विश्व बन्धुत्व को प्रोन्नत करना। स्वामी जी ने सहिष्णुता के आधार-शैल पर निर्मित भारत की भावना पर भी बल दिया, जिसकी शिक्षा उन सभी आधे दर्जन धर्मों द्वारा दी जाती है जिन्हें भारत के लोग मानते हैं।

जो भी हो, हमारे अपने ही देश में हुई पिछले दिनों की घटनाओं के बाद भारत का लोकाचार आहत हो गया है– इसलिए कि एक धर्म-विशेष के अनुयायियों ने अपने धर्म के आधार-भूत सिद्धान्तों की परवाह न करते हुए, कुछ अप्रत्याशित क्षेत्रों में आतंक फैलाने का निश्चय किया।

सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि इन घटनाओं में शामिल अधिकांशतः नवयुवक थे जिन पर कोई मन में गुप्त या दूषित प्रयोजन छिपाने का सन्देह नहीं कर सकता था। वे बहकाये हुए कुछ तरुण थे जो अपने सीधेपन के कारण लोगों के विश्वास को नष्ट करने पर तुले थे। यह सोचकर कि विश्व के तरुणों को ही स्वामी विवेकानन्द ने, जिनका जन्मदिन प्रतिवर्ष १२ जनवरी को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है, सम्बोधित करते हुए ये महत्वपूर्ण शब्द कहे थे, यह और भी हृदयविदारक लगता है।

काले बादलों ने २००८ की भारत की उपलब्धियों को मानो मटियामेट कर दिया जहाँ खेलकूद की दुनिया में अभिनव बिन्द्रा, सान्या मिर्जा, विश्वनाथन आनन्द आदि व्यक्तियों ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। विगत वर्ष भारत की अन्तिम पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी अन्तरिक्ष विज्ञान में जब देश के वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा के अब तक बने प्रच्छन्न रहस्यों को जानने के लिए उस पर चन्द्रयान भेजा। हमें इन सभी उपलब्धियों पर गर्व है।

हम कामना करते हैं, नया वर्ष २००९ भारत के युवा वर्ग में उनकी सकारात्मक ऊर्जा के संचय का वर्ष हो जो देश में शान्ति और सामंजस्य में खतरा बनने वाली विभाजक शक्तियों को नष्ट कर सके। जब तक इस लक्ष्य की सिद्धि नहीं हो जाती, हम रुकें नहीं।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com/hindi

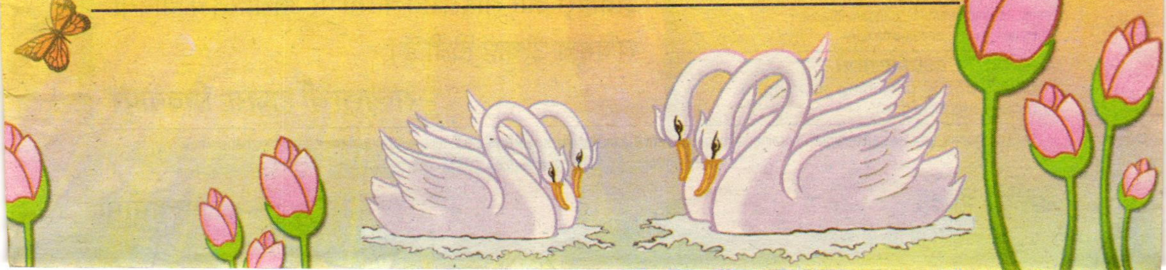

Founded by
B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, *Manager-Circulation & Institutional Sales - South*
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North***
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager - Karnataka***
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East***
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval, *Sales Officer-Circulation***
Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : sowmya.b@chandamama.com
Head - Business Development : **Surajit Agarwal**
email : surajit@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
2/513 (Old 3/396), Sandeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041
Phone +91 44 32402323
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

ANNUAL SUBSCRIPTION :
Foreign : US$30 (including shipping and handling charges)

पाठकों का पन्ना

मैं *चन्दामामा* की कहानियाँ बचपन से पढ़ रही हूँ। मैं उनके भारतीयपन तथा नैतिक मूल्यों को, जो पाठकों के हृदय को छू जाते हैं, सराहने में कभी चुकी नहीं। आशा करती हूँ कि भारतीय अनुभूति तथा आज का सन्देश बाल पाठकों को लाभान्वित करेगा।

- के. मीनू भूषण, फरीदाबाद

इतनी सारी भाषाओं में इतनी सुन्दर पत्रिका के प्रकाशन के लिए *चन्दामामा* के मालिकों को मेरे अभिनन्दन! इस अन्धव्यवस्थित काल में, जब हमारे राजनीतिज्ञ यथा सम्भव आधारों पर राष्ट्र को विभाजित करने पर तुले हुए हैं, यह राष्ट्रीय एकता की ओर एक ईमानदार और मौन परन्तु महान प्रयास है। ***- रणजीत पुन, चण्डीगढ़***

चन्दामामा जैसी उत्कृष्ट पत्रिका मैंने पहले कभी नहीं पढ़ी। मैं जानना चाहूँगा कि क्या विविध भाषाओं के संस्करणों में कोई अन्तर है? यदि वे सब एक ही समान हैं तो इससे पाठकों को दूसरी भाषाएँ सीखने में मदद मिलेगी। ***- रवि मुतगी, धारवाड***

'गलती मान ली' कहानी (नवम्बर २००८) बहुत अच्छी थी। ***- श्रीहर्ष कामथ, मुम्बई***

मैं *चन्दामामा* का नियमित पाठक हूँ। *चन्दामामा* पढ़ते समय मैं स्वप्न और कल्पना लोक में विचरने लगता हूँ। इतिहास और साहसभरी वीरता पर आधारित कहानियाँ सचमुच उत्कृष्ट होती हैं।

- सब्यसाची हाजरा, मिदनापुर

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

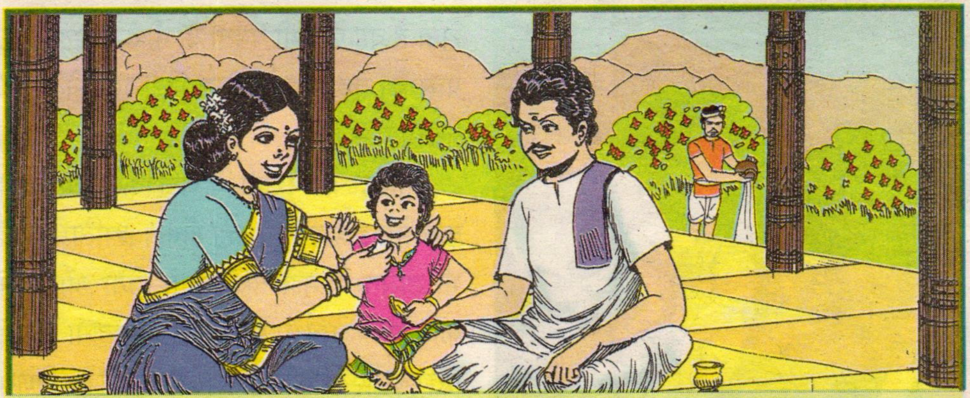

कल्पवृक्ष

गोविंद अनाथ युवक था। उसका कोई भी नहीं था। एक दिन कोई न कोई काम ढूँढने वह राघवपुर जाने के लिए निकल पड़ा। गाँव के निकट आते-आते वह थक गया। गाँव की सरहद पर ग्रामदेवी का मंदिर था। थकावट दूर करने के उद्देश्य से वह मंदिर के आगे बैठ गया। तब मंदिर का पुजारी वहाँ आया।

बातों-बातों में पुजारी को मालूम हुआ कि गोविंद काम ढूँढ़ते हुए आ रहा है। पुजारी ने उससे कहा, ''अच्छा हुआ, तुम सही समय पर आये हो। कुएँ से पानी खींचना है, और मंदिर को साफ़ करना है। यह काम करनेवाले आदमी की खोज में हूँ। तुम यह काम करोगे तो हर महीने दो अशर्फ़ियाँ दूँगा।''

गोविंद को लगा कि गाँव में क़दम क्या रखा, काम मिल गया। जब तक इससे बेहतर काम नहीं मिलेगा, तब तक यही काम करना ठीक होगा। गोविंद ने पुजारी की बात मान ली।

हर दिन प्रातःकाल ही कुएँ से पानी खींचता था और मंदिर को साफ करता था। साथ ही मंदिर के आगे-पीछे जो पेड़ थे, उन्हें पानी देता था। शाम को मंदिर के अहाते में पानी छिड़कता था। वेतन के साथ-साथ पुजारी दोनों वक्त उसे प्रसाद दिया करते थे। रात को वह मंदिर के अंदर सो जाता था।

वह इन कामों से थोड़ा-बहुत संतुष्ट था, पर जब नव दंपति भगवान के दर्शन करने आते थे, उन्हें देखकर लगता था कि मैं भी शादी करके, एक मकान बना लूँ और आराम से ज़िन्दगी बिताऊँ।

देवी नवरात्रि के दौरान पुराण गाथाएँ सुनाने एक पंडित आये थे। एक दिन कहानी सुनाते समय पंडित ने कल्पवृक्ष के बारे में बताया। उन्होंने

डा. शिवकुमार

कहा था कि मानव जो भी चाहेगा, यह कल्पवृक्ष उसे देगा। उसकी सारी आवश्यकताएँ पूरी करेगा।

पुराण पठन की समाप्ति के बाद पंडित जब विश्राम कर रहे थे, तब वह उनके पास गया, नमस्कार किया और पूछा, ''क्या आप बता सकते हैं, यह कल्पवृक्ष कहाँ है?''

''वह देवलोक में है'', पंडित ने कहा। ''आपने यह क्या कह दिया, क्या वह भूलोक में नहीं है?'' गोविंद ने पूछा। वह निराश हुआ। ''क्यों नहीं होगा। परंतु उसे कलियुग कल्पवृक्ष कहते हैं'', पुजारी ने कहा।

''वह कहाँ है, क्या आप बता सकते हैं, पंडित जी।'' गोविंद ने बड़ी ही आतुरता-भरे स्वर में पूछा।

''मैं यह स्पष्ट रूप से नहीं जानता। फिर भी सुना है वह पश्चिमी पर्वतों के नीचे के इंद्रांद्रि के पास है। वह सदा फल-पुष्पों से भरा होता है'' पुजारी ने कहा।

गोविंद सोचने लगा कि यहाँ कितना भी काम करूँ मेरी इच्छाएँ पूरी नहीं होंगीं। इसलिए किसी भी हालत में मुझे वहाँ जाना होगा और उस कलियुग कल्पवृक्ष का पता लगाना होगा। तभी मेरी इच्छाएँ पूरी होंगी। उसने वहाँ जाने का निर्णय कर लिया और किसी को बताये बिना सवेरे ही निकल पड़ा।

पाँच दिनों तक की यात्रा के बाद वह पश्चिमी पर्वतों के निचले भाग में पहुँचा। वहाँ उसने एक छोटी झोंपड़ी देखी। देखा, उसके चारों ओर आम के पेड़ हैं। उसने वहाँ एक किसान को भी देखा, जो पेड़ों को पानी से सींच रहा था। औरतें भी इसी काम पर लगी हुई थीं। देखने में वे माँ-बेटी लग रही थीं।

गोविंद ने किसान से पूछा, ''महाशय, मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ। एक पंडित ने कहा था कि यहाँ एक कलियुग कल्पवृक्ष है। उसी को ढूँढ़ने आया हूँ। क्या आपको उसके बारे में मालूम है? लगता है, आप लंबे अर्से से यहीं रहते हैं।''

किसान ने सिर उठाकर उसे देखा और लंबी साँस खींचते हुए कहा, ''मैं भी बहुत दिनों पहले कलियुग कल्पवृक्ष को ढूँढ़ते हुए यहाँ आया था। बहुत ढूँढ़ा, पर उसका पता नहीं चला। अब तुम भी उस काम पर आये हो। दोनों मिलकर उसे ढूँढ़ निकालेंगे। मिल जायेगा तो दोनों की इच्छाएँ

पूरी होंगी। तब तक तुम्हें इन आम के पेड़ों को पानी देने में मेरी सहायता करनी होगी। जो मेहनत करोगे, उसका फल भी दूँगा। क्या तुम्हें यह स्वीकार है?''

''यहाँ भी पानी ही खींचने का काम ! फिर भी यह काम करूँगा, क्योंकि कलियुग कल्पवृक्ष को ढूँढ़ने का काम दोनों मिलकर करनेवाले हैं।'' गोविंद ने कहा।

उस दिन से लेकर वह पेड़ों को पानी देने के काम में लग गया। फ़ुरसत के समय वह जंगल में जाता था, और कलियुग कल्पवृक्ष को ढूँढ़ने का काम करता था। यों दो तीन साल गुज़र गये। पर कलियुग कल्पवृक्ष का पता नहीं चला। गोविंद अब किसान के परिवार का एक अंग बन गया।

उस साल आम के पेड़ों में फल ही फल थे। वे बहुत ही मीठे व स्वादिष्ट भी थे।

एक दिन फलों का एक व्यापारी एक सेवक को साथ लिये राजधानी जा रहा था। थक जाने के कारण वह आम के पेड़ के नीचे बैठ गया। किसान ने दो आम उसे खाने के लिए दिये। उन आमों को खाने के बाद व्यापारी ने कहा, ''वाह, कितने स्वादिष्ट आम हैं। इन सब फलों को मुझे दे दो। जो रक़म माँगोगे दे दूँगा। मैं इन आमों को राजा के अंतःपुर में देने पर मैं भी लाभ कमाऊँगा, साथ ही नाम भी।''

किसान ने 'हाँ' कह दिया। अपनी मेहनत का फल मिल गया, इस पर वह बेहद खुश हुआ। व्यापारी ने किसान की मांगी रक़म दे दी और

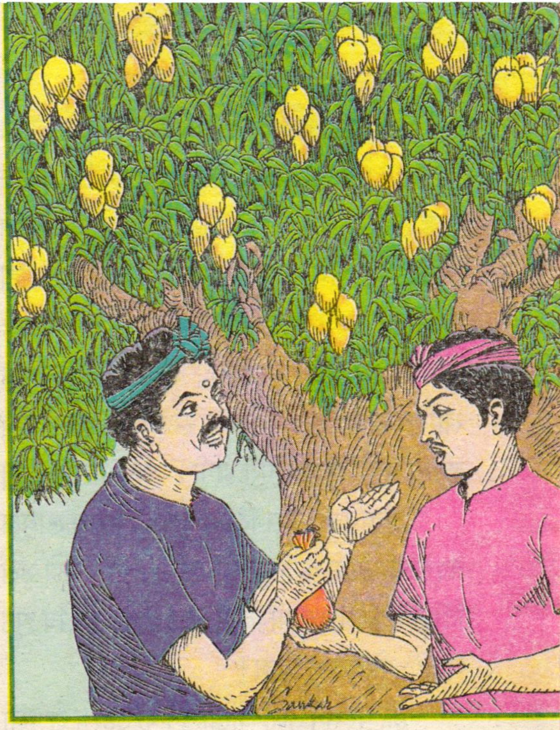

कहा कि दो-तीन दिनों में गाड़ियाँ भेजूँगा। इन्हें उनमें भरकर भेजना।''

उसकी मेहनत का दुगुना दाम मिल गया, इसपर किसान और उसका परिवार बहुत संतुष्ट हुआ। पास ही खड़े गोविंद से किसान ने कहा, ''इस फल में तुम्हारा भी हिस्सा है'', कहते हुए उसने आधी रक़म उसके हाथ में रख दी।

पर गोविंद संतुष्ट नहीं था। उसने कहा, ''इस रक़म से मेरी इच्छाएँ पूरी नहीं होंगी। आप कल्पवृक्ष का पता नहीं बता सके'', निराशा-भरे स्वर में उसने कहा।

''अभी-अभी तुम्हें कल्पवृक्ष का पता मालूम हो गया। तुमने ही इस पर ध्यान नहीं दिया'', किसान ने कहा। गोविंद ने तुरंत पूछा, 'कल्पवृक्ष' वह कहाँ है?''

''कल्पवृक्ष वह है, जो सब इच्छाएँ पूरी कराता है। हमने पेड़ों को पानी दिलवाया, उनकी अच्छी तरह से देखभाल की। फलस्वरूप हमें यह रक़म मिली। इस धन से तुम्हारी सारी इच्छाएँ भले ही पूरी न हों, पर इसी तरह मेहनत करोगे तो क्रमशः तुम्हारी इच्छाएँ पूरी होंगी। तब यही कल्पवृक्ष साबित होगा। इन्हें हम प्यार से पालेंगे-पोसेंगे तब हमारी सारी इच्छाएँ पूरी होंगी।'' किसान ने कहा।

''आपने तो उस दिन कहा था कि कल्पवृक्ष का पता लगाने के लिए ही यहाँ आये थे। मुझे उसे दिखाने का वचन भी दिया था। क्या यह सब झूठ था?'' गोविंद ने पूछा।

''हाँ, पर मैंने तुम्हें धोखा देने के उद्देश्य से ऐसा नहीं बताया। मैं भी जब जवान था, तब बिना मेहनत किये बड़ा बन जाने के सपने देखा करता था, हवा के बाबूल फोड़ता था। अनेक व्यापार किये, पर कुछ भी कमा नहीं सका। पिता की दी सारी जायदाद फूँक दी। इतना सब कुछ हो जाने के बाद ही मेरी बुद्धि ठिकाने पर आयी। जान गया कि सच क्या है और क्या झूठ है। इसके बाद मैंने मेहनत पर विश्वास किया। जब मुझे मालूम हुआ कि तुम भी मेरे जैसे ही हो तो मैंने तुम्हें सही रास्ते पर ले आने का निश्चय कर लिया। मेहनत का मूल्य तुम जानो, इसी के लिए मैंने तुमसे झूठ कहा था,'' किसान ने कहा।

गोविंद यह सब सुनकर स्तब्ध रह गया, इतने में किसान की पत्नी झोंपड़ी से बाहर आयी और पति से कहने लगी, ''अब भी असली बात बताने में झिझकते क्यों हो? जो मन में है, बता दो न।''

किसान ने सिर हिलाते हुए कहा, ''गोविंद, तुम्हें कहीं भी जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे ही साथ रहो। तुम्हें कोई एतराज न हो तो अपनी बेटी से तुम्हारी शादी कराऊँगा। भविष्य में तुम मज़दूर नहीं, मालिक हो।''

गोविंद ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद 'हाँ' कह दिया। यों इसकी पहली इच्छा पूरी हुई। घर के सब लोगों के साथ उसने भी कड़ी मेहनत की और थोड़े ही समय के अंदर बाग के बीच में घर बनाया। अब उसकी दूसरी इच्छा भी पूरी हो गयी। बच्चों को जन्म देकर आराम से जीवन बिताने लगा।

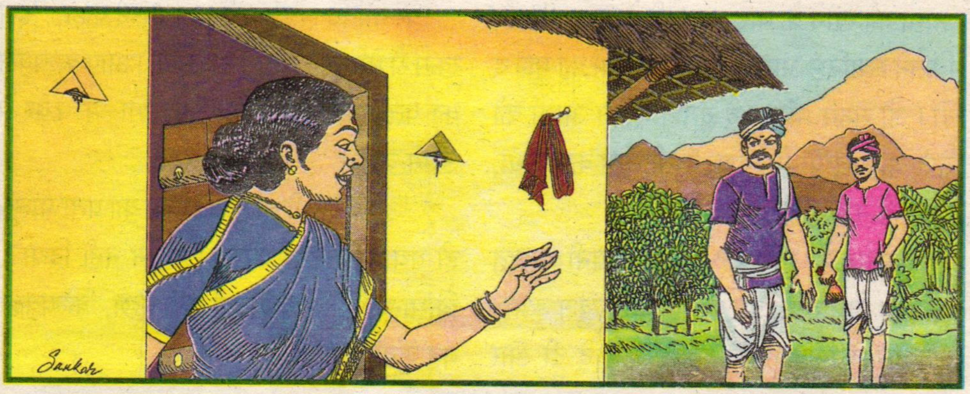

क्रिकेट एवं संविधान

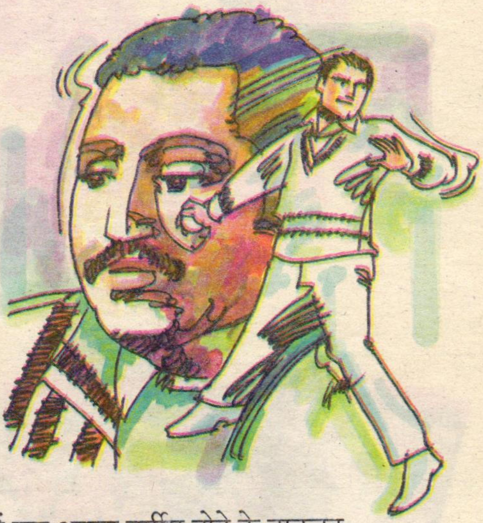

स्वाधीनता संग्राम में डॉ.बी.आर. अम्बेदकर की भूमिका तथा अछूतों के उद्धार में उनके अमूल्य योगदान की कहानियाँ ऐसी है जो लोकप्रिय जनश्रुतियाँ बन जाती हैं। संविधान सभा द्वारा निर्मित भारतीय संविधान के लागू हो जाने पर जब २६ जनवरी १९५० को भारत एक गण तन्त्र राष्ट्र बन गया, तब देश इस बात पर गर्व कर सकता था कि इसका कर्णधार, जो अन्याय के बीच पैदा हुआ था, आज का दिन अपना सिर उठा कर देखने के लिए जीवित रहा।

प्रत्येक नायक को प्रेरणा की आवश्यकता होती है। अम्बेदकर की प्रेरणा का स्रोत था धारवाड का एक अछूत क्रिकेट खिलाड़ी पालवंकर बालू। समाज में एक अछूत वर्गीय होने के बावजूद, वह २० वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में देश में सर्वोत्तम गेंदबाज था। बालू ने दक्कन जिमखाना क्लब को केवल उसकी खेल-कुशलता के आधार पर उसे स्वीकार कर लेने का अनुरोध किया। क्रमशः उसके भाइयों– शिवराम, गनपत तथा विट्ठल, ने भी टीमों में खेलना शुरू किया। ये लड़के निस्सन्देह असाधारण प्रतिभाशाली गेंदबाज थे...यहाँ तक कि विट्ठल को, जो १९२३ में अपनी टीम का कप्तान बन गया था और अपनी टीम को बहुत बड़ी विजय दिलाई थी, ऊँची जाति के हिन्दुओं ने अपने कन्धों पर उठा लिया था।

बालू के साहसिक कदम ने कहीं और एक चिनगारी सुलगा दी थी। अम्बेदकर प्रायः "इस अछूत गेंदबाज के ठोस आकार पर गर्व के साथ नजर डालता था।" जब बम्बई में लेक्चरर हो गया, तब अम्बेदकर ने बालू के अभिनन्दन में समारोह आयोजित किया– सफलता की इस कहानी से वह इतना प्रभावित हो गया, इस आदमी ने अपने सपनों को साकार करने में सभी अवरोधों को ध्वस्त कर दिया था!

इस जनवरी में गणतन्त्र दिवस मनाते समय इन नायकों को हमें नहीं भूलना चाहिये। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारा समाज अभी भी अनेक रूपों में अन्याय से छलनी बना हुआ है। यदि एक व्यक्ति गेंद को थाम सकता है और राष्ट्र को बदल सकता है, तो कोई कारण नहीं है कि उसी के साथ क्रान्ति रुक जानी चाहिये।

BACK ISSUE BHANGRA!

LAST DATE 31ST MARCH 2009

Unwind with Chandamama's Rewind!

Pick your favourite year from the new millennium [2001-2007] and place an order to read all 12 *Chandamama** issues that year!

*Offer valid for Chandamama English, regional languages, and Junior Chandamama for a minimum period of one year on a first come first served basis. Cost per year will be calculated on cover price + Rs.300/- [shipping and handling charges].

**Payment to be made by DD or at par cheque drawn in favour of Chandamama India Ltd. payable at Chennai. Kindly send your request with name, full postal address, contact details and specification of the Language and Year.

Address: **Chandamama India Ltd.,** New 2/513 (Old 3/396), Sandeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041. Phone : +91-44-32402323
For further queries mail arul.balamurugan@chandamama.com

***If stock is not available, payment will be refunded.

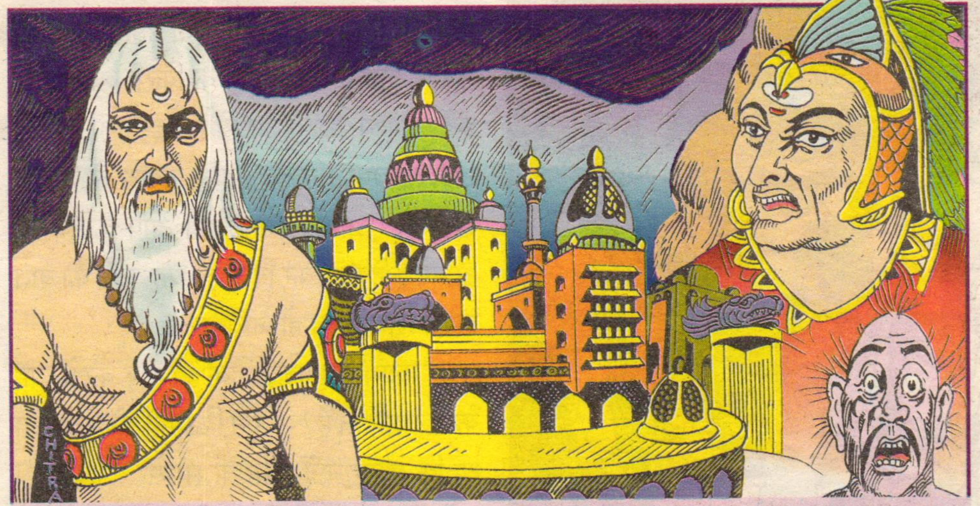

पाताल दुर्ग

6

(कुम्भीर, कालशम्बर दोनों एक एक गुफा में भाग गये। सोमक के छोड़े हुए बाण से उग्रसेन घायल हो गया। उग्रसेन ने जिनको राजद्रोही घोषित किया था उन धूमक और सोमक को कुन्तल देश के मन्त्री गंगाधर ने अभयदान दिया। वे दोनों पेड़ की टहनियों से नीचे कूदे। उसके बाद)

बाण और तलवार लिए धूमक और सोमक को देखते ही कदम्ब राजा उग्रसेन ने काँपते हुए कहा, ''महामन्त्री, आपका इनको अभयदान देना बिल्कुल ठीक नहीं है। ये अराजकतावादी हैं, जो एक देश के विरुद्ध बगावत कर सकते हैं, कैसे यह विश्वास किया जाये कि वे दूसरे देश में बगावत न करेंगे? ये स्वभाव से विद्रोही और अपराधी हैं। इनमें देशभक्ति और राजभक्ति लेशमात्र भी नहीं है। ये किसी के लिए खतरनाक हो सकते हैं। इन्हें क्षमा करना बुद्धिमानी नहीं होगी।''

इतने में धूमक और सोमक भागे-भागे मन्त्री गंगाधर के पास गये। उसके सामने उन दोनों ने साष्टांग किया।

गंगाधर ने उनको उठने के लिए कहा, ''अब तुम दोनों सचमुच योद्धा मालूम होते हो। मैंने यह कभी विश्वास न किया था कि तुम पितृ और भ्रातृ

हन्तक हो, तुम्हें योद्धाओं के अनुरूप पोशाक दिलवाऊँगा। तुम दोनों में से किसने महाराजा को घायल किया था?''

''प्रभू! मैंने इससे इस दुष्ट राजा के गले पर निशाना लगाने के लिए कहा था। पर इसको इस पर दया आ गई और इसने इसके हाथ पर बाण मारा।'' धूमक ने कहा।

सोमक आँखें लाल करके उग्रसेन की ओर मुड़कर कुछ कहने ही वाला था कि मन्त्री गंगाधर ने उसे रोकते हुए उग्रसेन से कहा, ''महाराज, ये आपसे बदला ले रहे हैं। आपने उन पर अत्याचार किया था। जो राजधर्म नहीं है। राजा का कर्त्तव्य है, प्रजा की देखभाल करना। प्रजा राजा की सन्तान होती है। प्रजा में यदि रोष हो तो उसका कारण जानना और उसका निवारण करना राजा का धर्म बनता है। आदर्श राजा वही है जो प्रजा में रोष उभरने न दे। आप के किसी व्यवहार से इन्हें अवश्य कष्ट हुआ होगा। इसलिए उन्होंने आपको घायल करके अपना बदला ले लिया। खैर, जो हुआ सो हुआ, अब आप कहिये कि आपने इन्हें माफ कर दिया है। यह बदले की बात इसके साथ खत्म हो जायेगी।''

''महामन्त्री! राजद्रोहियों को माफ कर दें, यह कैसी राजनीति है? उन्होंने किसानों को भड़काया था कि वे कर न दें। यह तो सरासर राजद्रोह है। इन्हें तो मृत्युदण्ड मिलना चाहिये। इन्होंने बगावत की थी।'' उग्रसेन ने गुस्से में कहा।

''प्रभु! इस उग्रसेन और इसके मन्त्री के लिए बस, कर इकट्ठा करना ही शासन है। इसके अलावा ये कुछ नहीं जानते। इसीलिए भगवान ने स्वयं इनके अत्याचारों की सजा दे दी। कुम्भीर नामक राक्षस इनकी बेटी को महल से उठा कर ले गया। वे भाग गये, नहीं तो कुम्भीर और कालशम्बर से भी ये कर वसूलते।'' धूमक ने दाँत पीसते हुए कहा।

कुम्भीर और कालशम्बर का नाम सुनते ही मन्त्री गंगाधर ने चकित होकर पूछा, ''वे दोनों कौन हैं? महाराजा की लड़की को क्या वे ही उठा ले गये? बताओ। गंगाधर उन दोनों के बारे में पूरा विवरण जानना चाहता था।''

धूमक और सोमक ने रात को गुफाओं के सामने जो कुछ हुआ था वह मन्त्री को बताया।

गंगाधर ने अनुमान किया कि जिसने कुम्भीर

जैसे राक्षस का सींग तोड़ दिया था, वह कालशम्बर अवश्य कोई बड़ा मन्त्रवेत्ता होगा।

यही नहीं, जब मान्त्रिक ने कहा कि, "मैं यहाँ एक महावीर की चिकित्सा करके उसको ठीक कर रहा हूँ" तो इसमें अवश्य कोई रहस्य है। यह घायल महावीर मेरा पुत्र भी हो सकता है, – यह सोच गंगाधर ने धूमक और सोमक से वह गुफा दिखाने के लिए कहा, जहाँ वह मान्त्रिक दिखाई दिया था। इन बातों से उसे आशा की एक धूमिल किरण दिखाई दी।

धूमक और सोमक गुफाओं की ओर चले। मन्त्री गंगाधर कुछ सैनिकों के साथ उनके पीछे पीछे गया। उग्रसेन भी कराहता, तड़पता उनके पीछे चला।

धूमक और सोमक ने एक गुफा के सामने खड़े होकर कहा, "प्रभू! मान्त्रिक इस गुफा से बाहर आया और हाथ पर बाण लगते ही उसी के अन्दर भाग गया और इस दूसरी गुफा में कुम्भीर राजकुमारी को लेकर गया था।"

"इस राक्षस को घेरकर पकड़ लो महामन्त्री! आपने कहा था कि यहाँ आज्ञा देनेवाले आप हैं। इसलिए आप सैनिकों को आज्ञा दीजिये न?" उग्रसेन ने कहा। वह अपनी पुत्री के लिए तड़प रहा था। उसे अपने शारीरिक कष्ट और अपमान की मानसिक पीड़ा की उतनी परवाह न थी, जितनी उसे बेटी की चिन्ता थी। वह सोचता कि वह कितना अभागा है कि राजा होकर अपनी बेटी की जान और मर्यादा की रक्षा न कर सका।

"महाराज! मैं नहीं सोचता कि यह राक्षस और यह मान्त्रिक इतने मूर्ख हैं कि अभी तक इस गुफा में छुपे रहें। फिर भी अच्छा है कि हम सावधान रहें। और दोनों गुफाओं की पूरी तरह छानबीन कर लें। यदि इन गुफाओं में बाहर निकलने का कोई मार्ग हो और ये दोनों बाहर निकल कर भाग गये हों तब भी हमें उनका पीछा करना चाहिये। हो सकता है, आप की बेटी और मेरा बेटा, दोनों मिल जायें।"

मन्त्री गंगाधर ने सैनिकों को सावधान किया। कुछ सैनिक भाले उठाकर धीमे-धीमे पहले उस गुफा में गये, जिसमें राक्षस गया था।

गुफा में अन्धेरा था। मशालें जलाकर भाले लेकर ज्योंही कुछ लोग अन्दर गये, त्योंही एक काली आकृति ऊपर से कूदी। तुरंत सैनिकों में

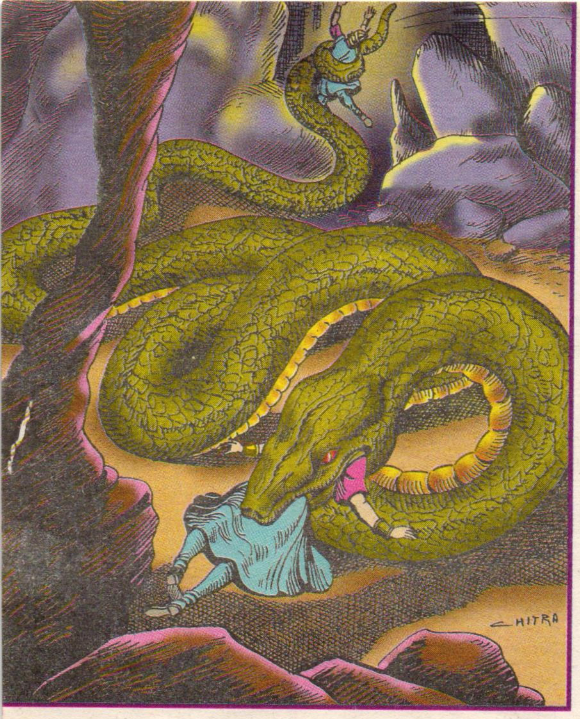

हो हल्ला मचा। सैनिकों में भागदौड़ मच गई। ''राक्षस, राक्षस'' चिल्लाते चिल्लाते वे बाहर भागे।

मन्त्री गंगाधर ने उनको रोककर पूछा, ''क्या राक्षस को तुमने देखा था? उसका चिल्लाना सुना था?''

''प्रभू! गुफा में बड़ा जबर्दस्त अन्धेरा है। न मालूम कैसी-कैसी आवाजें सुनाई पड़ रही हैं। फिर भी हम आगे बढ़े। वह बिना आवाज़ किये यकायक आगे के मशालचियों पर कूदा और उनको उसने पकड़ लिया।'' सैनिकों में से एक ने डरते हुए कहा।

मन्त्री गंगाधर को इन बातों पर विश्वास न हुआ। कुछ भी हो, गुफा में दो सैनिक आफत में थे। वह अपने सैनिकों के सरदार को बुलाने ही वाला था कि धूमक और सोमक गुफा के पास की मशालों को उठाकर, ''अरे कुम्भीर राक्षस, बस हम आ रहे हैं,'' चिल्लाते हुए गुफा में भागे।

उनका साहस देखकर मन्त्री गंगाधर को अचरज हुआ। उसने मन ही मन उनके साहस और बीरता की प्रशंसा की। उनके मन में एक बार यह विचार उठा कि काश! ये हमारी सेना में होते! राजा उग्रसेन ने हाथ उठाकर कहा, ''यदि तुम मेरी लड़की को सही सलामत ले आये, तो मैं तुम्हारे राजद्रोह को माफ कर दूँगा।''

मन्त्री गंगाधर गुफा में गया और कुछ सैनिक भी मशालें लेकर अन्दर गये। धूमक और सोमक के कुछ दूर जाने के बाद ''अरे बचाओ... बचाओ'' सैनिकों का चिल्लाना सुनाई पड़ा। धूमक और सोमक कुछ घबराये और वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

उन्हें डर लगा कि राक्षस दोनों सैनिकों को चीर फाड़कर खा रहा है। इतने में सोमक ज़ोर से चिल्लाया, ''धूमू... हमें क्या डर है? अपनी ग्रामदेवी कालेरम्भा को याद करो।'' ''जय कालेरम्भा'' धूमक ने भी उसके साथ जय जयकार किया।

वे आगे बढ़े, तो उन्होंने जो दृश्य देखा उससे उनके भय और आश्चर्य की सीमा न रही।

एक बड़ा अजगर एक सैनिक का सिर निगल रहा था और दूसरे को अपनी पूँछ से गुफा की दीवार पर पटक पटककर मार रहा था। दोनों सैनिक हाय हाय कर रहे थे।

सोमक ने जब अजगर के सिर पर दो तीन बार तलवार मारी, तो वह आधा कट गया और

उसके मुख का सैनिक नीचे गिर गया। इस बीच धूमक ने अजगर के पेट पर तलवार मारी और उसके दो टुकड़े कर दिये और दूसरा सैनिक उसकी पकड़ से छूटकर पागल की तरह चिल्लाता गुफा में कूदने फाँदने लगा।

मन्त्री गंगाधर कुछ सैनिकों के साथ जब वहाँ पहुँचा, तो खून के तालाब में अजगर छटपटा रहा था और धूमक और सोमक की तलवारों से भी खून टपक रहा था। उसने धूमक और सोमक से पूछा, "राक्षस कहाँ है?"

"यहाँ कोई राक्षस नहीं है, हुजूर! अन्धेरे में यह अजगर ही सैनिकों पर कूदा था और औरों ने उसे राक्षस समझ लिया।" धूमक ने कहा।

"राक्षस मायावी हैं। वे जो रूप चाहते हैं, क्षण में धारण कर लेते हैं। वह कुम्भीर ही शायद इस अजगर के रूप में होगा। मेरी लड़की कहाँ है?" राजा उग्रसेन चिल्लाया।

मन्त्री गंगाधर ने उग्रसेन का कन्धा सहलाते हुए कहा, "महाराज, आप इस अन्धेरी गुफा में क्यों आये? बाहर ठंडी हवा में आराम कीजिये। आपकी लड़की उठा ले जानेवाला राक्षस इस गुफा में कहीं हुआ, तो उसको पकड़कर लाने की जिम्मेदारी मुझ पर है।"

धूमक और सोमक मशालें लेकर गुफा में कुछ दूर गये। उन्होंने देखा कि आगे जाकर गुफा दो तीन सुरंगों में फट गई है। उन सुरंगों से जंगल में जिधर चाहो, उधर जाया जा सकता था। उन्होंने अनुमान किया, इन सुरंगों में किसी एक से वह

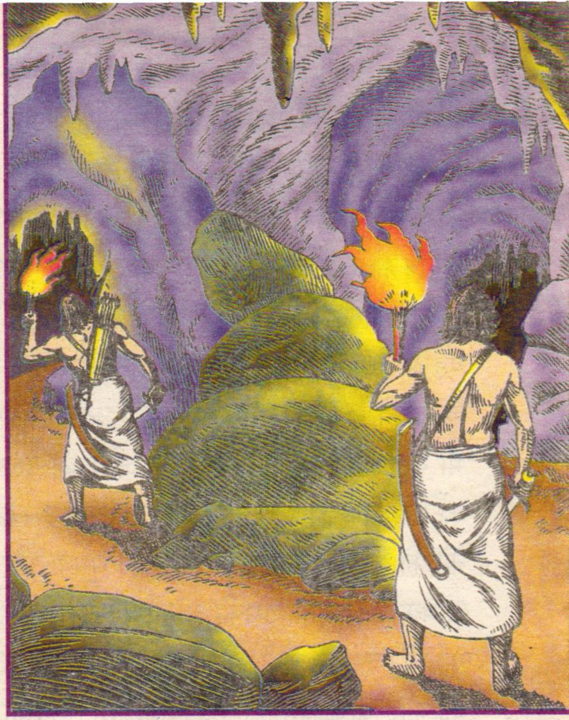

भाग गया है। यह बात उन्होंने गंगाधर के पास आकर बताई।

गंगाधर ने उसकी बातों को सही अनुमान समझकर मान लिया और हताश होकर कहा, "अच्छा, अब कुछ भी नहीं किया जा सकता। देखें वह गुफा कैसी है, जिसमें मान्त्रिक दिखाई दिया था।" सब गुफा से बाहर आये। उस सैनिक को जिसे अजगर ने उठा लिया और जो सैनिक पगला गया था उसकी कमर में रस्सी बाँधकर, उसे भी वे बाहर ले आये।

जिस गुफा में मान्त्रिक कालशम्बर दिखाई दिया था वहाँ उतना अन्धेरा न था। न मालूम कहाँ से गुफा में रोशनी आ रही थी। धूमक और सोमक गुफा में गये। उनके पीछे पीछे मन्त्री गंगाधर गया। उनको अन्दर हल्की-हल्की रोशनी

में मनुष्य का शव दिखाई दिया जिसे क्रूर पशुओं ने कहीं कहीं खाकर छोड़ दिया था।

उसे देखते ही गंगाधर आगे बढ़ा और ध्यान से शव को देखा और उसे पहचान कर कहा, ''यह जयन्त का शव है, आसपास कहीं एक और...'' वह चारों ओर देखने लगा। उसने अनुमान लगाया कि जीवित, घायल या मृतावस्था में उसका बेटा भी यहीं कहीं होगा। जयन्त की लाश को देख कर उसका हृदय फटने लगा। उसे लगा कि उसके बेटे की भी यही दुर्दशा हो गई होगी। धूमक और सोमक ने देखा कि उसकी आँखों में तब तरी आ गई थी। जब वे दोनों और आगे बढ़े, तो धूमक को कोई चीज़ चमकती हुई दिखाई दी। उन्होंने उसे उठाकर देखा, वह कालशम्बर का मन्त्रदण्ड था। उस समय धूमक के आनन्द की सीमा न रही। मन्त्रदण्ड को हिलाते हिलाते वह मन्त्री गंगाधर के पास आया। उसे मन्त्रदण्ड दिखाते हुए उसने कहा, ''प्रभू! मान्त्रिक भी गुफा से भाग गया है। यह कालशम्बर का मन्त्रदण्ड है। इसी के बल पर वह किसी से नहीं डरता। इससे कुछ मदद मिले तो ले लीजिये।''

''तुम्हें यह जो मन्त्रदण्ड मिला है, हो सकता है कि इसमें अद्भुत शक्ति हो। यह बड़े काम की चीज है। लेकिन हमारे लिए व्यर्थ है, क्योंकि हम लोग इसका प्रयोग करना नहीं जानते। इस मन्त्रदण्ड के बिना मान्त्रिक भी हमलोगों की ही तरह असमर्थ होगा। इसलिए अपने मन्त्रदण्ड को लेने के लिए वह इस गुफा में पुनः अवश्य आयेगा। हमें गुफा से बाहर उसका इन्तजार करना चाहिये।'' कहता मन्त्री गंगाधर गुफा से बाहर आया। दुखी होकर बैठे राजा उग्रसेन के पास आकर कहा, ''महाराज! हम दोनों ही अभागे हैं। आपकी इकलौती लड़की चली गई है और मेरा इकलौता लड़का। जब तक यह नहीं मालूम हो जाता कि वह राक्षस और मान्त्रिक कहाँ है?''- वह अभी कह ही रहा था कि कदम्ब देश का मन्त्री खून से लथपथ हो, चीथड़े पहन, घोड़े पर सवार हो, वहाँ आया।

''महाराज! नाश, सर्व नाश'' उसने घोड़े पर से झट उतरने की कोशिश की, पर उसका पैर ज़ीन में फँस गया और वह औंधे मुँह नीचे गिर पड़ा। ***(और भी है)***

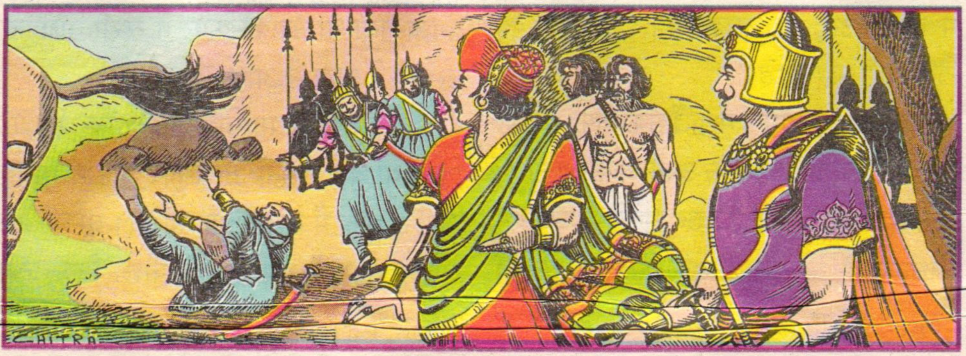

शशिकला का निर्णय

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं कि तुम दृढ़ चित्त के हो। परंतु मैं यह नहीं जानता कि कौन-सा निर्णय लेकर इतना परिश्रम कर रहे हो। क्योंकि यह कहना मुश्किल है कि कौन, कब, क्या निर्णय लेता है। विशेषतया भावुक मानवों के निर्णय असंबद्ध होते हैं। शशिकला ऐसी ही एक नारी है, जिसने भावुक होकर असंबद्ध निर्णय लिया और ऐसा करके उसने बहुत बड़ी ग़लती की। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' बेताल उसकी कहानी यों सुनाने लगाः

वेताल कथा

जगन्नाथपुर माणिक्यपुर राज्य का एक गाँव था। जगन उसी गाँव का एक लड़का था। पढ़ने-लिखने की उसकी तीव्र इच्छा थी। नये विषयों को जानने की उसमें बड़ी जिज्ञासा थी। पर उसका पिता रंगदास अपने बेटे को पढ़ा नहीं सका, क्योंकि वह पर्वतों के पत्थर को भवन निर्माण के लिए तोड़नेवाला मामूली मज़दूर था। जगन की माँ अस्वस्थता के कारण हमेशा खाट पर ही लेटी रहती थी। जगन माँ की सेवा करता था और उस जगह पर जाता था, जहाँ उसका पिता काम करता था। साथ ही वहाँ जाने के बाद उसे पिता की सहायता भी करनी पड़ती थी।

जगन ने एक दिन निर्णय कर लिया कि किसी भी हालत में पढ़कर ही रहूँगा। किसी से कहे बिना वह घर छोड़कर चला गया। एक हफ़्ते भर यहाँ वहाँ भटकता रहा। आठवें दिन जब बांध पर के पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा तब 'बचाओ, बचाओ' की पुकार सुनायी पड़ी। जगन ने मुड़कर देखा। एक लड़का नदी में बहा जा रहा था। जगन पानी में कूद पड़ा और उसे नदी के किनारे ले आया। जब वह लड़का होश में आया तब उसे मालूम हुआ कि उसका नाम नवनीत है। उसके माता-पिता उसे पढ़ने पर ज़ोर दे रहे थे और गुरु ठीक तरह से न पढ़ने के कारण उसे दंड दे रहे थे। इसलिए वह घर से भाग आया।

एक-दूसरे के परिचय के बाद उनमें अच्छी मैत्री स्थापित हो गयी। वे दोनों जो भी काम मिले, करने लगे। क्रमशः उनकी मैत्री गाढ़ी होती गयी।

इतनी तकलीफों के बावजूद जगन ने कई गुरुओं का आश्रय पाकर शिक्षा पायी। उसका दोस्त तरह-तरह के काम करता था और उसे आर्थिक सहायता पहुँचाता था, जिसके कारण उसने अनेक विद्याएँ सीखीं। उसने एक दिन नवनीत से कहा, ''बचपन से ही परकाया प्रवेश की विद्या सीखने की मेरी तीव्र इच्छा है। लेकिन यह संभव नहीं हो पाया। सुना है कि यह विद्या केवल आदिमूल सिद्ध ही जानते हैं। वे अब विंध्यावन में तपस्या कर रहे हैं। उनसे मिलना है, क्या तुम भी मेरे साथ उनके पास चलोगे?''

नवनीत ने मान लिया। दोनों मिलकर तीन दिनों की यात्रा के बाद वहाँ पहुँचे। वे आदिमूल सिद्ध के कुटीर के पास पहुँचे। ध्यान मग्न सिद्ध को दोनों ने साष्टांग प्रणाम किया। थोड़ी देर बाद

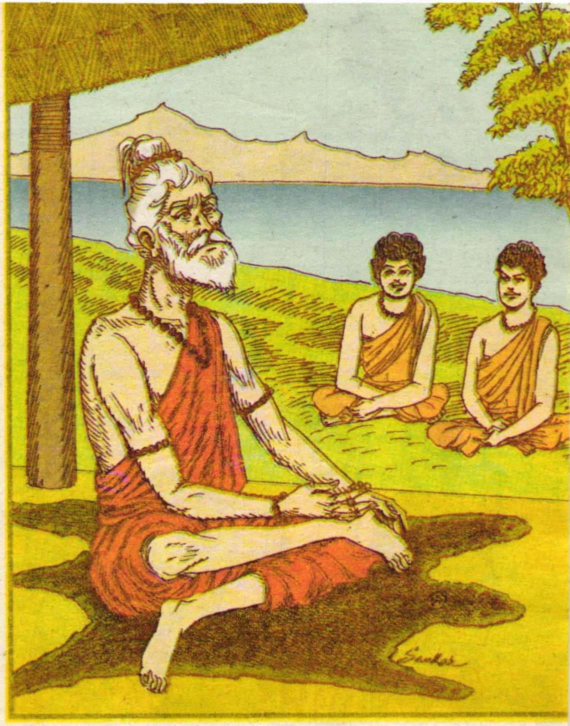

आँखें खोलकर उन्होंने दोनों को आशीर्वाद दिया। उनका आशीर्वाद पाते ही जगन ने अपने मन की इच्छा प्रकट की।

''यह असंभव है। तुम लौटकर चले जाओ'', सिद्ध ने कटु स्वर में कहा।

सिद्ध का यह मानना था कि ऐसी अद्‌भुत शक्तियाँ जब साधारण जनों के हाथों में आयेंगी तब उनका दुरुपयोग होगा। इसलिए उन्होंने पहले ही से निर्णय कर लिया था कि इस विद्या को मैं किसी को भी नहीं सिखाऊँगा, चाहे भले ही इस विद्या का अंत मेरे साथ ही क्यों न हो।

जगन ने विनयपूर्वक कहा, ''महात्मा, आपका शायद यह अभिप्राय होगा कि यह अद्‌भुत विद्या किसी अपात्र के हाथ में न जाए। पर जब हम इतनी दूर चले आये हैं, कुछ समय तक आपकी सेवा करते हुए यहीं रहेंगे। कम से कम हमें यह भाग्य प्रसादिये।''

सिद्ध मौन रहे। इससे दोनों मित्र समझ गये कि इसमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं। उस क्षण से लेकर दोनों मित्र बड़े ही भक्ति-भाव से उनकी सेवा करते रहे, कुटीर की सफाई करते रहे, कंद मूल, फलों को जंगल से लाते रहे, रसोई का काम भी करते रहे। यों तीन महीने गुज़र गये।

एक दिन सूर्योदय के समय सिद्ध ने दोनों मित्रों को अपने पास बुलवाया और कहा, ''मेरे जीवन की यात्रा सदा के लिए समाप्त हो जाने की घड़ी आसन्न हो गयी है। परकाया विद्या को मैं अकेले ही जानता हूँ दूसरा कोई जानता ही नहीं। मुझे यह न्यायसंगत नहीं लगता कि उस विद्या का अंत मेरे ही साथ हो जाए। जगन को यह विद्या सिखाने का मैंने निर्णय कर लिया। इसका दुरुपयोग न हो, इसकी जिम्मेदारी मैं तुम्हें सौंपता हूँ। आगे भगवान की इच्छा'', कहते हुए सिद्ध ने नवनीत की ओर देखा।

वहाँ से उसके चले जाने के बाद सिद्ध ने जगन के कान में मंत्र का उपदेश दिया और आखिरी सांस ली।

दोनों मित्र लौट पड़े। मार्ग मध्य में हस्तगिरि नामक नगर पहुँचे। उन्होंने देखा कि नगर की प्रजा बड़ी ही दुखी है। उन्होंने उनसे इसका कारण पूछा।

सुधाम नगर पालक राजभूषण का इकलौता पुत्र था। जिस घोड़े पर वह सवार होकर तेज़ी से

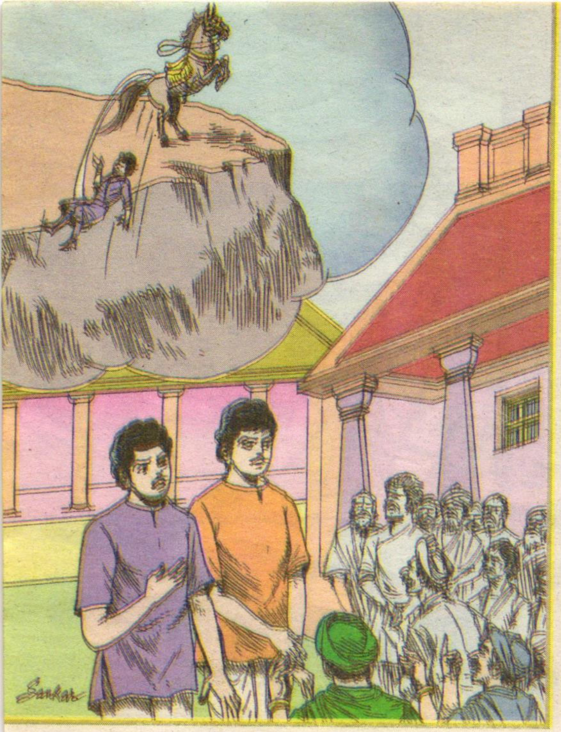

जा रहा था, वह घोड़ा किसी कारण से घबरा गया। सुधाम गिर गया और वहीं मर भी गया। पुत्रशोक के कारण माता-पिता बेहोश हो गये।

विषय जानते ही नवनीत ने जगन से कहा, "तुम परकाया प्रवेश की विद्या का उपयोग करो और सुधाम के शरीर में प्रवेश करो।"

"इससे इस समस्या का परिष्कार कैसे होगा? कभी न कभी इस शरीर को छोड़ना ही पड़ेगा न?" जगन ने संदेह व्यक्त किया।

"दुर्घटना जब अकस्मात् होती है, तभी दुख सह नहीं सकते। जब उसपर पुनः विचार होगा तब दुख उतना भारी नहीं होता। इसलिए सुधाम के अच्छे माता-पिता के प्राणों की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है", नवनीत ने कहा। जगन ने बिना कुछ कहे उस नित्य वसंत जड़ी बूटी को चबाकर निगल लिया, जिससे उसका शरीर बिगड़ न जाए। इसके बाद काल भैरव के पिछवाड़े के गढ्ढे में सो गया और परकाया प्रवेश मंत्रों का उच्चारण किया और अपने शरीर को त्यज के सुधाम के शरीर में प्रवेश किया। नवनीत ने जगन के शरीर को झाड़ियाँ में छिपा दिया।

सुधाम के शरीर में हिलाव आया तो सब लोग बहुत खुश हुए। सुधाम के माता-पिता को जब यह मालूम हुआ कि उनका बेटा जीवित है तो बहुत ही खुश हुए।

पर, सुधाम के शरीर में प्रवेश करने के बाद जगन के जीवन में कायापलट हुआ। इसके पहले जिसे पेट भर खाने को मिलता नहीं था अब वह अनेक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ खूब खाने लगा। साथ ही अब वह कीमती कपड़े पहनने लगा, मुलायम बिस्तरों पर सोने लगा। आदेश देने पर तुरंत नौकर तैयार बैठे रहते थे। इन सबसे बड़ी बात थी, पहले ही से उस नगर के प्रमुख व्यापारी की बेटी शशिकला से शादी निर्णित हो चुकी थी।

एक दिन शाम को वह पहले ही से निर्धारित स्थल पर नवनीत से मिला। तब नवनीत ने कहा, "अब तुम सुधाम के शरीर से बाहर निकल आओ।"

"मैंने यह विद्या सीखी, अनेक सुखों का उपभोग करने, परकाया प्रवेश द्वारा अनूठे सुखों को अनुभव करने के बाद अब कैसे छोड़कर आ सकता हूँ?" कहते हुए मित्र की सलाह को जगन ने ठुकरा दिया।

क्रमशः जगन में स्वार्थ बढ़ता गया, उसमें

अहंभाव आ गया और वह सबसे बुरा व्यवहार करने लगा। सुधाम के पिता को उसकी इस व्यवहार शैली पर बहुत दुख हुआ, पर अपने बेटे से कुछ कह नहीं पाये।

शशिकला से विवाह करने में अब तीन दिन ही बच गये। एक दिन जब सुधाम बग्घी में बैठकर नगर की गलियों में तेज़ी से जा रहा था, तब राजा का एक रिश्तेदार उसके नीचे आ गया और मर गया। उस समय वह बग्घी खुद चला रहा था।

सैनिक उसे राजा के पास ले गये। सुनवाई होने के बाद राजा ने उसे फांसी पर चढ़ाने की आज्ञा दी और उसके पिता को नगरपालक के पद से हटा दिया।

सुधाम बनकर ज़िन्दा जगन पहले घबरा गया पर उसने सोचा कि सुधाम के शरीर को त्यजने के लिए यही मौक़ा है। जैसे ही वह फांसी पर लटकाया जानेवाला था, उसने मंत्र का पठन किया और चुपचाप उस शरीर से बाहर आ गया।

शशिकला को यह सुनकर बहुत दुख हुआ, क्योंकि इसके तीसरे ही दिन उसका विवाह उससे होनेवाला था। वह भी प्राण त्याग करने पर सन्नद्ध हो गयी।

यह बात जानकर नवनीत शशिकला से मिला और बोला, ''तुम्हारा होनेवाला पति मरा नहीं है। असल में वह सुधाम है ही नहीं।'' फिर उसने पूरा वृत्तांत सविस्तार बताया।

''अब मेरे पति कहाँ है?'' शशिकला ने पूछा।

''कुछ समय पहले कल ही मरे पड़ोसी गाँव के व्यापारी के पुत्र शिवदत्त के रूप में है।'' नवनीत ने कहा।

''सिद्ध को पहले से ही संदेह था कि इस अद्‌भुत शक्ति का दुरुपयोग होगा और वह संदेह सच निकला। तो फिर हमारे सामने क्या उपाय है?'' शशिकला ने पूछा।

''है। जगन जब इसका दुरुपयोग करेगा तब उसे ऐसा करने से रोकने के लिए सिद्ध ने मुझे भी एक मंत्र का उपदेश दिया। तद्वारा अब शिवदत्त के शरीर में जो जगन है, उसके प्राण को तब बाहर निकाल सकता हूँ और उसके शरीर में प्रवेश करा सकता हूँ, जिसे तुम चाहती हो। इससे मंत्र की महिमा समाप्त हो जायेगी। तुम यह निर्णय करके बताना कि सुधाम, जगन इन दोनों में किसे पुनः जीवन दूँ?'' नवनीत ने पूछा।

''जगन के प्राण को उसके शरीर में ही रहने दीजिये। उसे पति के रूप में स्वीकार करने में मुझे कोई एतराज नहीं है'' शशिकला ने कहा। नवनीत के मंत्र प्रयोग से जगन के शरीर में हिलाव आया। थोड़ी देर बाद वह उठ बैठा और चारों ओर देखते हुए जगन ने कहा, ''दोस्त, तुमने बहुत अच्छा काम किया।'' फिर शशिकला के हाथ को पकड़ते हुए कहा, ''मुझे माफ़ करना।''

वेताल ने यह कहानी सुनायी और राजा विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, शशिकला ने धनवान सुधाम को छोड़कर जगन को स्वीकार किया। क्या यह उसकी बुद्धिहीनता नहीं? उसका विवाह तय हो चुका था, सुधाम से, पर उसने जगन से शादी करने का निर्णय किया। क्या यह धर्मसम्मत है? यह क्या उसके चपल चित्त का, जल्दबाजी का द्योतक नहीं? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''धनिक और दरिद्र के बीच जो अंतर है, वह शाश्वत नहीं है, कभी भी कुछ भी हो सकता है। धनवान ग़रीब बन सकता है और ग़रीब धनवान। सुधाम एक प्रमुख व्यक्ति का पुत्र मात्र है। उसमें इसके अतिरिक्त कोई और गुण नहीं है। परन्तु जगन के पास अनेक विद्याएँ हैं। विद्यावान जगन के सामने संपदा जुटाने के और रास्ते भी हैं। यह उसके लिए कोई मुश्किल बात नहीं है। यहाँ यह समस्या नहीं है। शशिकला के विवाह का निर्णय हुआ, सुधाम के शरीर से, सुधाम से नहीं, क्योंकि शरीर से बढ़कर मुख्य है, प्राण। और वह प्राण जगन का है। जब उसका प्राण किसी और के शरीर में था तब परिस्थितियों के प्रभाव से उसका व्यवहार भटक गया। दूसरे के शरीर में होने से ऐसी भूल होने की गुंजाइश होती है। यह सब सोचने के बाद ही शशिकला ने यह निर्णय लिया। इसमें उसका अविवेक या जल्दबाजी है ही नहीं। यह धर्म विरुद्ध निर्णय नहीं है। बल्कि उसके इस निर्णय में उसकी बुद्धिमानी और दूरदर्शिता झलकती है।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः रविकांत की रचना)

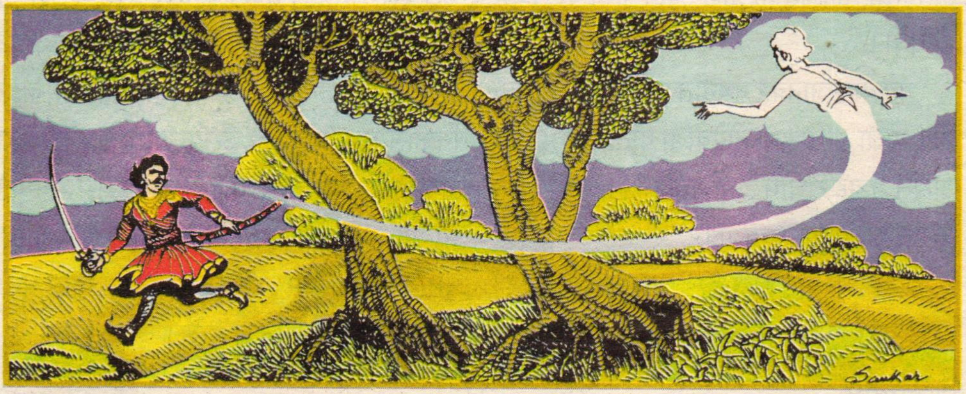

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

जीवन्त देवी

नेपाल में, प्रचलित रिवाज के अनुसार कन्याओं की पूजा की जाती है और दैवी शक्ति से सम्पन्न देवियों के समान उनका सम्मान किया जाता है। यह हिन्दू-बौद्ध परम्परा आज तक चली आ रही है।

एक किसान की बेटी, श्रीया बज्राचार्य को हाल में नयी देवी के रूप में चुना गया है। उसे भक्तपुर नगरपालिका (काठमाण्डू के निकट) की कुमारी कह कर सम्बोधित किया जायेगा। वर्तमान माओवादी नेतृत्व की सरकार ने अपना अनुमोदन दे दिया है। श्रीया ६ वर्ष की है और १२ वर्ष की आयु में उसका स्थान दूसरी कुमारी ले लेगी। कुमारी को ३२ कठोर मापदण्डों से गुजरना आवश्यक है- उसका वक्ष ''सिंह की छाती के समान'' होना चाहिये और जांघ ''हिरण की जांघ के समान।'' साथ ही, अन्य परीक्षाओं से भी गुजरना पड़ता है जिसमें हाल में बलि दी गई भैंस के साथ बिना चीखे-चिल्लाये कमरे में रहना शामिल है। श्रीया बज्राचार्य ने हाल ही में समाप्त हुए एक धार्मिक पर्व के अवसर पर पहली बार जनसमूह के समक्ष दर्शन दिया था।

अल्पतम आयु का टिकट-संकलक

हरेक व्यक्ति देश-विदेश में अपने पत्र भेजने के लिए डाक-टिकटों का प्रयोग करता है, किन्तु केवल थोड़े लोग उनके संकलन में रुचि रखते हैं! मुशम आदर्श उनमें से एक है। मुशम ने विश्व के अल्पतम आयु के टिकट-संकलक का पुरस्कार उस समय जीता जब वह मात्र ३ वर्ष ९ महीनों का था। उसने हाल में हैदराबाद में आयोजित नवें आन्ध्र प्रदेश डाक परिमण्डल टिकट प्रदर्शनी में अपने टिकट-संकलन का प्रदर्शन किया। उसने एक रजत पदक भी जीता और उसे दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय टिकट प्रदर्शनी में भाग लेने का अवसर दिया गया। यह अल्पवय बालक टोंगा, कुक द्वीप समूह, पिट कैर्न द्वीप समूह, फिजी, किरीबाटी, क्रिसमस द्वीप समूह, मॉरीशियस तथा आइसलैण्ड जैसे छोटे द्वीपों को पहचान सकता है जिन्हें मानचित्र पर पता लगाना कठिन होता है। वह चिड़िया घर में, बुरुण्डी टिकटों पर छपे जानवरों को पहचान जाता है – जंगली भैंसा, दरियाई घोड़ा तथा गैण्डा।

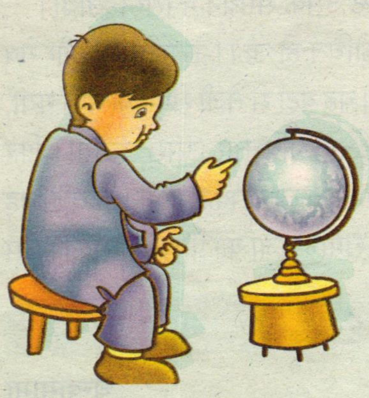

ध्रुव

जब हम कमज़ोर हों तब दुष्ट स्वभाववाले हमें सताते हैं और हमारा अपमान करते हैं। यह सहज है। ऐसी स्थिति में दुखी होना नहीं चाहिए। हमें अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना है। ऐसा करने से हम अपमानों का धैर्य से सामना कर सकते हैं और विजय पा सकते हैं। हममें जितनी अच्छाइयाँ हैं, उनके अनुपात में शक्ति-सामर्थ्य को विकसित करना है। इससे विजय के राजमार्ग पर सर उठाके आगे बढ़ सकते हैं। इसी जीवन सत्य को घोषित किया है, मणिदीप ध्रुव ने।

उत्तानपाद की प्रथम पत्नी सुनीति का पुत्र था ध्रुव। सुरुचि उनकी द्वितीय पत्नी थी। राजा सुरुचि को अधिकाधिक चाहते थे। उत्तम उसी का एकमात्र पुत्र था।

एक दिन उत्तानपाद सुरुचि के पुत्र उत्तम को जांघ पर बिठाकर प्यार कर रहे थे। तभी ध्रुव वहाँ आया। पिता की जांघ पर बैठने के लिए वह भी लालायित था। तभी वहाँ आयी सुरुचि ने उसके प्रयत्न को रोका और कहा, ''पिता की जांघ पर बैठने का अधिकार तुम्हें नहीं है। इसका अधिकार केवल मेरे पुत्र को ही है। अगर तुम्हें पिता की जांघ पर बैठने की इतनी इच्छा है तो तुम्हें मेरे गर्भ से जन्म लेना था।'' कहती हुई उसने ध्रुव को वहाँ से हटा दिया।

इस करनी पर उत्तानपाद को चाहिये था कि वह अपनी पत्नी को डांटे, पर उसने ऐसा नहीं किया, उल्टे उसके समर्थन में सिर हिलाया।

ध्रुव क्रोधित हो उठा। उसमें दुःख और रोष भर आया। वह वहाँ से तेज़ी से माँ के पास गया, और जो हुआ, सविस्तार उससे बताया। फिर वह रोने लगा। किन्तु उसकी माँ मौन ही रही। वह सुनीति के समान राजा का प्रेम न पा सकी। उस

पौराणिक युवा नायक - ८

स्थिति में भला वह क्या कर सकती थी! अपनी असहायता पर दुखी होते हुए उसने कहा, ''रोओ मत पुत्र। मेरी कोख से तुमने जन्म लिया, इसके कारण बहुतों के सामने तुम्हारा अपमान हुआ है। उस भगवान के अलावा तुम्हारी सहायता करनेवाला और कोई नहीं है।'' माँ की बातों को सुनकर ध्रुव में धैर्य आया और उसने कहा, ''माताश्री, मैं तपस्या करने जा रहा हूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिये।''

''तपस्या करके तुम सुरुचि की कोख से जन्म लेने का वरदान माँगने जा रहे हो?'' माँ ने पूछा।

''माताश्री, मैं आपका पुत्र हूँ। किसी और की कोख से जन्म लेने का वरदान क्यों माँगूँगा? अपने को छोटा करना आत्महत्या के समान है। मैं भगवान से यही माँगूँगा कि सब दिशाओं में यही प्रतिध्वनित हो कि ध्रुव की माँ कितनी भाग्यशाली है।'' यों कहकर ध्रुव जंगल की ओर निकल पड़ा।

थोड़ी दूर जाने के बाद नारद सामने से आये। पाँच साल के बालक ध्रुव से विषय जानकर वे चकित रह गये। उसके मनोबल की परीक्षा करने के बाद नारद ने ध्रुव से कहा, ''मधुवन जाओ। ओं नारायणाय नमः अष्टाक्षरी का भक्तिपूर्वक जप करते हुए तपस्या करना। तुम्हारे लक्ष्य की पूर्ति होगी।''

ध्रुव ने मार्ग मध्य में सप्त ऋषियों का दर्शन किया, उनसे आशीर्वाद पाया और मधुवन में तपस्या में लीन हो गया।

ध्रुव की इस घोर तपस्या से इंद्र भयभीत हो गया। उसे लगा कि इससे उसके सिंहासन पर

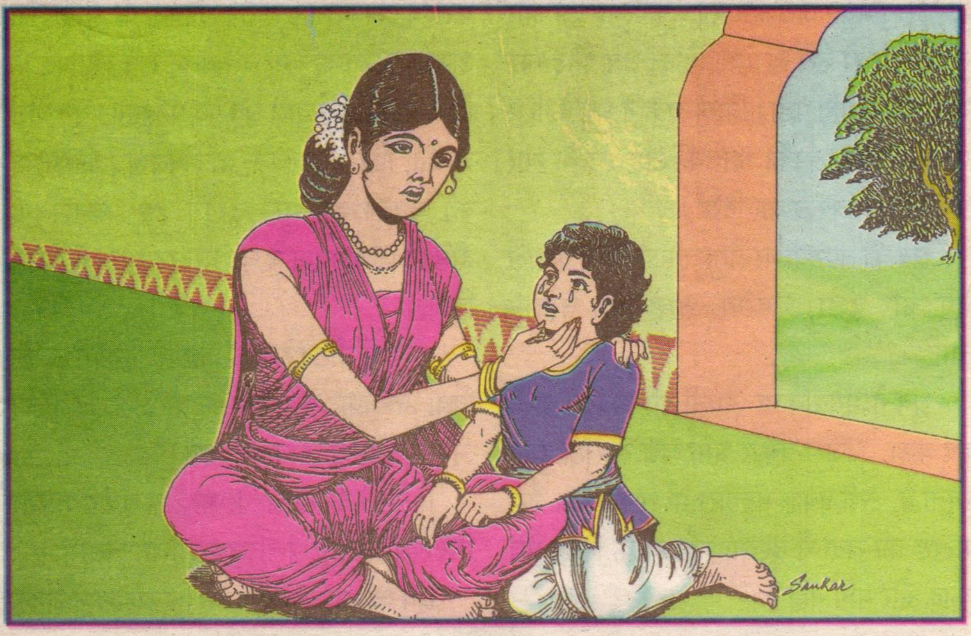

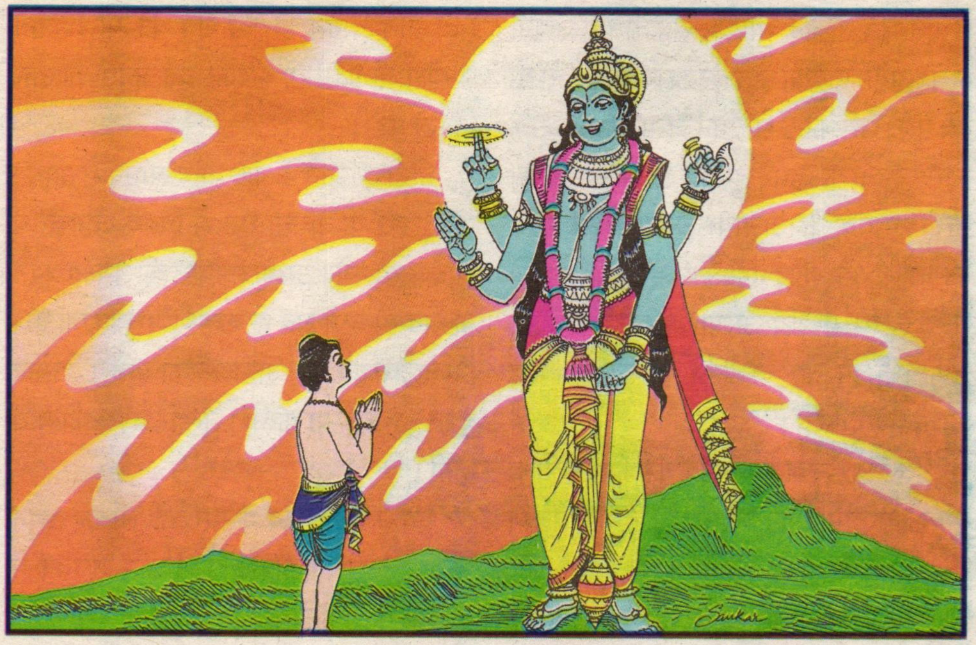

विपत्ति आयेगी। उसने ध्रुव की तपस्या को तोड़ने के अनेक प्रयत्न किये। वज्रायुध को झंकारते हुए उसने मेघ गर्जन और कौंध की सृष्टि की और तरह-तरह से उसे डराया। किन्तु ध्रुव पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। विष्णु चक्र ने ध्रुव के सिर पर घूमते हुए उसकी रक्षा की और इंद्र के सारे प्रयत्नों को विफल कर दिया।

ध्रुव की तपस्या पर संतुष्ट होकर विष्णु प्रत्यक्ष हुए और पूछा, ''माँगो, तुम्हें क्या वरदान चाहिये?''

ध्रुव ने भगवान पर अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए कहा, ''जिस प्रकार भ्रमर पद्म से सटा हुआ रहता है, उसी प्रकार मंदहास भरे तुम्हारे पद्म जैसे मुखड़े को सदा मैं देखता रहूँ। इसके सिवा मेरी कोई और माँग नहीं हैं।''

विष्णु ने संतुष्ट होकर कहा, ''पहले तुम अपने राज्य में लौटो। धर्मपूर्वक शासन चलाते हुए अपने कर्तव्य का पालन करो। जीवन के सुखों का अनुभव करने के बाद मेरे विराट रूप ब्रह्माण्ड के शिरो भाग में रहनेवाले ध्रुव पद पहुँचोगे। युग बीत जायेंगे, फिर भी अचल, अचंचल पद की शोभा को बढ़ाते हुए मुझे देखते हुए प्रकाशपूर्ण दीखोगे।'' भगवान ने यह वरदान ध्रुव को प्रदान किया।

राज्य में लौटने के बाद कुछ ही दिनों में उसके पिता उत्तानपाद ने शासन का भार उसे सौंप दिया और वे तपस्या करने चले गये।

पिताश्री की आज्ञा के अनुसार ध्रुव ने शासन भार संभाला और प्रजारंजक शासन चलाया।

ध्रुव का भाई जब एक बार शिकार करने जंगल

गया, तब दुष्ट स्वभाव के यक्ष उसपर टूट पड़े और उसे मार डाला।

सुरुचि पुत्र शोक के मारे वहाँ गयी और अरण्य में भभकती अग्नि में फंसकर मर गयी।

ध्रुव ने यक्षों का निर्मूलन करने के लिए अलका नगर को घेर लिया। यक्षों ने क्षुद्र मायाजाल का प्रयोग किया। पर, ध्रुव नारायणास्त्र से उस मायाजाल को मिटाने लगा तब उनका नेता कुबेर उसकी शरण में आया और उसे अनेक संपदाएँ देकर उसे संतुष्ट किया।

ध्रुव ने न्यायपूर्ण शासन चलाया और स्वयंभुव मनु वंश की कीर्ति बढ़ायी। वंश की वृद्धि करने हेतु उसने गुणवान पुत्रों को जन्म दिया। दीर्घकाल तक शासन करने के बाद अपने ज्येष्ठ पुत्र को सिंहासन पर बिठाया और बद्रीवन पहुँचा। वहाँ निरंतर विष्णु का ध्यान किया और सुवर्ण शरीर पाया।

विष्णु के सेवक पुष्पक विमान ले आये। ध्रुव ने उनसे कहा, ''अपनी माताश्री को अकेली छोड़कर मैं भला कैसे उतने उत्तम पद पाने आ सकता हूँ?''

तब सेवकों ने उसे एक दिव्य विमान में ध्रुव मंडल पर जाती हुई उसकी माताश्री सुनीति को दिखाया। संतुष्ट होकर ध्रुव सेवकों के लाये विमान में बैठ गया और ध्रुवपद पहुँचा। अब विश्व शिखराग्र पर ध्रुव दिशाओं की दिशा और अचल नक्षत्र बनकर प्रकाशित होने लगा।

लक्ष्य की प्राप्ति करनी हो तो उसके लिए आवश्यक है, प्रयत्न। समस्त भूगोल अंधकार पूरित है, पर वह एक छोटे-से दीप की कांति को रोक नहीं सकता, उसका अवरोध नहीं बन सकता। छोटे-से छोटा दीप प्रकाश देता है। कोंपल भर की आशा जीवन को आगे बढ़ाती है, परिपूर्णता प्रदान करती है, धीरोदात्त ध्रुव ने यही साबित किया।

दृढ़ संकल्प, दीक्षा, दक्षता हों तो छोटे-बड़े सबके सब किसी भी प्रकार के लक्ष्य को साधने में सफल हो सकते हैं। इसी अद्‌भुत सत्य को घोषित किया है, पौराणिक वीरकुमार ध्रुव ने, जो दिव्य प्रकाश से भरा नक्षत्र बनकर निरंतर प्रकाश फैला रहा है।

स्वागत और अलविदा

द गेट वे ऑफ इण्डिया को, जो बम्बई (अब मुम्बई) का सर्वाधिक प्रसिद्ध सीमाचिह्न है, भारत में ब्रिटिश की मौजूदगी से सम्बन्धित स्वागत और अलविदा दोनों के लिए याद किया जाता है। सन् १९११ में जब पाँचवें किंग जॉर्ज और रानी मेरी का जलपोत द्वारा भारत आगमन हुआ तब शाही उच्चाधिकारियों के भव्य स्वागत के लिए गेट वे का निर्माण किया गया। वही गेट वे ३७ वर्षों के पश्चात एक अलविदा का साक्षी बन गया। सन् १९४८ में २८ फरवरी को भारत में ब्रिटिश सेना का आखिरी दस्ता- सोमरसेट लाइट इनफैण्ट्री इंग्लैण्ड जानेवाले जलपोत पर सवार होने के लिए इसी गेट वे के मेहराब से गुजरा।

सूर्य भगवान का मन्दिर

तमिलनाडु में कुम्बकोणम् के निकट सूर्यनारकोइल दक्षिण भारत में एक मात्र मन्दिर है जहाँ सूर्य प्रधान इष्टदेव हैं। विश्वास किया जाता है कि इसका निर्माण कुलोतुंगा चोला (१०७५-११२०) द्वारा किया गया था। उस अवधि के शिला लेखों के अनुसार मन्दिर का नाम कुलोतुंगा चोला मार्तण्ड आलयम बताया गया है (मार्तण्ड सूर्य का दूसरा नाम है)। मुख्य पूजास्थल में सूर्यनारायण सात अश्वों के रथ पर आसीन दिखाये गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि चोला राजा का कन्नौज के गढ़वाल वंश (१०९०-११०४) से मित्रवत सम्बन्ध था। वे सूर्य भगवान के उपासक थे और चोला राजा को उनसे सूर्य भगवान के लिए मन्दिर निर्माण की प्रेरणा मिली। मन्दिर में करीब १६ फुट ऊँची तीन तलों की मीनार है।

Amazing Big Chandamama Dhamaka

Rs.25/- only

Chandamama Gives You

More!

This January 2009, Chandamama issue + CD contains:

72 pages of VIBGYOR- all yours!
12 archival issues of Chandamama English
Story of Krishna Part - 3 with fabulous illustrations
Audio Stories

All for Rs ~~500~~/- Rs. 25/- only!

Watch out for **More!** in the Febuary Issue.

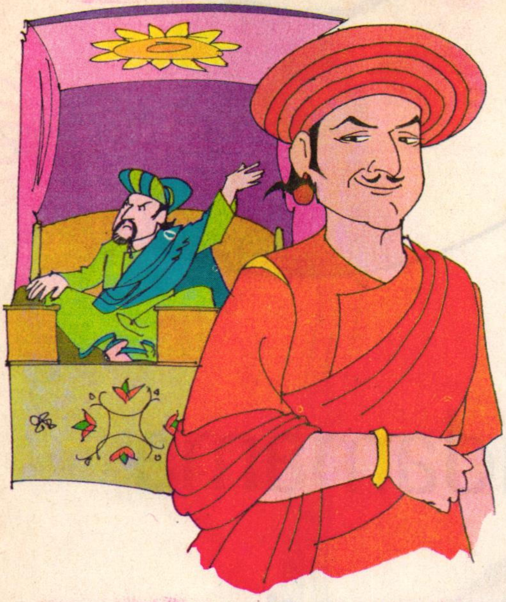

राजमुद्रा की शक्ति

बादशाह अकबर के दरबारियों में बीरबल को विशेष सम्मान प्राप्त था। उसने इसे अपनी हाजिर जवाबी और बुद्धिमानी से अर्जित किया था। वह हँसानेवाले मज़ाकों से बादशाह का मनोरंजन किया करता था। उस दिन भी उसने ऐसा ही किया। बीरबल ने चुटकुलों और कथा-कहानियें से बादशाह का मनोरंजन किया।

''बीरबल, तुम्हारी ताकत तुम्हारी हाजिरजवाबी और बुद्धिमानी में है,'' बादशाह ने बीरबल के एक चुटकुले पर ठठा कर हँसते हुए कहा।

''हमलोगों के बीच यही तो फर्क है, शहनशाह, आप बादशाह की औलाद हैं। अपने अब्बाजान की मौत के बाद आप बादशाह बन गये। आपने अपनी कोशिश से ताकत नहीं पाई। मेरी ताकत मेरे अन्दर ही है। आप की ताकत बाहर से आती है,'' बीरबल ने बिना झिझक कह दिया।

''बाहर से?'' अकबर ने कड़क कर कहा।

''मेरे दिमाग को कोई नहीं ले सकता। लेकिन यही बात राजमुकुट, राजमुद्रा और राजचिह्नों के बारे में नहीं कही जा सकती जिनके कारण दुनिया आप को बादशाह समझती है।''

''साबित करो कि तुम ठीक कह कहे हो, अन्यथा तुम्हें मौत की सजा दी जायेगी।'' बादशाह ने लम्बी सांस लेते हुए कहा।

बीरबल ने झुक कर अदब के साथ सलाम किया और एक नटखट मुस्कुराहट के साथ घोड़े पर सवार हो वह चला गया। उसे आत्म विश्वास था कि उसका आधार सही है।

उस रात बीरबल बहुत देर तक बिस्तर पर लेटा विविध विकल्पों पर विचार करता रहा। ''इससे काम चल जायेगा,'' वह अपने आप से बोला।

दूसरे दिन, बीरबल आम दिनों की तरह दरबार में आया। बादशाह बीरबल से बातें करते समय या उसकी राय सुनते समय काफी चैन महसूस करते हुए लग रहे थे। फिर भी बीरबल को वे बेवकूफ नहीं बना सके। वह जानता था कि बादशाह शान्त बने रहने का नाटक कर रहे हैं। बीरबल भी इस कला में होशियार था। उसने मजाक किया, हँसी-दिल्लगी की, कितनों पर उपहास का निशाना लगाया और दरबार में हरेक को हँसाया। बादशाह भी हँसे, परन्तु उनकी प्रतिक्रिया में गरमाहट नहीं थी। दोनों ऊपर से एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण थे, फिर भी! हरेक दूसरे पर गिद्ध दृष्टि डाले हुए था।

एक पखवारा बीत गया। बीरबल अकबर की

नित्यचर्या जानता था। सप्ताह में एक बार बादशाह रात में वेष बदल कर राजधानी में यह देखने के लिए घूमते थे कि सुरक्षा प्रबन्ध ठीक-ठाक है कि नहीं, और चोर-उचक्के तथा दोहरे जासूस तो नगर में सक्रिय नहीं हैं।

बादशाह का भेस बदलने में इनका एक विश्वासी नौकर अशरफ माहिर था जो विग और नकली मूछें लगा कर तथा रंग और कूची के इस्तेमाल से बादशाह को पूर्ण रूप से एक नया चेहरा दे दिया करता था। लेकिन उसकी इस उस्तादी का राज यह था कि बीरबल उसे ठीक समय पर सुझाव दिया करता था।

जब भी उसे बादशाह का नया चेहरा बनाना पड़ता, बीरबल से सलाह ले लिया करता। इस प्रकार बीरबल को हमेशा यह मालूम रहता था कि बादशाह अगली बार रात में किस तरह के भेस बना कर बाहर निकलेंगे। अशरफ भी उसे बादशाह के रात्रि-कार्यक्रम की गुप्त सूचना दे दिया करता था।

एक बार शनिवार की सुबह अशरफ बीरबल के घर पहुँचा। ''मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि तुम सवेरे-सवेरे क्यों आये हो,'' बीरबल ने मुस्कुराते हुए उसका स्वागत किया।

''हे महानुभाव, बादशाह आज रात को बाहर निकलने वाले हैं। मैंने आज उन्हें भिखारी की वेश-भूषा में सजाने का इरादा किया है,'' अशरफ बोला।

''केवल तुम्हीं एक बादशाह को चुटकी में भिखारी बना सकते हो!'' बीरबल ने मज़ाक किया।

अशरफ हँसता-हँसता लोटपोट हो गया।

''उन्हें फटे-पुराने गन्दे कपड़ों में सजाना जिनमें फटे स्थानों पर पेबन्द लगे हों। घिसी एड़ियों वाले पुराने चप्पल पहना देना। लम्बे पुराने चीथड़ों की पगड़ी से उनका चेहरा पूरे भिखारी जैसा लगेगा। कन्धे पर एक थैला भी लटका देना जिसमें टिन का एक मग्गा, एक गिलास और एक जोड़ा फालतू कपड़े डाल देना।'' बीरबल ने धीरे-धीरे अशरफ को समझाया। जिससे वह ठीक से समझ ले।

''कोई और सुझाव यदि आप दे सकते हों?'' पहले बताये गये नुस्खों को ठीक से समझ लेने के बाद अशरफ ने फिर पूछा।

''और हाँ, शहनशाह के चेहरे तथा हाथों पर इस तरह रँगना जिससे वे फटे-फटे दिखाई पड़ें। नहीं तो छद्म वेश विफल हो जायेगा।'' बीरबल ने इतना और कहा।

अशरफ ने सिर हिलाया और झुक कर सलाम करके बीरबल से विदा लेकर चला गया।

''मेरा समय आ गया है,'' बीरबल मुस्कुराया। जब संध्या तेजी से उतर रही थी, बीरबल ने अपनी पत्नी को पुकारा और अपने को भिखारी की तरह बनाने में मदद करने के लिए कहा।

अपने भारत को जानो
प्रश्नोत्तरी

इस महीने की प्रश्नोत्तरी भारतीय साहित्य पर आधारित है।

१. गीता रहस्य–भागवत गीता पर एक दार्शनिक प्रबन्ध, का लेखक कौन है? वह २० वीं शताब्दी के आरम्भ में राष्ट्रीय नेता थे।

२. मैथिली शरण गुप्त की सबसे अधिक प्रसिद्ध कृति कौन-सी है?

३. ज्ञानपीठ पुरस्कार का प्रथम विजेता कौन था?

४. पंचतंत्र का लेखक कौन है? वह कब लिखा गया?

५. प्रसिद्ध मराठी नाटक सखाराम बाइण्डर तथा घासी राम कोतवाल के लेखक कौन हैं?

६. प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी इ.ए.एस. प्रसन्ना की आत्म कथा का शीर्षक क्या है?

७. किस कृति पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया? किस वर्ष?

८. अकबरनामा किसने लिखा? वह अकबर का एक दरबारी था।

९. राष्ट्रीय गीत 'सारे जहाँ से अच्छा...'' का रचयिता कौन है?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

''भिखारी!'' वह हँसती हुई बोली।

''हाँ, मैं आज रात भर राजधानी में घूमना चाहता हूँ और यह पता लगाना चाहता हूँ कि भिखारी की जिन्दगी कितनी मुश्किल है। तब फिर मैं शहनशाह को कहूँगा कि वे भिखारियों की जिन्दगी को आसान बनाने के लिए कुछ करें,'' उसने पत्नी को समझाया।

''आप को हमेशा अनोखे विचार आते हैं,'' वह उस भूमिका के लिए पति को तैयार करने हेतु मान गई। उसने एक फटा-पुराना कपड़ा जिसका रंग उड़ा हुआ था, ढूँढ़ कर निकाला। उसने फटे हुए हिस्सों की सिलाई कर दी। बीरबल ने उस पोशाक को पहन लिया।

''मेरे चेहरे और हाथों को रँगो और दरकन बनाओ। मेरे ललाट पर झुर्रियाँ बना दो और गालों पर कुछ रेखाएँ।'' उसने निर्देश दिये।

उसने सर्वोत्तम प्रभाव डालने के लिए रंग और कूची का प्रयोग किया।

उसने फटे पुराने जूते पहने जिसे कई साल पहले पहनना छोड़ दिया था। उसने पत्नी को कहा कि वह प्रतीक्षा न करे, क्योंकि वह स्वयं नहीं जानता कि वह कब लौटेगा। फिर वह घर से बाहर निकल गया। वह महल की दिशा में बढ़ा। और महल के मुख्य फटक से करीब एक सौ गज पहले रुक गया। और एक घनी छाया वाले स्थान पर खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा।

उसे देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। महल का फाटक खुला और एक भिखारी बाहर आया। फाटक के संतरी ने भिखारी को सलाम किया।

जब बादशाह उसके सामने से गुजर रहा था,

बीरबल ने उसे पुकारा, ''आह, मेरे दोस्त, क्या मैं आप के साथ आ सकता हूँ?''

''तुम कौन हो?'' बादशाह ने अधिकारपूर्वक पूछा।

''तुम तो शहनशाह की तरह बात करते हो! पर हो केवल भिखारी। भिखारी की तरह बात करना सीखो। नहीं तो एक पैसा नहीं मिलेगा।'' बीरबल आवाज बदल कर बोला।

''तुम कौन हो?'' बादशाह ने आवाज धीमी कर दी।

''तुम्हारी तरह एक भिखारी।''

''किन्तु मैं भिखारी नहीं हूँ,'' बादशाह गुर्रा कर बोले।

''तब तुम कौन हो? शहनशाह?'' बीरबल की आवाज में सिर्फ नफरत थी।

''तुमने ठीक ही कहा। मैं रात में लोगों का हाल जानने के लिए बाहर निकलता हूँ।'' बादशाह ने सिर ऊँचा करते हुए कहा।

''तुम समझते हो कि तुम मुझे उल्लू बना दोगे?''

''मैं साबित कर सकता हूँ, मैं कौन हूँ?'' बादशाह ने एलान किया।

''करके दिखाओ, अभी, इसी वक्त ! नहीं तो, मैं तुम्हें अधिकारियों के हवाले कर दूँगा।''

बादशाह का दम घुटने लगा। उसे लगा कि यह भिखारी उसे नीचा दिखा रहा है। ''मैं क्यों भिखारी के सामने अपनी पहचान सिद्ध करूँ?''

''क्यों कि चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं।'' बीरबल ने उत्तर दिया।

''कैसी बेवकूफी की बातें हैं?'' बादशाह ने

गुस्से में अपनी राजमुद्रिका निकाली और बीरबल को दिखाया।

''जरा मैं देखूँ तो, क्या यह सचमुच असली है?'' बीरबल ने आग्रह किया।

बादशाह ने मुद्रिका उसे दे दी। बीरबल ने उसे उलट-पलट कर देखा, उसकी जाँच की और सवालिया आवाज में पूछा, ''तुम्हें किसने यह मुद्रिका दी?''

''यह मेरी है। मैं शहनशाह हूँ।''

''तुम चाहते हो कि मैं इस पर विश्वास कर लूँ?'' बीरबल नफरत से हँसा।

''अपनी हँसी बन्द करो, बेवकूफ, यदि तुम अपने शरीर पर अपना सिर देखना चाहते हो,'' बादशाह ने चेतावनी दी।

दोनों जब वाद-विवाद कर ही रहे थे कि एक अधिकारी के साथ एक गश्ती दल ने उन्हें देखा और बात क्या है, यह जानने के लिए तुरत उनके पास पहुँच गया।

''इस आदमी को पकड़ लो। यह चोर है।'' बीरबल ने बादशाह की ओर इशारा किया।

''मैं शहनशाह हूँ,'' भिखारी के वेश में बादशाह ने कहा। ''वह झूठ बोल रहा है। मैं शहनशाह हूँ। देखो, यह मेरी राजमुद्रा है,'' बीरबल ने अधिकारी को मुद्रिका दिखाते हुए कहा।

अधिकारी ने झुक कर सलाम किया और क्रोधित होकर भिखारी को पकड़ने के लिए वह आगे बढ़ा। अकबर ने खतरे को भाँप लिया और वे तेजी से वहाँ से चम्पत हो गये।

''जाने दो, सनकी है,'' बीरबल ने अधिकारी और उसके आदमियों को रोक लिया जो पकड़ने के लिए उसका पीछा करने जा रहे थे।

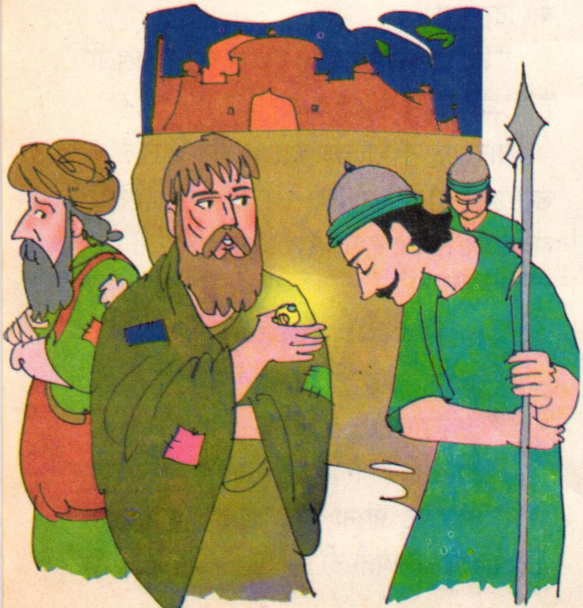

दूसरे दिन सुबह बीरबल दरबार में हाजिर हुआ। उसने बादशाह से अकेले मिलने की इजाजत माँगी। संतरी पहले बादशाह से पूछ कर, बीरबल को उनके पास ले गया।

''शहनशाह'' बीरबल ने घुटने टेक कर कहा।

''हाँ, बीरबल।''

''क्या आपने पिछली रात अपनी मुद्रिका खोई है?''

''तुम्हें कैसे पता चला?''

बीरबल ने रात की घटना के बारे में बताया। तुरन्त बादशाह का चेहरा गंभीर और तनावपूर्ण हो गया। वे क्रोध से काँपने लगे।

''शहनशाह! मैं माफी चाहता हूँ। कुछ दिनों पूर्व आपने चुनौती दी थी कि मैं यह प्रमाणित करूँ कि आप को ताकत आप की राजमुद्रिका से मिलती है। जब पिछली रात राज मुद्रा मेरे हाथ में थी तब अधिकारी ने मेरी आज्ञा का पालन किया।'' बीरबल ने बादशाह को राजमुद्रिका लौटा दी।

''बीरबल!'' बादशाह अकबर को अपने क्रोध पर काबू पाने के लिए काफी कोशिश करनी पड़ी। फिर वे ठठा कर हँस पड़े। ''बदमाश! तुम्हें मालूम है कि अपनी बात को कैसे साबित करना है। अब मैं जान गया कि मेरी ताकत शासक के मुकुट और राजमुद्रिका में है। तुम्हारी ताकत तुम्हारी हाजिर जवाबी और बुद्धिमानी में है और इसे कोई कभी नहीं चुरा सकता।''

बादशाह ने उसे एक रेशमी थैली दी जिससे सोने की मोहरों की खनक सुनाई पड़ रही थी।

- आर.के. मूर्ति

उदीयमान सितारा

निमिशा मोहन

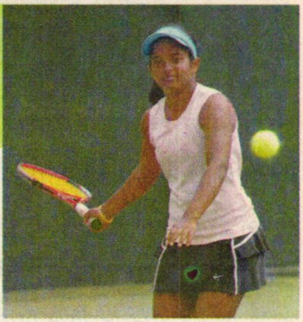

- निमिशा का रोल मोडल है- रोजे फेडरर।
- निमिशा प्रतिदिन सुबह तीन घण्टे और शाम को ३ घण्टे अभ्यास करती है।
- वह टेनिस ऐड्वाण्टेज, बंगलोर में अभ्यास करती है।
- निमिशा का कोच ध्यान उतप्पा है।
- क्या उससे दोस्ती करना चाहते हो? कभी उसे दही भात न देना। उसे यह कतई पसन्द नहीं।

विजित प्रमुख खिताब:

आइटा सुपर सिरिज (यू-१४ सिंगल्स)- २००५

ऑल इण्डिया सुपर सिरिज (यू-१६ सिंगल्स) -२००६

आइटा टेलेण्ट सिरिज (यू-१८ सिंगल्स तथा डबल्स) - २००८

उस्टा लेवल १बी चैम्पियनशिप, न्यूयार्क यू.एस.ए. (यू-१८ सिंगल्स) - २००८

आई.टी.एफ. जूनियर (जी आर.५) चेन्नई तथा हैदराबाद-२००८

डी.एस.सी.एल. नेशनल टेनिस चैम्पियनशिप (यू-१८ सिंगल्स) - २००८

निमिशा को, १७ की उम्र में, पहले से ही १५ खिताबों की जीत का श्रेय प्राप्त है, जिनमें २ अन्तर्राष्ट्रीय यू-१८ खिताब शामिल हैं। उसने १० वर्ष की आयु से ही टेनिस खेलना आरम्भ किया जिसके लिए उसकी माँ धन्यवाद की पात्र हैं जो उसे यथासम्भव अनेक गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्साहित करती थी। बंगलोर स्थित भगवान महावीर जैन कॉलेज की पी यू सी-प्रथम वर्ष की छात्रा निमिशा को कक्षा में विलम्ब से जाने की विशेष अनुमति प्राप्त है, क्योंकि उसे सुबह में अभ्यास करने की जरूरत पड़ती है। वह कक्षा की पढ़ाई में पिछड़ न जाये, इसलिए वह ट्यूशन की कक्षाओं में जाती है।

जबकि उसकी उम्र की बहुत लड़कियाँ डाइट पेप्सी और रैबिट फूड पर रहती हैं, निमिशा काफी मात्रा में प्रोटिन और कार्बोहाइड्रेट्स लेना पसन्द करती है। वह प्रतिदिन टेनिस अभ्यास के बाद ४५ मिनट तक फिटनेस कार्यक्रम करती है और सप्ताह में तीन दिन जिम्स व्यायाम भी। टेनिस जैसे सख्त खेल में ऊँचे स्तर की दुरुस्ती की जरूरत होती है और निमिशा अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए कार्य कर रही है।

अब तक उसका कठिनतम मैच कौन-सा था? निमिशा निमिष मात्र में उत्तर देती है कि हरेक मैच चुनौतीपूर्ण होता है; और इसका राज़ है एक बार में एक पॉइण्ट खेलना और यह सोचने की कोशिश नहीं करना कि नतीजा क्या होगा।

अन्त में, निमिशा, भारत की, आगे बढ़ने के लिए आतुर, आशावादी तरुणों की पीढ़ी के मंत्र को प्रतिध्वनित करती है, "कठिन श्रम करो, जिसके लिए संघर्षरत हो उसका उपभोग करो, और सर्वोपरि- आत्म विश्वास रखो।"

अपना-अपना अभिप्राय

माणिक्य नामक व्यक्ति पास ही के गाँव से रामापुर आया। उस समय गाँव के कुछ लोग चबूतरे पर बैठकर साधु सदानंद के बारे में बातें कर रहे थे, जिसके रहने की व्यवस्था गाँव के बाहर साधु की इच्छा के अनुसार गाँववालों ने ही की। रमेश नामक एक धनी किसान कहने लगा, "मेरी समझ में नहीं आता कि ये साधु-संन्यासी किसका उद्धार करने इस प्रकार भटकते रहते हैं। उनके कहने पर ही क्या हममें भक्ति उत्पन्न होती है? पानी नीचे की ओर प्रवाहित होता है, सदा सच ही बोलना चाहिये आदि उनकी बातों से क्या हम अनभिज्ञ हैं? ये वेदांत सत्यनीति सूत्र किसे मालूम नहीं? ऐसे साधुओं के पास जाना व्यर्थ है। उनके पास जाकर हम धन और समय गँवाते हैं।"

ग्रामीण जो उसकी बातें सुन रहे थे थोड़ी देर बाद फल-फूल लेकर स्वामीजी के दर्शन करने निकल पड़े। यह दृश्य देखकर माणिक्य आश्चर्य में डूब गया और उनसे पूछा, "आप लोग यह क्या कर रहे हैं? गाँव के उस प्रमुख व्यक्ति की बातें सुनने के बाद भी साधु के दर्शनार्थ जा रहे हैं ? आप लोग क्या उनके अभिप्राय को इतना ही मूल्य देते हैं?"

ग्रामीणों ने हँसकर कहा, "तुम तो इस गाँव के लिए नये हो, इसीलिए यों पूछ रहे हो। अभिप्राय अपना-अपना होता है। यह कोई ज़रूरी नहीं कि उनके अभिप्राय के अनुसार ही चलें। अब समझ गये न, उनके प्रति हमारा क्या अभिप्राय है ?"

अब माणिक्य की समझ में आ गया कि रमेश किस प्रकार का आदमी है और लोग उसके अभिप्राय को कितना मूल्य देते हैं।

-दीक्षित

भारत के धरोहर-स्थल

कुतुब मीनार तथा इसके इर्द गिर्द के स्मारक

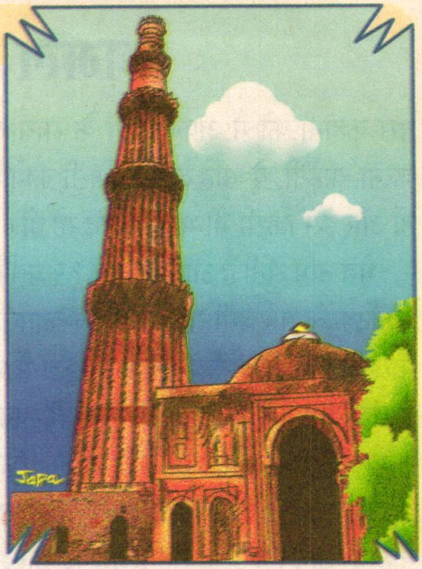

कुतुब परिसर में प्रसिद्ध कुतुब मीनार मुख्य स्मारक है। इस मीनार का निर्माण गुलाम वंश के प्रथम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा आरम्भ किया गया था। उसके वारिस इल्तमश और बाद के शासकों ने इसकी ऊँचाई को बढ़ाने के लिए कुछ और मंजिलों को जोड़ा। कुतुब मीनार ७२.५ मीटर ऊँचा है। आधार का व्यास १४.३ मीटर चौड़ा है जबकि सबसे ऊपरी मंजिल का व्यास २.७ मी. है।

अलाई गेट मुख्य प्रवेश द्वार है जिसे अलाउद्दीन खिल्जी ने बनाया था। गुम्बदनुमा प्रवेश द्वार लाल बलुआ पत्थर तथा जड़ाऊ संगमरमर के परदों से सुसज्जित है, तथा जो तुर्की शिल्पियों के असाधारण हस्तशिल्प को दर्शाता है, जिन्होंने इस पर काम किया था।

अलाई मीनार की कल्पना अलाऊद्दीन खिल्जी ने की थी जिसे कुतुब मीनार से दुगुनी ऊँचाई तक बनाने की आशा की गई थी। परन्तु अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद उसका निर्माण बन्द कर दिया गया। इसकी पहली मंजिल जो २४.५ मी.ऊँची है, जीर्ण अवस्था में है।

कुतुब परिसर का लौह खम्भ धातु कर्म की विश्व की सर्वाधिक उत्सुकताओं में से एक है। यह ९८ प्रतिशत पिटवाँ लोहा से निर्मित है और बिना जंग लगे या अपघटित हुए १६०० वर्षों से खड़ा है। यह खम्भ, जो करीब ७ फुट ऊँचा है, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (३७५-४१४ सी.ई.) द्वारा निर्मित किया गया था। परम्परागत विश्वास के आधार पर यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति इस खम्भे से अपनी पीठ सटा कर दोनों भुजाओं से उसे पूरी तरह घेर लेगा, उसकी मुराद ज़रूर ही पूरी हो जायेगी।

यूनेस्को ने कुतुब मीनार तथा इसके परिसर को विश्व धरोहर की सूची में १९९३ में शामिल किया क्योंकि इसे इण्डो इस्लामिक वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण पाया गया।

यह परिसर जनता के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुला रहता है।
प्रवेश शुल्क: भारतीय नागरिकों तथा सार्क देशों के पर्यटकों के लिए १० रु. है। दूसरे देशों के लिए ५ अमरीकी डॉलर। १५ वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क।

कागल गाँव का व्हेल

इस कहानी को मैं अपने मित्रों के साथ साझा करना चाहूँगी, वे चाहे देश के किसी कोने में भी हों और इसे किसी भी भाषा में पढ़ रहे हों।

मेरा नाम सुनी है और मेरी उम्र १२ वर्ष है। मैं कर्नाटक के पश्चिमी तट पर स्थित कागल गाँव में रहती हूँ। मैं स्थानीय सरकारी स्कूल में पढ़ती हूँ। जिन्दगी की घड़ियाँ अनन्त रूप से सागर की लहरों की तरह यों ही बीत रही थीं कि एक दिन हमारे स्कूल में नेचर ग्रूप आरम्भ करने के लिए दो महिलाएँ आईं। मैं उसमें शामिल हो गई और इसकी गतिविधियाँ मुझे अच्छी लगने लगीं। हरेक सप्ताह में कुछ नई चीज करने के लिए सोचना होता था। इससे मैं सजीव और ऊर्जस्वी महसूस करने लगी जो पहले कभी नहीं थी।

पिछले दिसम्बर के सप्ताहान्त में अपने गाँव के समुद्री तट पर हमलोगों ने नेचर शिविर लगाया था। हमलोगों की परीक्षा अभी-अभी खत्म हुई

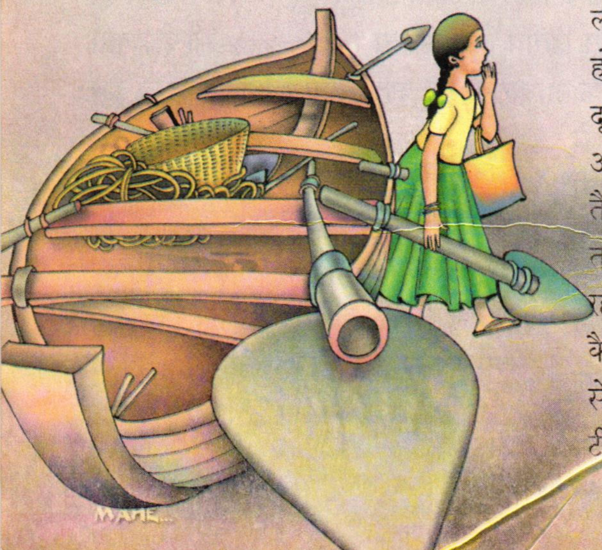

थी। इसलिए खुशी से पागल हो पानी के किनारे-किनारे पहाड़ी की ओर दौड़ पड़े जिसके ऊपर हमलोगों को आरोह करना था। पहाड़ी की दूसरी ओर अगनाशिनी नदी का मनोरम दृश्य था।

''कुछ हो रहा है,'' मेरा एक सहपाठी अरुण मछुआरों की एक भीड़ देख कर चिल्लाया। हमलोग भीड़ में से निकल कर जब आगे आये तब मैंने जो कुछ वहाँ देखा उससे मैं बेहोश होते और पीछे गिरते-गिरते बची। यह एक काला भूरा मांस का एक विशाल लोंदा था और यह धीरे-धीरे श्वास ले रहा था। निस्सन्देह यह किसी जानवर का हिस्सा था, पर, इसका आदि-अन्त कहाँ था?

''तिमिंगल,'' किसी को बोलते हुए मैंने सुना।

''ओह! व्हेल!'' तब तक मैं भीड़ के सबसे अन्दरवाले घेरे में आ चुकी थी। वहाँ रेत पर एक शानदार जीव को फैला हुआ देखा। मैंने जल्दी से उसके चारों ओर खड़े आदमियों की गिनती कर ली। वे ३६ थे। घेरे की लम्बाई ५० फुट करीब होगी। व्हेल इतना ऊँचा था कि मैं उसके ऊपर से दूसरी ओर नहीं देख सकती थी। कुछ बुजुर्गों ने अनुमान लगाया कि यह समुद्र के उथले जल में तैरता हुआ आ गया होगा और फिर लहरों ने उसे तट पर फेंक दिया होगा जहाँ वह असहाय पड़ा रहा। अब समस्या यह थी कि उसे समुद्र में वापस कैसे भेजा जाये। कुछ युवक उसके ऊपर बाल्टियों से समुद्र का पानी डाल रहे थे। हमारी नेचर क्लब टीचर लक्ष्मी अक्का ने समझाया कि व्हेल की त्वचा

को नम रखना पड़ता है जिससे वह तेज धूप में सूख न जाये।

पहले से ही उसके पँखों में रस्सियाँ बाँधी जा रही थीं और उसे समुद्र में खींचने के लिए दल बनाये जा रहे थे। हमारे ग्रामीण बहुत मजबूत हैं क्योंकि वे नावों को समुद्र से बाहर और अन्दर करने के लिए खींचने के अभ्यस्त हैं। परन्तु किसी ने यह अनुमान नहीं लगाया था कि व्हेल कितना भारी हो सकता है। वह एक इंच भी टस से मस नहीं हुआ। और भी लोग एकत्र होने लगे और काफी शोर होने लगा। व्हेल एक शरीफ विशालकाय के समान था जो बिलकुल हिलडोल नहीं रहा था, पर विरोध नहीं कर रहा था। उसकी आँखें दयार्द्र थीं।

इस प्रकार करीब डेढ़ घण्टे बीत गये और लोग कहने लगे कि अब कोई उम्मीद नहीं है, यह व्हेल मर जायेगा।

कुछ लोग मत्स्य विभाग से भी आये और माप लिये। तब तक व्हेल को पानी में खिसका कर ले जाने के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो चुके थे।

''यदि केवल हमलोग तेल के समान कोई फिसलनेवाली चीज़ इसकी बगल में रख सकें तो...'' किसी ने कहा। परन्तु तब ट्रक भर तेल की आवश्यकता होगी। मैं निराश होने लग गयी थी- नेचर क्लब की महीनों की गतिविधि के बाद यहाँ सचमुच एक जिन्दगी का सवाल खड़ा हो गया था और हमलोग अपने को असहाय महसूस कर रहे थे।

मैं अपने मन में कुछ सोचने के लिए संकल्प करने लगी....कुछ फिसलने, सरकाने की चीज..। तब मैंने अपने माथे को ठोका। परन्तु, निस्सन्देह!

''लक्ष्मी अक्का,'' मैं चिल्ला पड़ी, ''हम सब को बासले सोप्पू (मालाबार पालक जो करीब सभी घर के पिछवाड़े में उगाया जाता है) और जपाकुसुम की पत्तियों का लेप बनाने के लिए क्यों नहीं कहते? यह इतनी चिकनी होती है, हम इसे व्हेल के बगल में डाल कर उसे खींच सकते हैं!''

यह एक सनकी विचार था। पर मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि स्त्रियाँ भीड़ से छटने लगीं

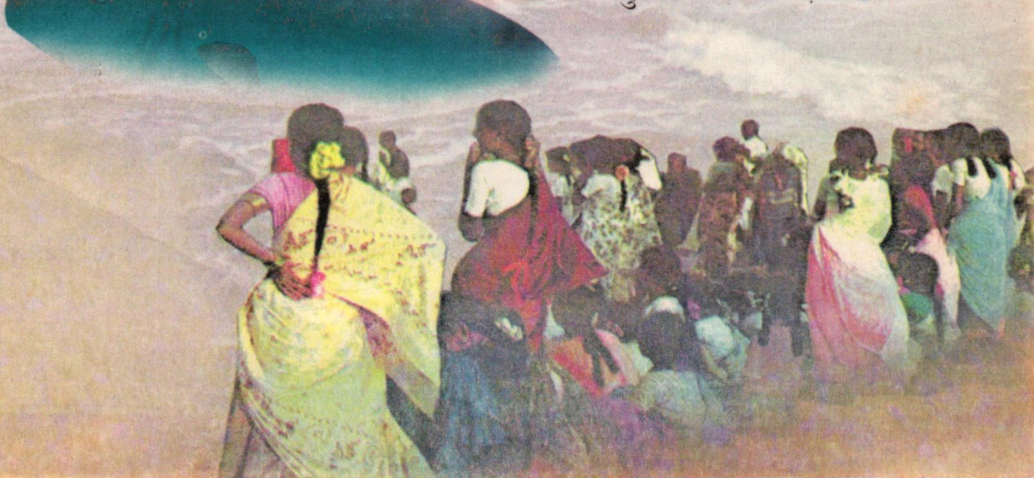

और अपने घरों को भाग कर जाने लगीं। हमारे गाँव में ६७० परिवार रहते हैं। मैं अपनी माँ के पास दौड़ी गई और अपने पिछवाड़े का सारा सोप्पू तोड़ डाला और उसे पीसने लगी। मुझे याद आया, मेरे घर में ढेर सारा लोलेसारा (घी कुंवार) था और उसका जेल केवल चिकना ही नहीं होता बल्कि इससे घाव और चोट भी ठीक होता है। इसलिए मैंने उसे भी मिला दिया।

शीघ्र ही हमारे पास ५ बाल्टी लसीला लेप तैयार था। हमलोग थक गये थे- मेरे पिता ने मदद की। फिसलनेवाले साबुन के पानी भरी बाल्टियों, पुराने टिनों व पीपों के साथ भीड़ एकत्र होने लगी। कुछ लोगों ने अपनी साइकिलों और बाइक्स पर मालाबार पालक के साबुन के ड्रम्स लाद रखे थे और वे व्हेल की ओर जा रहे थे। यह कमाल की कवायद थी! मैंने अपने गाँव को किसी प्रयोजन के लिए एक सूत्र होते कभी नहीं देखा था। आम तौर पर हमेशा छोटे-छोटे झगड़े होते रहते हैं और गाँव की राजनीति होती रहती है।

अब तक सब को पसीने आने लगे थे, फिर भी सब व्हेल की पूरी लम्बाई तक हरा लेप डालने लगे। साथ ही मछुआरे पूरी ताकत लगा कर उसे ढकेलने और खींचने लगे। उनके परिचित गीतों की ध्वनि से मेरे कान भर गये।

''प्रकृति माता, कृपया इस कोशिश को कामयाब कर दें, व्हेल के लिए, हम बच्चों के लिए, हमारे गाँव के लिए,'' मैंने प्रार्थना की। क्या हम सब व्हेल को हिला सकेंगे?

मुझे सचमुच विश्वास है कि उस हरे लेप के पानी में जादू था जो उस दिन हमारे घरों से आया था, क्योंकि व्हेल धीरे-धीरे सरकने लगा! पानी में, इसके अन्दर आधा और फिर पूरी तरह जल मग्न! लोग जोर लगा रहे थे, पसीने-पसीने हो रहे थे, फिर भी खींचते रहे। फिर रस्सियों को पानी में मछली मारनेवाली छोटी नावों को थमा दिया गया और वे व्हेल को गहरे पानी की ओर खींचने लगे।

गहरे पानी में जाते ही व्हले तैरने की कोशिश करने लगा। नावें आगे, और आगे बढ़ती गईं जबकि हमलोग किनारे पर से देखते रहे। अन्त में, मैंने देखा कि नाविक रस्सियों को लपेटने लगे। व्हेल अब आत्म निर्भर था। नाविक वहीं रुक कर उस पर नजर रखते रहे और हमलोग तट से निहारते रहे। अन्तिम दृश्य जो मैंने देखा, वह था कि जैसा कि मुझे याद है, हमारी नावों की एक पंक्ति थी और जब व्हेल अपने परिचित क्षेत्र की नीली गहराइयों में तैरने लगा तब जल का एक बहुत बड़ा फुहारा उठा। इससे अधिक आत्म सन्तोष की और क्या बात हो सकती है !

- सुनीता राव

Non-stop fun @ chandamama.com!

Chandamama's
Festive fun!

What's your NEW YEAR RESOLUTION?

Post your NEW YEAR RESOLUTIONS at our site and print them for your future reference. Win surprise gifts for your resolutions- a motivation from our end for you to stick to your resolutions.

Play our Cricket Quiz!

Know about your favourite players by answering simple questions. SMS CMCQ to 54646 and win fabulous prizes.

Dear Chandamama

School issues? Friendship woes? Just plain confused about life and its problems?

Come to us with your questions and we will try to help you see light!

Pankaj. Z from California: Is komodo dragon a real dragon?

Karan J from Powai: I want to become a cartoonist. Please tell me how!

Nihan Varma from Nainital: I always yawn when I'm in a crowded place! Why is that?

To know the answers, browse CONNECT under CONTEMPORARY section at www.chandamama.com

What's more...

Browse www.chandamama.com for hundreds of stories and comics for your reading pleasure...

Download cool games and applications at the Download center.

Want to become a Chandamama Author? Come online and submit your stories!

स्वीटजर लैण्ड की एक कथा

गानेवाला देवदारु वृक्ष

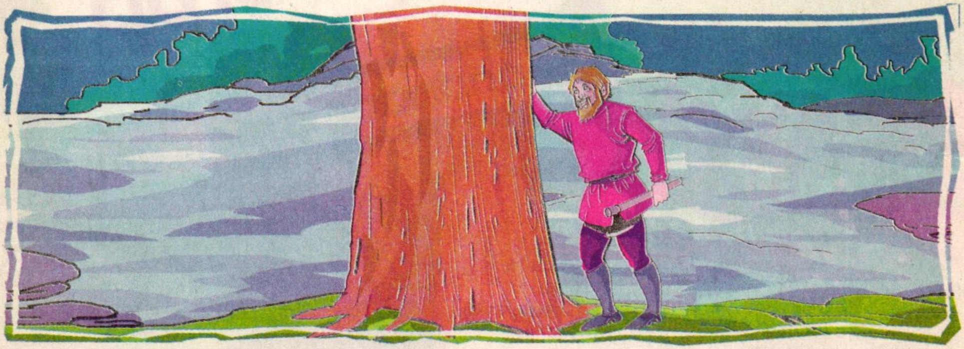

एक बार स्वीटजर लैण्ड के वैलेज प्रान्त में, रेकिन्जन गाँव में, एक काष्ठ चित्रकार रहता था। इस विशिष्ट हस्तशिल्प से, जिसमें संतों की आकृतियाँ नक्काशी द्वारा बनाई जाती हैं, इस क्षेत्र के अनेक गिरजा घरों को सुसज्जित किया गया था। एक शाम को जब रेकिन्जन के गिरजा घर में प्रार्थना काल का घण्टा बजा, काष्ठ चित्रकार ने एक विचित्र पर मधुर गान सुना। वह इसे ध्यान से सुनने के लिए अपनी खिड़की के पास गया। उसने देखा कि यह मीठी ध्वनि गाँव से ऊपर खड़ी ढाल वाली पहाड़ियों पर फैले होबैक के जंगल से आ रही है।

जैसे ही गिरजा घर के घण्टे की आवाज बन्द हुई, गान भी बन्द हो गया। ''मेरी कल्पना मुझे भगा ले जा रही है,'' काष्ठ चित्रकार बड़बड़ाते हुए अपने औजारों को एक तरफ रख कर जल्दी से गिरजा घर चला गया।

लेकिन अगली रात उसे गान फिर सुनाई पड़ा। और उसके बाद की रात एक बार और उसने सुना। वास्तव में वह विचित्र संगीत सांध्य प्रार्थना के लिए गिरजा घर का घण्टा बजते ही शुरू हो जाता और घण्टे की आवाज शब्द होते ही संगीत समाप्त हो जाता। काष्ठ चित्रकार को जब मालूम हुआ कि गाँव के अन्य बहुत लोगों ने भी इसे सुना है तब उसे स्वाभाविक ही कुछ राहत मिली।

एक शाम को प्रार्थना के समय वह पहाड़ी पर चढ़ कर होबैक के जंगल में चला गया और उसने उस रहस्यमय संगीत के उद्गम का पता लगाने का निश्चय किया। वह बहुत देर तक विशाल वृक्षों के बीच घूमता रहा।

अन्त में संगीत की आवाज का अनुगमन करते हुए वह एक विशाल देवदारु वृक्ष के पास पहुँचा जो सैकड़ों वर्ष पुराना था। यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि आवाज पेड़ की धड़ से आती हुई मालूम पड़ी। जब संगीत बन्द हो गया,

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१० नवम्बर २००८ उत्तर:

१. रमजान; मक्का–सऊदी अरबिया में; २. जन्माष्टमी, भगवान श्री कृष्ण का जन्म दिन; ३. तीज; ४. पारसी लोग; पटेटी।

तब वह अपनी खोज के बारे में बताने के लिए गाँव की ओर दौड़ पड़ा। उसके बाद हर शाम को अनेक ग्रामीण देवदारु वृक्ष को गाते हुए देखने के लिए पहाड़ी पर जाने लगे।

काष्ठ चित्रकार प्रायः वृक्ष के पास जाता और उसकी छाल पर हाथ रखता था। वह हमेशा इस वृक्ष के बारे में सोचता रहता, इसके बारे में सपने भी देखता। उसके मन में उस पर नक्काशी करके एक सर्वाधिक भव्य आकृति बनाने की धुन सवार हो गई, ऐसी आकृति जैसी उसने पहले कभी न बनाई हो।

रेकिन्जन का पल्ली पुरोहित आखिरकार काष्ठ चित्रकार के, वृक्ष को काट कर उस पर उत्कीर्ण करने के प्रस्ताव को मान गया। लेकिन वृक्ष को काटते समय लकड़हारों के मन में एक गुप्त भय था और जब वे घोड़ों की मदद से उसे घाटी में खींच कर ला रहे थे तब उनके हृदय दुःख से भारी हो गये।

उस्ताद नक्काश ने खुद वृक्ष के वक्ष स्थल से एक बड़ा खण्ड काटा। उसने पल्ली पुरोहित से कहा कि वह इसमें से कुमारी मेरी की प्रतिमा तराशेगा। वह उसी रात से काम करने लग गया। वह रात-दिन काम में लगा रहा और खाना भी भूल गया। मीलों दूर से लोग काष्ठ में पवित्र माता की उत्कीर्ण होती प्रतिमा देखने के लिए आने लगे। काष्ठ चित्रकार सचमुच प्रतिभावान था और उसकी कृति वास्तव में उत्कृष्ट थी। सब ने कहा कि किसी कलाकार ने मेरी की इतनी सुन्दर और जीवन्त प्रतिमा कभी नहीं बनाई।

जब प्रतिमा पूरी हो गई तब इसे गिरजा घर को भेंट कर दिया गया। पुरोहित ने इसे वेदी पर प्रतिष्ठित किया और लोगों ने मौन सम्मान के साथ इसे देखा। तब अचानक मेरी की काष्ठ प्रतिमा का मुख खुला और एक बार पुनः परिचित चमत्कारिक संगीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा।

परन्तु इस बार देवदारु वृक्ष का अन्तिम गान था।

– प्रस्तुति : जुबेर डी-क्रुज

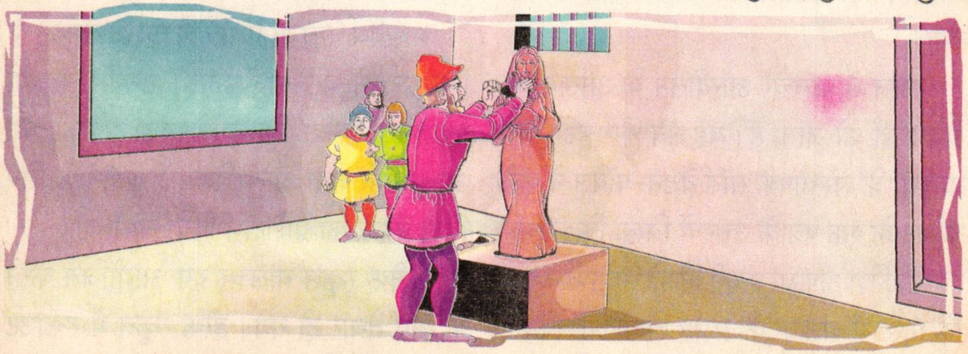

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ३६

एक आन्दोलन का जन्म

ब्रिटिश महिला एनी बेसेण्ट, मादाम ब्लेवत्स्की द्वारा संस्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी में शामिल होने के लिए एक लम्बी दूरी की यात्रा करके भारत आई और यहीं बस गई। उन्होंने भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया और वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी।

भारत में बालचर आन्दोलन के आरम्भ का श्रेय इन्हीं को जाता है। यह तब शुरू हुआ जब बालचर के संस्थापक लॉर्ड बैडन-पॉवेल ने एनी बेसेण्ट के एक पत्र के उत्तर में लिखा कि "हमारे पास ब्रिटिश अफसर इतनी काफी मात्रा में नहीं हैं कि भारत में बालचर का प्रसार किया जा सके।"

एनी बेसेण्ट काफी निराश हो गई। वह क्योंकि भारत में बस गई थी, इसलिए भारतवासी उसके अपने भाई-बहन थे। यदि बाहरी सहायता उपलब्ध नहीं हो सकती, तब वह स्थानीय मदद के लिए प्रयास करेगी। उसकी दृढ़ मान्यता थी कि यहाँ के लोगों को अपने अतीत, इतिहास, अपनी संस्कृति, परम्परा पर गर्व करना चाहिये। तभी उनमें वह शक्ति और आत्म विश्वास जागेगा जिससे वे अन्ततः मिलनेवाली आजादी को संभाल पायेंगे।

एनी बेसेण्ट को पूरा विश्वास था कि यहाँ के युवा वर्ग में अनुशासन तथा आत्मविश्वास भरने के लिए बालचर आन्दोलन सर्वोत्तम साधन बनेगा। तरुणों को वांछित साँचे में ढालना आसान भी है, क्योंकि उनका मन एक साफ-सुथरा कैनवेस की तरह होता है जिस पर उसके विचारों को आकार दिया जा सकता है।

भारतीय बालचर एसोसियेशन के संगठन के लिए इन्होंने योजनाएँ बनाईं। उन्होंने यह भी निर्धारित किया कि छोटे-बड़े लड़कों को आत्मनिर्भर तथा आत्मविश्वासी बनाने के लिए किस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अनेक स्कूल बालचर ग्रूप आयोजित करने के लिए तैयार हो गये। हरेक स्कूल में स्काउट

मास्टर की ट्रेनिंग देने के लिए वहाँ के कर्मचारियों में से एक को चुना गया। उन दिनों छात्रों के लिए यूनिफार्म का प्रचलन नहीं था। और शारीरिक शिक्षा के लिए अलग से कोई पिरियड नहीं दिया जाता था।

बालचर के लिए चुने गये छात्रों को यूनिफॉर्म और जूते दिये गये। हैट के स्थान पर एनी बेसेण्ट ने सोचा कि भारतीय बालकों के सिर पर पगड़ी ठीक लगेगी। उन्होंने निश्चय किया कि भारतीय बालचर राष्ट्रगीत गायेंगे और अपनी-अपनी मातृ भाषा में गायेंगे। ऐसे राष्ट्रगीत रचे गये और उनके लिए सामरिक धुन बनाई गई। उनकी धारणा थी कि ऐसे गीतों से बच्चों को प्रेरणा मिलेगी।

उनका प्रशिक्षण सुनियोजित था। सफाई, शिष्ट और विनम्र व्यवहार, मैत्री, परोपकार, करुणा तथा आकर्षक व्यक्तित्व के विकास को काफी महत्वपूर्ण माना गया। अनेक स्कूलों ने इस आन्दोलन को अपनाया।

एक दिन बेसेण्ट को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि लॉर्ड बैडेन-पॉवेल भारत भ्रमण पर आ रहे हैं। उसे कुछ आशंका हुई। क्या वे भारतीय बालचरों को देख कर प्रसन्न और प्रभावित होंगे? क्या उन्हें महसूस होगा कि मेरे अनुरोध को ठुकरा कर उन्होंने गलत किया?

यह निश्चय हुआ कि लॉर्ड बैडेन-पॉवेल मार्च पास्ट पर सैल्यूट लेंगे। उन्होंने स्वीकृति तो दे दी किन्तु उन्होंने बहुत आशा नहीं की थी। किन्तु सैल्यूट लेते समय भारतीय बालचरों का मार्च पास्ट देख कर वे चकित रह गये। वह बिल्कुल त्रुटि रहित था। बैण्ड उत्कृष्ट था। कदम नपे तुले थे। गीतों की धुन और उनका उच्चारण श्रव्य, मधुर और शानदार था। यह एक ऐसा प्रदर्शन था जिस पर संस्थापक गर्व अनुभव कर सकता था।

वह एनी बेसेण्ट की ओर मुड़ा। ''मैंने भारतीय बालचर एसोसियेशन को ब्रिटिश ब्यॉय स्काउट्स मूवमेण्ट के साथ सम्बद्ध करने का निश्चय किया है, यदि आप सहमत हों!'' ऐनी बेसेण्ट मुस्कुरा पड़ी।

लॉर्ड बैडेन-पॉवेल ने घोषणा की कि वे एनी बेसेण्ट को मानद स्काउट कमिश्नर बनाने जा रहे हैं। उसके लिए पद का कोई महत्व नहीं था। परन्तु यह एक बहुत बड़ा सम्मान था और उसके इस आत्म-विश्वास की मान्यता थी कि भारत के बालचर विश्व के श्रेष्ठ बालचरों से कम नहीं होंगे।

- के. आर.

(यह शृंखला समाप्त हुई)

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१६

दीपावली पर मुक्ति

दीवाली का सम्बन्ध प्राय: प्रकाश और ध्वनि से जोड़ा जाता है। सन् १९४२ में बिहार के हजारीबाग जेल में बन्द राजनीतिक कैदियों के लिए, यह आजादी के बारे में सोचने का अवसर था। उनके नेता जयप्रकाश नारायण थे। गाँधी जी द्वारा ९ अगस्त १९४२ को ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' आरम्भ करने के तुरंत बाद लगभग सभी राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा हिरासत में ले लिया गया और विभिन्न जेलों में डाल दिया गया।

जयप्रकाश को हजारीबाग जेल में बन्द किया गया था, जो चट्टानी क्षेत्र है। जेल घने जंगलों से घिरा हुआ है। जेल के चारों ओर ऊँचे प्राचीर हैं। अधिकारियों ने इस अत्यन्त सुरक्षित जेल को खतरनाक अपराधियों तथा उतने ही खतरनाक माने जानेवाले राष्ट्रवादियों के रखने के लिए प्रयुक्त किया था।

एक दिन, संध्या के समय, जयप्रकाश अपनी काल कोठरी में बैठे अपने भाग्य को कोस रहे थे। जब उन्हें देश के स्वाधीनता-संघर्ष में सक्रिय रहना था, उन्हें अचल कर दिया गया है। उन्होंने दीवार की ऊँचाई पर खिड़की से आसमान को देखा, जितना भी दिखाई पड़ा। अपने घोंसले की ओर उड़ते हुए खग वृन्द पर उनकी दृष्टि पड़ी। उन्हें कितनी आजादी है! काश! वे जेल से बाहर हो पाते और पक्षी के समान उड़ पाते। किन्तु

अचानक उन्होंने महसूस किया कि यह असम्भव-सा है । यह सुप्त विचार कुछ दिनों तक उनके मन में घुमड़ता रहा। उन्होंने अपने साथियों से यह बात बताई, जिनमें से अधिकतर लोगों ने इसे सिर्फ बेवकूफी कह कर टाल दिया। फिर भी, उनमें से कुछ इसकी सम्भावना पर विचार करने को तैयार थे। उन्हें स्मरण आया कैसे कैदी, अपराधी तथा अन्य, खास कर उत्तर और दक्षिण भारत के क्रान्तिकारी, जो विदेशी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व कर रहे थे, अंग्रेज अधिकारियों की आँखों में धूल झोंक कर भागने में कामयाब हो गये थे! यदि पलायन की सावधानी पूर्वक योजना बनायी जाये तो यह उतना कठिन नहीं है, इस पर वे एकमत थे।

जयप्रकाश नारायण का एक साथी ए.पी. सिनहा था, जो अपने हीरो की तरह बिहार का ही रहनेवाला था। उसने जयप्रकाश को कहा, ''जे.पी., मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकता, पर मैं तुम्हारे पलायन को छिपाने में मदद करूँगा। तुम्हारे पास दृढ़ संकल्प है जो दूसरों को प्रेरित कर सकता है। तुम उन्हें आत्म-बलिदान और दुःख सहन करने के लिए उत्साहित कर सकते हो। तुम एक महान राष्ट्रीय नेता हो।''

जो इस योजना में शामिल थे, वे सब मिल कर रणनीति बनाने में जुट गये। पहले, उन्हें एक लम्बी रस्सी की जरूरत थी। उनकी चादरें और धोतियाँ काम आ जायेंगी। उन्होंने पलायन का दिन भी निश्चित कर लिया। वह ८ नवम्बर का दिन था जब लोग दीवाली मनाने में व्यस्त रहेंगे। यह अमावस्या की रात होगी, घनी अन्धेरी। दिन में उन्होंने पहरेदारों को मिठाइयाँ बाँटीं और उन्हें कहानी सुनने के लिए आमन्त्रित किया। सिनहा कहानी सुनाने में दक्ष था। कहानी सुनते समय कैदियों और पहरेदारों में इतनी मिलनसारी हो गई कि पहरेदारों को पता नहीं चला कि कहाँ क्या हो रहा है। कुछ कैदी तन्मय श्रोताओं के समूह से शनै-शनै उठ कर चले गये। कभी-कभी काल-कोठरी ठहाकों से गूंज पड़ती।

शीघ्र ही, रस्सी तैयार हो गई। कैदियों ने अपने कपड़ों और नकद की गठरी बनाई और वे सावधानी से प्राचीर की ओर बढ़े। किसी एक ने दीवार पर रस्सी फेंकी जो एक लोहे की छड़ में फँस गई। जयप्रकाश ने दीवार पर पहले चढ़ने का खतरा लेना चाहा। उन्होंने रस्सी की जाँच की और सुनिश्चित किया कि यह बीच में टूटेगी नहीं। फिर वे दीवार पर चढ़ गये, वहाँ पर क्षण भर खड़े हुए और दूसरी ओर सूखी पत्तियों के गद्दे से ढके मुलायम जमीन पर कूद पड़े। दूसरे लोग भी एक-

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१० नवम्बर २००८ :

चन्दामामा के हिन्दी संस्करण के पाठकों से प्राप्त कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पायी गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हमारे पाठकों के लाभार्थ प्रश्नोत्तरी-१० के उत्तर ४५ पृष्ठ पर दिये गये हैं। कृपया सभी चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहें।

एक कर दीवार पर चढ़ कर जेल से बाहर कूद गये। वे कुल पाँच थे।

उन सब ने एक दूसरे को खुशी से बाहों में भर लिया। फिर वे जेल की दीवार से दूर जाने लगे। पर अचानक वे रुक गये। उन सबने अपनी गठरियाँ जेल के अन्दर ही छोड़ दी थीं, ताके उनके हाथ दीवार पर चढ़ने के लिए खाली रहें। वे अपने होंठ काटने लगे। रस्सी दीवार के अन्दर थी। जयप्रकाश ने कहा कि अब वे सुरक्षित और स्वतंत्र हैं, इसलिए समय नष्ट करना ठीक नहीं है। उन्हें अन्धेरे में वृक्षों के बीच एक पगडण्डी दिखाई पड़ी जिस पर गीली और कच्छी जमीन को पार करते हुए वे रात भर तेजी से चलते रहे। वे थक कर चूर होते हुए भी रुके नहीं। भोर होते होते वे खुले मैदान में पहुँचे। पर शीघ्र ही एक जहाज की गड़गड़ाहट सुन कर वे चकित और भयभीत हो गये। शीघ्र ही जहाज उनके सिर के ऊपर था। क्या वह इनकी छानवीन कर रहा है? वे पेड़ों के पीछे छिप गये।

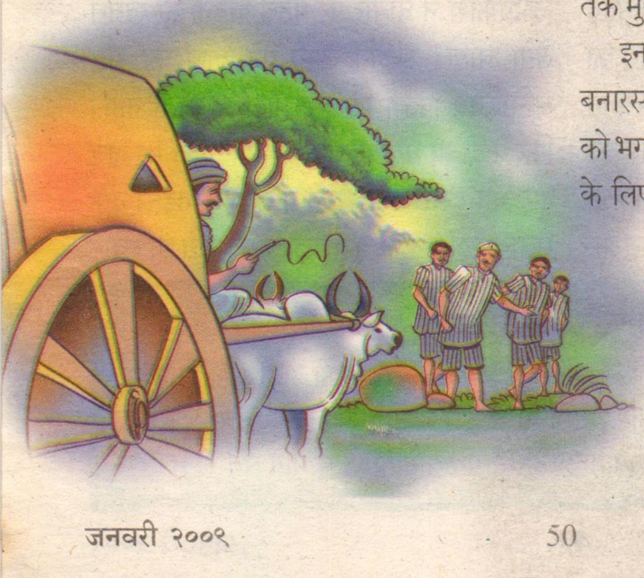

जहाज की आवाज बन्द होने पर वे बाहर निकल कर आगे बढ़ने लगे।

शीघ्र ही उन्हें एक सड़क मिली। उस पर बैल-गाड़ियाँ जा रही थीं। उन्होंने उन्हें रोक कर लिफ्ट देने का अनुरोध किया। गाड़ीवालों ने देखा कि वे कैदियों के कपड़ों में हैं। क्या वे अपराधी हैं? उन सब ने उन्हें शक की निगाह से देखा और उनसे पूछताछ की। पता चला कि वे केवल राजनीतिक कैदी हैं। भाग्यवश एक गाड़ीवाले ने जयप्रकाश नारायण को पहचान लिया।

जब गाड़ियाँ एक गाँव में पहुँची तब भागे हुए कैदियों ने अच्छी तरह नहा-धो लिया। ग्रामीणों ने धुले कपड़े और भोजन दिये। जब सड़क पर आये तब वे अपनी पगड़ियों में ठेठ देहाती दिखाई पड़ रहे थे। उनके कन्धों पर कुल्हाड़ियाँ भी थीं। इस बीच अधिकारियों ने उन्हें पकड़ने के लिए काफी खोज-बीन की पर सब व्यर्थ गया। जयप्रकाश और उसके साथी अगले पाँच वर्षों तक मुक्त रहे।

इन पाँच वर्षों में जयप्रकाश नारायण गया और बनारस के बीच आते-जाते रहे। उन्होंने अंग्रेजों को भगाने और स्वाधीनता आन्दोलन जारी रखने के लिए एक गुप्त आन्दोलन आयोजित किया।

एक धीर साहस तथा अपनी मातृभूमि के लिए अनन्य प्रेम के धनी जयप्रकाश, लोक नायक के नाम से लोकप्रिय थे हालांकि वे अपने को लोकसेवक कहना अधिक पसन्द करते थे। *- आर.के.*

(यह शृंखला समाप्त हुई)

सचिन क्रिकेट के एवरेस्ट पर

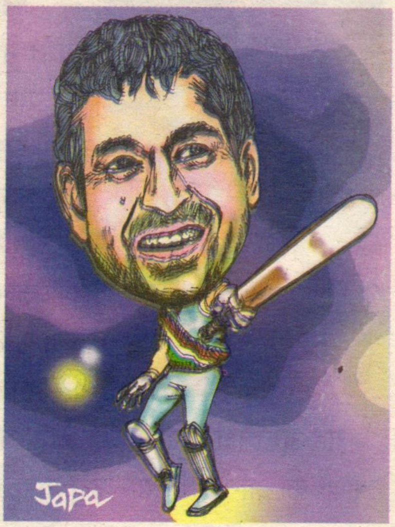

विश्व प्रसिद्ध मुक्केबाजी चैम्पियन मुहम्मद अली अपने बारे में बेझिझक एलान करता, ''मैं महानतम हूँ!'' सचिन तेन्दुल्कर इतना विनम्र है कि वह कभी नहीं चिल्ला कर बोलेगा कि वह क्रिकेट का सबसे महान खिलाड़ी है जब कि वह सचमुच में है। वह १७ अक्तूबर को मोहाली में विश्व क्रिकेट की प्रतिमा बन गया (वह पहले से भारत में था ही) जहाँ भारत और आस्ट्रेलिया के बीच दूसरा टेस्ट मैच चल रहा था। सचिन से यह उम्मीद की जा रही थी कि वह वेस्ट इण्डियन ब्रायन लारा की ११,९५३ टेस्ट रन की इनिंग्स को पार कर विश्व कीर्तिमान बनायेगा। जब सचिन बल्लेबाजी के लिए उतरा तब उसे उस कीर्तिमान को भंग करने के लिए मात्र १५ रनों की जरूरत थी। चाय-अवकाश तक उसने १३ रन बना लिये। वह पीटर सिडल की पहली गेंद का सामना कर रहा था। दो रन पूरे करने के बाद तीसरे के लिए भी वह दौड़ता रहा। अब उसके पास दोनों में, (टेस्ट मैच (३९) तथा एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच (४२) अधिकतम शतक अर्जित करने का श्रेय है। उसने एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में १६,३६१ रन बना कर कीर्तिमान स्थापित किया। जब वह १६ वर्ष का था तभी वह प्रथम टेस्ट मैच खेला। इसका जन्म बम्बई में हुआ था और इसे प्यार से लोग ''लिट्ल मास्टर'' कहते हैं। इसने २५ टेस्ट मैचों में भारत की कप्तानी की। तेन्दुल्कर की चमत्कारिक सफलता का श्रेय मात्र इसके अध्यवसाय और दृढ़ता को माना जाता है। एक दिवसीय में १०० विकेट तथा १०० कैच लेने का भी कीर्तिमान इसे प्राप्त है। लोकप्रिय कमेण्टेटर हर्ष भोग्ले के अनुसार ''सचिन क्रिकेट के एवरेस्ट पर खड़ा है।''

नोटः सचिन ने ६ नवम्बर को नागपुर में ४० वाँ टेस्ट शतक पूरा किया।

समाचार झलक

चन्द्रमा पर मानव रहित उपग्रह

भारत ने चन्द्रमा पर अपना अन्तरिक्ष यान भेजा है। इसका नाम चन्द्रयान है। संस्कृत में चन्द्रयान का अर्थ है चन्द्रमा पर जानेवाला यान। इस मिशन का उद्देश्य है चन्द्रमा के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करना।

चन्द्रयान, जिसका वजन १३८० कि.ग्रा. है और ११ पे लोड्स लेकर जा रहा है, २२ अक्तूबर को पी. एस.एल. वी-सी ११ द्वारा प्रक्षेपित करने के १८.२ मिनट के बाद स्थानान्तरण परिक्रमा पथ में पहुँच गया। यह अगले २ वर्षों तक चन्द्रमा की खोज करेगा।

यह अन्तरिक्ष यान चन्द्रमा की ४ लाख कि.मी. की पात्रा पर कई चरणों में भेजा गया। यह १२ नवम्बर को अन्तिम विश्राम कक्ष में पहुँच गया जो चन्द्रमा से १०० कि.मी. दूर है।

सबसे कम उम्र का विजेता

प्रति वर्ष सर्वोत्तम अंग्रेजी उपन्यास के लिए मैन बुकर अवार्ड दिया जाता है। इस वर्ष भारत के अरविन्द अडिगा को उसके प्रथम उपन्यास ''द व्हाइट टाइगर'' पर यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है। अडिगा (३४) २००८ के पुरस्कार के लिए अन्तिम सूची में सबसे कम आयु का है। यह ५०,००० पाउण्ड का इनाम विश्व के सर्वाधिक स्पृहणीय साहित्यिक पुरस्कारों में से है जो ब्रिटेन, आयरलैण्ड या राष्ट्रमण्डल के किसी देश के अंग्रेजी उपन्यासकारों के लिए खुला है।

अरविन्द अडिगा का जन्म १९७४ में मद्रास (अब चेन्नई) में हुआ था। उसने स्कूल की शिक्षा भारत और आस्ट्रेलिया में पाई। बाद में, अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन न्यूयार्क की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी तथा ऑक्सफोर्ड के मैगडालेन कॉलेज में किया। उसकी रचनाएँ ब्रिटिश समाचार पत्रों जैसे फाइनेन्शियल टाइम्स तथा द इण्डिपेण्डेण्ट में प्रकाशित हुई हैं। इस पुरस्कार के पूर्व भारतीय विजेता थे वी.एस.नाइपाल, सलमान रश्डी, अरुन्धती रॉय तथा किरन देसाई।

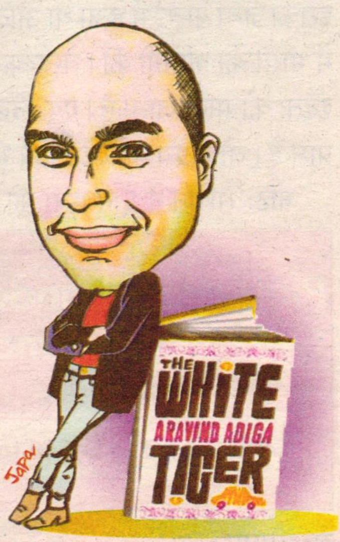

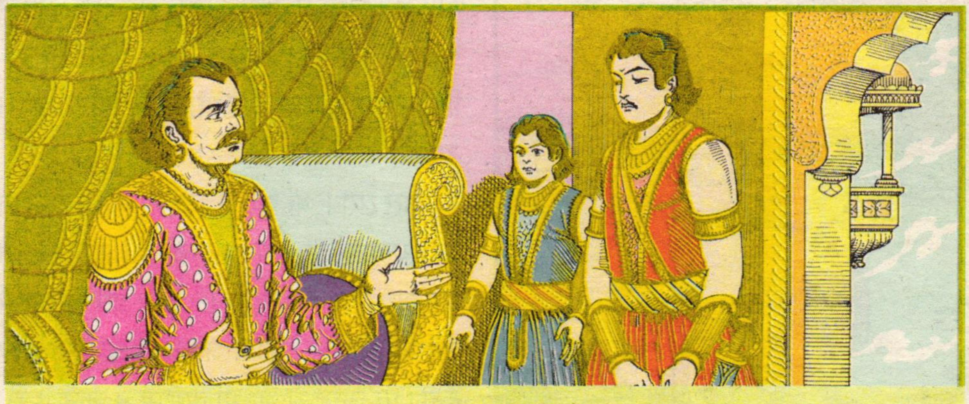

देवधर्म

कई शताब्दियों पहले की बात है, काशी राज्य पर एक धर्मनिष्ठ राजा राज्य करता था। उसके दो पुत्र थे। बड़े का नाम महिंसास और छोटे का नाम चंद्रकुमार था। महिंसास ही बोधिसत्व था। चंद्रकुमार जब छोटा बालक था, तो पटरानी का देहान्त हो गया।

कुछ समय बाद राजा ने एक और युवती से विवाह किया और उसे पटरानी बनाया। नयी रानी भी राजा की अत्यन्त प्रेमपात्री थी। एक वर्ष बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया। राजा ने अपने इस तीसरे पुत्र का नाम सूर्यकुमार रखा। उन्होंने प्रसन्न होकर पटरानी से पूछा, ''अगर तुम्हें अपने पुत्र के लिए कोई वर चाहिए तो माँग लो!''

''आज नहीं महाराज! समय आने पर मैं माँग लूँगी।'' रानी ने जवाब दिया।

कई वर्ष बीत गये। सूर्यकुमार वयस्क हुआ। एक दिन महाराज भोजन करने के बाद विश्राम कर रहे थे तो पटरानी ने राजा को स्मरण दिलाया, ''स्वामी! आपने मेरे पुत्र के जन्म के समय वर माँगने के लिए कहा था। अब आप अपने वचन का पालन करें और मेरे पुत्र को राजगद्दी दें!''

राजा क्षुब्ध हो उठे। ''अग्निशिखाओं के समान प्रकाशित दो ज्येष्ठ पुत्रों के होते हुए तुम्हारे पुत्र का राज्याभिषेक करना संभव नहीं है।'' राजा ने साफ़ जवाब दे दिया।

इस घटना के पश्चात राजा के मन में संशय रहने लगा कि पटरानी उनके ज्येष्ठ पुत्रों का अहित कर सकती है। इसी कारण एक दिन राजा ने महिंसास तथा चंद्रकुमार को बुलाकर कहा, ''मेरे प्रिय पुत्रो! मैंने सूर्यकुमार के जन्म के समय तुम्हारी सौतेली माँ को एक वर देने का वचन दिया था। अब वह सूर्यकुमार के लिए राजगद्दी की माँग करती

जातक कथा

और सूर्यकुमार से बोले, ''सूर्य, तुम जाकर सामने वाले सरोवर में नहाओ, अपनी प्यास बुझाओ और फिर कमल के पत्तों में पानी भरकर हमारे लिए ले आओ!''

उस सरोवर पर एक जलराक्षस यक्ष का क़ब्जा था। यह सरोवर उस यक्ष को देते हुए कुबेर ने समझाया था, ''यक्ष, सुनो! अगर इस सरोवर में उतरनेवाले लोग देवधर्म जानते हों तो उन्हें छोड़ देना। पर उनमें से जो भी देवधर्म न जानता हो, उसका भक्षण कर लेना। साथ ही यह भी स्मरण रखना, कि जो इस सरोवर में न उतरे, उसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचाना।''

तब से अनेक मनुष्य उस जलराक्षस का ग्रास बन चुके थे। जब भी कोई सरोवर में उतरता, यक्ष उससे पूछा, ''देवधर्म क्या है?''...और जवाब न मिलने पर उसे खा लेता। आज जब सूर्यकुमार उस सरोवर में उतरा, तो यक्ष ने उससे पूछा, ''क्या तुम देवधर्म जानते हो?''

''हाँ, हाँ! जानता हूँ। देवधर्म का अर्थ है सूर्य और चंद्र।'' सूर्यकुमार ने उत्तर दिया।

''नहीं! तुम देवधर्म नहीं जानते!'' यह कहकर यक्ष सूर्यकुमार को अपने जलभवन में ले गया।

सूर्यकुमार को इतना विलम्ब होते देखकर महिंसास बोधिसत्व ने चंद्रकुमार को सरोवर के निकट भेजा। यक्ष ने उसे भी पकड़ लिया और पूछा, ''देवधर्म का अर्थ क्या है?''

चंद्रकुमार ने कहा, ''देवधर्म का अर्थ है चार दिशाएँ!''

है। मैं इतना अनुचित कार्य कभी नहीं कर सकता। लेकिन स्त्री-बुद्धि प्रलयांतक होती है। वह तुम दोनों की हानि कर सकती है। इसलिए तुम दोनों इसी समय वन-प्रदेशों में चले जाओ। जब मेरी मृत्यु हो जाये, तब लौटना और इस राज्य पर शासन करना।''

सूर्यकुमार इन सब बातों से पूरी तरह अनजान था। जब उसने देखा कि उसके दोनों बड़े भाई राजभवन छोड़कर कहीं जाने की तैयारी कर रहे हैं तो सूर्यकुमार ने भी उनके साथ जाने की इच्छा प्रकट की। भाइयों की स्वीकृति मिलते ही उसने भी अपनी तैयारी कर ली और उनके साथ चल पड़ा।

तीनों भाई हिमालय के वनभागों में पहुँचे। बोधिसत्व एक घने वृक्ष की छाया में बैठ गये

यक्ष ने कहा, ''तुम भी देवधर्म नहीं जानते!'' और उसे भी अपने जलभवन में ले गया।

चंद्रकुमार को भी देर तक न लौटते देख बोधिसत्व को विश्वास हो गया कि उनके छोटे भाई किसी विपदा में फंस गये हैं। वे उठे और स्वयं सरोवर की ओर चल पड़े। सरोवर के किनारे उन्होंने दो मनुष्यों के पैरों के चिन्ह देखे, जो सरोवर के जल तक चले गये थे, लेकिन जल से बाहर आने के चिन्ह उन्हें दिखाई न दिये। बोधिसत्व ने सोचा, इस सरोवर में निश्चय ही किसी राक्षस का वास होना चाहिए। उन्होंने म्यान से अपनी तलवार खींच ली और लड़ने के लिए सन्नद्ध होकर खड़े हो गये।

बोधिसत्व सरोवर में नहीं उतरे थे। इसलिए उस यक्ष ने एक वनवासी तपस्वी का वेश धारण किया और उनके सामने आकर बोला, ''महानुभाव! आप प्यासे दिखाई देते हैं, फिर भी आपने सरोवर में उतरकर न तो स्नान किया और न पानी ही पिया! आप इस तरह सरोवर के तट पर क्यों खड़े हैं?''

बोधिसत्व को ऐसा लगा कि सामने तपस्वी के छद्म वेश में खड़ा यह पुरुष ही जलराक्षस है। इसलिए उन्होंने स्पष्ट प्रश्न कर लिया, ''क्या तुम्हीं मेरे छोटे भाइयों को पकड़ कर ले गये हो?''

''जी हाँ! मैं ही उन्हें पकड़कर ले गया हूँ!'' यक्ष ने कहा।

''ऐसा क्यों किया?'' बोधिसत्व ने फिर पूछा।

''इस सरोवर में जो लोग क़दम रखते हैं, और देवधर्म नहीं जानते हैं, वे मेरे अधीन हो जाते हैं!'' यक्ष ने जवाब दिया।

''सरोवर में जो भी मनुष्य उतरेगा, उसे क्या तुम्हारी अधीनता स्वीकार करनी होगी?'' बोधिसत्व ने फिर प्रश्न किया।

''जो मनुष्य देवधर्म नहीं जानता, उसे मेरे अधीन रहना पड़ेगा।'' यक्ष ने उत्तर दिया।

''तुम जानना चाहो तो मैं तुम्हें देवधर्म बता सकता हूँ।'' महिंसास बोधिसत्व बोले।

''मैं सुनना चाहता हूँ!'' यक्ष ने कहा।

''निन्दा का भय रखनेवाले, शुभ कर्म करनेवाले, प्रेममय एवं शान्त प्रकृति के उत्तम पुरुष का धर्म ही देवधर्म है।'' बोधिसत्व ने कहा।

बोधिसत्व के उत्तर से यक्ष सन्तुष्ट हुआ। उसने उनका सत्कार किया और पूछा, ''मैं आप पर प्रसन्न

हूँ। आपके दोनों छोटे भाइयों में से मैं एक को लौटा सकता हूँ। आप किसे चाहते हैं!''

''अपने सबसे छोटे भाई सूर्यकुमार को!'' बोधिसत्व ने कहा। इस पर यक्ष बोला, ''हे विज्ञपुरुष, आप देवधर्म जानते तो अवश्य हैं, लेकिन उसे पालन करना नहीं जानते।''

''वह कैसे?'' बोधिसत्व ने प्रश्न किया।

''आप अपने दोनों भाइयों में से बड़े को छोड़कर छोटे की माँग कर रहे हैं और इस तरह बड़े का अनादर कर रहे हैं।'' यक्ष बोला।

''यक्ष! मैं देवधर्म का पालन करता हूँ, इसीलिए मैंने यह माँग की। मुझे अपने छोटे भाई के कारण ही वन में आना पड़ा। मेरी सौतेली माता ने उसके लिए हमारे पिता से राज्य माँगा। पिता ने हमारे अमंगल की आशंका से हमें कुछ दिन के लिए वन में रहने की आज्ञा दी। अब ऐसी स्थिति में अगर मैं अपने इस छोटे भाई के बिना नगर में लौटता हूँ, तो सारा वृत्तान्त सुनने के बाद भी कौन यह विश्वास करेगा कि हम दो भाई सकुशल रहे और सौतेले छोटे को किसी यक्ष ने निगल डाला। इतना ही नहीं, अपने सबसे छोटे सौतेले भाई को माँगने का एक कारण और है। हमारी दोनों माताओं की एक-एक संतान तो जीवित रहेगी। अपने सहोदर भाई को लौटा लूँ तो हमारी सौतेली माता निःसंतान हो जायेगी। यह देवधर्म के विरुद्ध होगा।'' बोधिसत्व ने कहा।

''साधु, साधु! महानुभाव! आप न केवल देवधर्म जानते हैं, बल्कि आपमें उसका व्यावहारिक और तात्विक ज्ञान भी है।'' यक्ष ने बोधिसत्व की प्रशंसा की और दोनों कुमारों को जलभवन से लाकर महिंसास के हाथों में सौंप दिया।

वन-निवास करते तीनों भाइयों का कुछ और समय निकला। एक दिन उन्हें समाचार मिला कि उनके पिता की मृत्यु हो गयी है। युवराज महिंसास अपने दोनों छोटे भाइयों चंद्रकुमार और सूर्यकुमार के साथ काशी लौटे। धूमधाम से उनका राज्याभिषेक हुआ। बोधिसत्व महिंसास ने चंद्रकुमार को युवराज और सूर्यकुमार को सेनापति-पद पर नियुक्त किया। अनेक वर्षों तक वे अपने दोनों भाइयों के साथ शांतिपूर्वक राज्य-संचालन करते रहे।

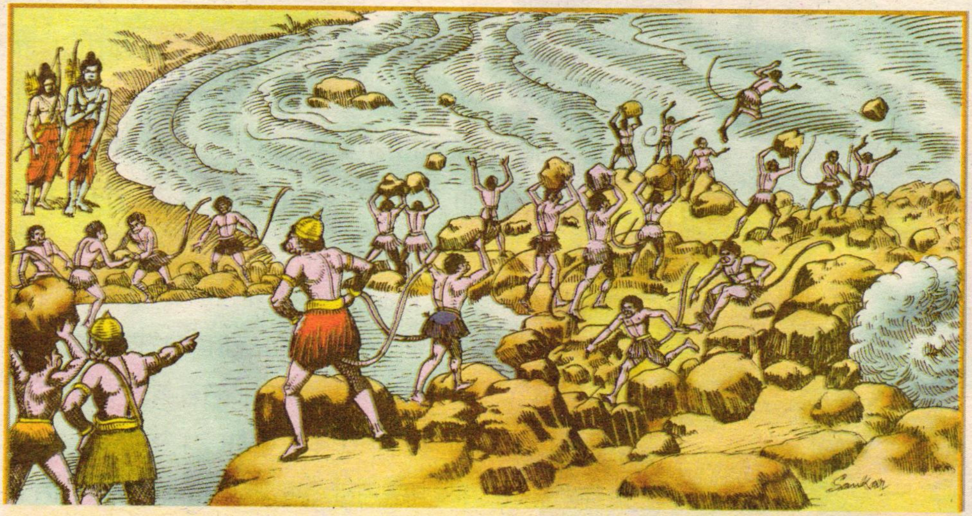

रामायण

हनुमान का वृत्तान्त सुनकर राम ने सन्तुष्ट होकर कहा, ''जो काम हनुमान ने किया है, वह कौन कर सकता है? और तो और, कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। समुद्र को पार करना, सिवाय गरुत्मन्त, वायुदेव और हनुमान के किसी और के लिए सम्भव नहीं है? यही नहीं, हनुमान उस लंका में पहुँचा, जहाँ देवताओं को भी प्रवेश नहीं है। घुसा ही नहीं, वहाँ से जीवित वापस भी आ गया है। वह अशोक वन का नाश, राक्षस संहार, लंका दहन आदि आश्चर्यजनक कार्य भी करके आया है? इस हनुमान ने हमारी और सीता की रक्षा की है। चाहे इसे कुछ भी दूँ, पर मेरा ऋण नहीं चुकेगा। इन सब के बदले, मैं इसको आलिंगन कर लेता हूँ।'' कहते हुए उन्होंने हनुमान को झट गले लगा लिया।

फिर राम ने सुग्रीव से कहा, ''सीता का तो हमने पता लगा लिया है, पर जब मैं समुद्र के बारे में सोचता हूँ, तो मेरा दिल दहल उठता है। उसको पार कैसे किया जाये?'' राम और लक्ष्मण भी इसी सोच में पड़ गये।

तब सुग्रीव ने राम को देखकर कहा, ''क्यों आप चिन्ता करते हैं? यदि हम समुद्र पर पुल बाँधकर, उस पार पहुँच गये, तो रावण को मरा ही समझिये। बिना समुद्र पर पुल बनाये, लंका को जीतना देवताओं के लिए भी असम्भव है। इसलिए चिन्ता छोड़कर, सोचिये कि क्या किया जाये? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आपको विजय मिलेगी।''

यह सुन राम ने कहा, ''तपस्या करके, नहीं

युद्ध काण्ड - १

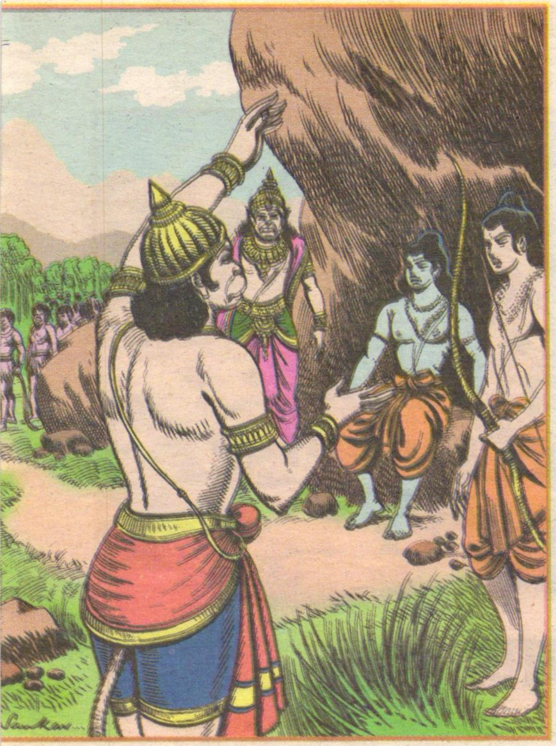

तो पुल बनाकर या समुद्र को सुखाकर, जैसे भी हो, लंका पहुँचकर रहूँगा। इस विषय में अब चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं है।''

फिर उन्होंने हनुमान से पूछा, ''लंका में कितने दुर्ग हैं? कितनी सेना है? पहरा-वहरा कैसा है? प्राकार आदि के बारे में सब सविवरण बताओ।''

हनुमान ने यों कहा, ''लंका में सब सन्तुष्ट हैं, वहाँ कोई असन्तुष्ट नहीं है। नगर विशाल है। वहाँ पर्याप्त चारों सेनायें हैं। उसके चार बड़े द्वार हैं। द्वार के पास शत्रुओं का नाश करने के लिए पत्थर फेंकनेवाले बड़े-बड़े यन्त्र लगे हुए हैं। सैकड़ों आदमियों को मारनेवाली तोपें हैं। नगर के चारों ओर दुर्लंघ्य प्राकार हैं। उसके बाद गहरी खाई है। उसको पार करने के लिए द्वारों के पास लकड़ी के पुल हैं। उनको यन्त्रों की सहायता से लाया जा सकता है और नीचे उतारा जा सकता है। शत्रुओं को आता देख यदि उन पुलों को उठा दिया गया, तो खाई पार करना असम्भव है। रावण बड़ा सावधान है।

''शत्रु के भय के न होने पर भी वह अपनी सेना को हमेशा सन्नद्ध रखता है। लंका चार तरह से सुरक्षित है। एक तो, इसके चारों ओर समुद्र है। यह सबसे बड़ी सुरक्षा है। समुद्र पार करके कोई शत्रु वहाँ तक नहीं पहुँच सकता। सिर्फ देवता, राक्षस, यक्ष, किन्नर मानवेतर सत्ताएँ ही जा सकती हैं। पर वे तो सब रावण से भयभीत हैं। इसलिए वह अजय है। लंका चूँकि ऊँचे त्रिकूट पर्वत पर है, इसलिए लंका पहुँचने से पहले उस पर चढ़ना ज़रूरी है। यह दूसरी बड़ी सुरक्षा है। वहाँ के जंगल तीसरी और खाई चौथी सुरक्षा है। यन्त्र और तोपें वगैरह भी हैं, द्वारों के पास और शहर में भी करोड़ों योद्धा हैं। मैंने खाई के पुलों को नष्ट कर दिया है और खाई को भर दिया है। प्राकार को भी ध्वंस कर दिया है। कई पराक्रमी राक्षसों को मार दिया है। इसलिए अब लंका को वश में लाना उतनी कठिन बात नहीं है। बड़ी सेना की भी कोई ज़रूरत नहीं है। अंगद, द्विविद, मैन्द, जाम्बवन्त, मनस, नले और सेनापति नील काफी हैं। अगर ये चाहें तो सारी लंका को, राक्षसों के साथ उठाकर ला सकते हैं। अंगद आदि को आज्ञा देकर अच्छा मुहूर्त निश्चित करने की कृपा कीजिये।''

राम ने सब सुनकर हनुमान से कहा, ''अच्छा, तो उस लंका को खत्म करेंगे।'' फिर उन्होंने सुग्रीव से कहा, ''आप इस समय ही सेना लेकर चलें। ठीक दुपहर का समय है। यह अच्छा मुहूर्त है। अवश्य कार्यसिद्धि होगी। यही नहीं, आज उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र है। क्योंकि मेरा जन्म नक्षत्र पुनर्वसु है इसलिए यह मेरे अनुकूल है। और भी कई शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं। इसलिए तुरंत निकल पड़ना ही मुझे उचित प्रतीत होता है।''

राम ने वानर सेनानायक नील को बताया कि वानर सेना में किसको आगे रहना है। पार्श्व में कौन कौन हो, कौन वानर योद्धा कौन काम करे। मार्ग में शत्रुओं से कैसे सावधान रहा जाये, आदि। उदाहरण के लिए वानरों के मार्ग के फल फूल, जो उनका आहार है, राक्षस नष्ट कर सकते हैं। घाटियों में नदियों को पार करने की जगह पर राक्षस उनको घेरकर मार सकते हैं। ऐसी कोई आपत्ति न आये, यह देखना आगे जानेवाली सेना का कर्तव्य है। इस प्रकार राम ने नील को समझाया कि मार्ग में किन-किन सावधानियों का पालन आवश्यक है और उसी दृष्टिकोण से अगली पंक्ति की सेना में किन यथायोग्य वानरों को रखना समुचित है।

सुग्रीव के कूच की आज्ञा देते ही, युद्धोत्सुक वानर गुफ़ाओं में से, पहाड़ों पर से, पेड़ों पर से कूदते आये। देखते-देखते असंख्य वानरों की एक विशाल सेना तैयार हो गई। वानर सेना दक्षिण की ओर निकल पड़ी।

हनुमान ने राम को और अंगद ने लक्ष्मण को

अपने कन्धों पर सवार कर लिया। असंख्य वानर उनके चारों ओर उछलते कूदते, होहल्ला करते दौड़ते भागते, ''रावण को मारना है, राक्षसों को मारना है,'' चिल्लाते चल रहे थे। महापराक्रमी वानरोत्तम ऋषभ, नील, कुमुद आदि बड़ी सेना के साथ आगे रास्ता बनाते जा रहे थे।

रास्ते में लक्ष्मण ने राम को उत्साहित करते हुए कहा, ''अब जल्दी ही रावण मरेगा। सीता को मुक्ति मिलेगी। आप दोनों शीघ्र ही वापिस अयोध्या जायेंगे। वातावरण उत्साहजनक है। नक्षत्र अनुकूल हैं। राक्षसों का मूला नक्षत्र धूमकेतु को छू रहा है। यह उनके सर्वनाश का सूचक है। उनके बुरे दिन समीप हैं।''

रास्तों में वानर पेड़ों पर से, पेड़ों के बीच चलते, उछलते-कूदते, चीखते चिल्लाते, टहनियाँ

तोड़ते, फल खाते, शहद पीते, कहीं बिना रुके, सह्य पर्वत, मलय पर्वत पार करके समुद्र तट पर पहुँचे।

राम, लक्ष्मण, सुग्रीव के साथ महेन्द्रगिरि की चोटी पर गये और वहाँ से समुद्र को देखा। फिर पर्वत से उतरकर समुद्र को पास से देखा। उन्होंने सुग्रीव से कहा, ''अब हमारे सामने समुद्र ही है। भूमि नहीं है। हमने कहा था कि इसको पार करने का कोई उपाय सोचना होगा। अब वह सोचने का समय आ गया है। अभी सेना को यहीं छोड़ा जाये, कोई भी अपनी सेना को छोड़कर दूर न जाये। शत्रुओं से रक्षा के लिए शूर वानरों का पहरा लगा दिया जाये।''

सुग्रीव की आज्ञा पर वानर सेना तीन भागों में बाँट दी गई। उस समय वानरों ने जो शोर किया, उसके सामने समुद्र गर्जन भी न सुनाई पड़ता था। वानर समुद्र को देखकर चकित थे। वे न जान पा रहे थे कि समुद्र को कैसे पार किया जाये।

वानर सेनापति नील ने सेना की व्यवस्था शास्त्रोत्तम रीति से की। वानरोत्तम, मैन्द, द्विविद को सेना की रक्षा के लिए दोनों तरफ़ नियुक्त किया।

सेना की व्यवस्था हो जाने के बाद राम, सीता के वियोग में काफ़ी देर दुखी रहे। जैसे-जैसे लंका जाने की घड़ी निकट आने लगी, उनका हृदय भी सीता के लिए उतनी ही तेजी से धड़कने लगा। जब वे सुग्रीव और हनुमान से विचार-विमर्श करते तभी सीता के बारे में कुछ देर भूले रहते।

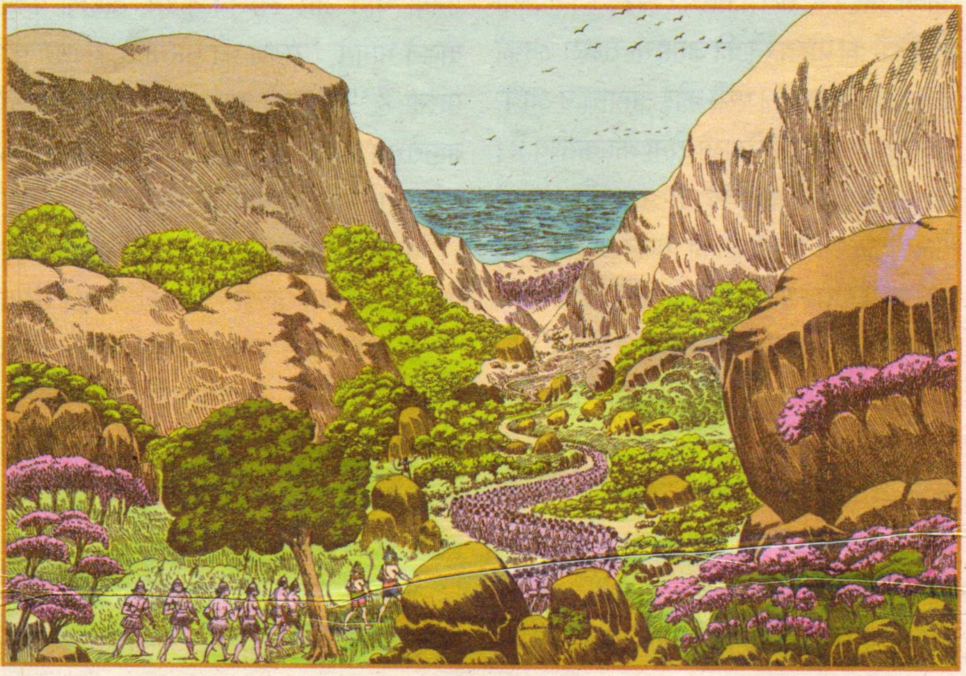

अन्यथा जैसे ही वे खाली रहते, सीता के बारे में ही सोचने लगते। सीता को इस बात का दुःख है कि मैं अब तक उसे लाने क्यों न गया। पर उसे क्या मालूम कि मैं उसके बिना कितना दुखी हूँ। फिर सोचने लगते कि सीता एक महीना ही बचेगी। हनुमान ने तो यही कहा है। क्या एक महीने के अन्दर समुद्र पार कर पायेंगे? उन्होंने लक्ष्मण को अपना दुख सुनाया। इतने में सूर्यास्त हो गया। लक्ष्मण के आश्वासन देने पर, खिन्न मन से राम ने सन्ध्या की।

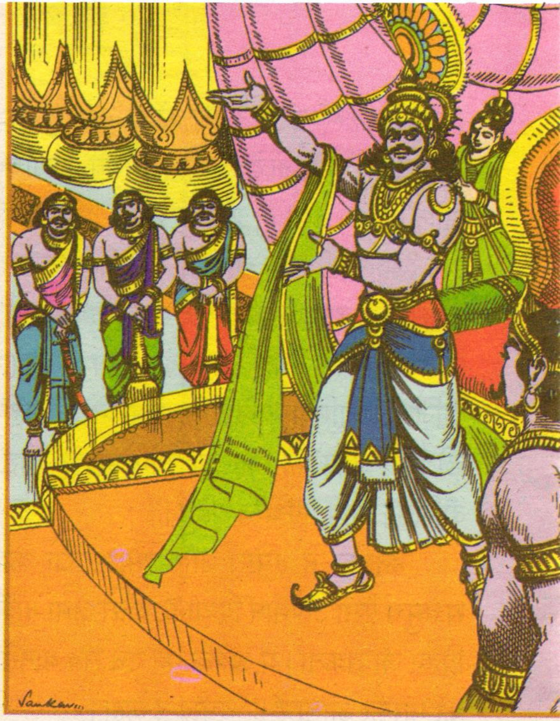

इस बीच रावण अपमानित हो अपने राक्षस प्रमुखों से कह रहा था, ''शत्रुओं के लिए अभेद्य लंका में एक बन्दर आया, बड़े-बड़े राक्षसों को मारकर, लंका को जलाकर, उसने कुहराम मचा दिया। सीता से बात करके चला गया। अब राम हज़ारों वानरों को लेकर हम पर आक्रमण करने आ रहा है। इसमें सन्देह करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि वह अपने भाई और सुग्रीव आदि के साथ वानर सेना को लेकर, समुद्र पार करके आ सकता है। वह अपनी शक्ति से समुद्र को सुखा सकता है, नहीं तो कुछ और कर सकता है। जब वह वानर सेना के साथ हम पर हमला करेगा, तो लंका की किस तरह हम रक्षा करेंगे? सब अच्छी तरह सोच विचारकर एक निश्चय बताओ।''

यह सुनकर राक्षसों ने कहा, ''राक्षसेश्वर ! आपको इस बात पर चिन्ता ही क्यों हुई? हमारे पास असंख्य सेना है। हमारे पास अनन्त शतघ्नी, शूल, करवाल कितने ही आयुध हैं। आप हैं, जो तीनों लोकों के विजेता हैं। कुबेर और यक्ष को जीतकर पुष्पक लाये हैं। मय ने भयभीत होकर अपनी पुत्री का (मन्दोदरी) आपके साथ विवाह किया है। वासुकी, तक्षक आदि नागराज आपके आधीन हैं। अपार शक्तिवाले, मायावी कालकेय आप से एक वर्ष युद्ध करके आखिर पराजित हुए थे। वरुण और यम को आपने हराया है। उनकी तुलना में राम क्या चीज़ है? उन सब को जीतने के बाद राम की क्या हस्ती है? आप अपनी बात छोड़िये। महेश्वर यज्ञ करके, वर प्राप्त करके देवेन्द्र से लड़कर उसको बाँधकर लंका लानेवाले इन्द्रजित, क्या इसके लिए काफी नहीं हैं? वे क्षण भर में राम और उसकी सेना को नष्ट कर सकते हैं। हनुमान द्वारा की हुई हानि के बारे में न सोचिये। उसे भूल जाइये।''

तुरंत प्रहस्त उठा। रावण को नमस्कार करके उसने कहा, ''हम जो देव, मानव, गन्धर्व, पिशाच आदि से नहीं डरते हैं, क्या बन्दरों से डरेंगे? हम इसी ख्याल में रहे कि हमें कोई जीत नहीं सकता है इसीलिए हनुमान हल्ला कर गया, नहीं तो मेरे जीते क्या वह लंका आ सकता था? आज्ञा दीजिये, मैं भूमि पर बन्दरों का नामों निशान नहीं छोड़ूँगा। लंका की रक्षा का काम मुझपर छोड़ दीजिये। आप निश्चिन्त रहिये।''

''हनुमान ने हमारा और हमारे राजा का सचमुच ऐसा अपमान किया है, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता। मैं अकेला ही उन सब वानरों को मारकर आता हूँ।'' दुर्मुख ने कहा।

वज्रदंष्ट्र ने गुस्सा उगलते लोहे की गदा हाथ में लेकर कहा, ''आधी रात के समय, चोर की तरह आये हुए हनुमान की क्या बात है? मैं जाकर उस शूर राम को लक्ष्मण और सुग्रीव के साथ मार दूँगा। राजा, एक बात बताता हूँ। इस शत्रु को एक और उपाय से जीता जा सकता है। कामरूप राक्षस मनुष्य का रूप धारण करके राम के पास जायें और कहें, ''हमें भरत ने भेजा है। वह बड़ी सेना के साथ आ रहे हैं।'' राम जब उनके आने की प्रतीक्षा में हो, तब हम अचानक उनपर हमला करें और उनको नष्ट कर दें! राम लक्ष्मण यह सर्वनाश देखकर स्वयं मर जायेंगे।''

इस प्रकार कुम्भकर्ण के लड़के निकुम्भ ने भी कहा कि वह अकेला ही जाकर वानर सेना और राम लक्ष्मण को मार आयेगा।

वज्रदन्त ने कहा कि वह सब वानरों को खा आयेगा और भी कई राक्षस वीरों ने खड़े होकर कहा कि वे वानरों को मार आयेंगे।

यद्यपि सब राक्षसवीर अपनी-अपनी वीरता का बखान कर रहे थे, फिर भी जिस प्रकार शत्रु का एक वानर लंका में आकर, रावण के समक्ष उपस्थित होकर भी, न केवल सकुशल वापस चला गया, बल्कि इतने वीर राक्षसों के होते हुए लंका को जला कर, भवनों को भंग कर गया, उससे सभी राक्षस भयभीत थे। स्वयं रावण डरा हुआ था। इसीलिए सब राक्षसों से रक्षा के उपायों पर विचार विमर्श कर रहा था। फिर भी, उनके आश्वासनों का उस पर तनिक भी प्रभाव न पड़ा।

(और भी है)

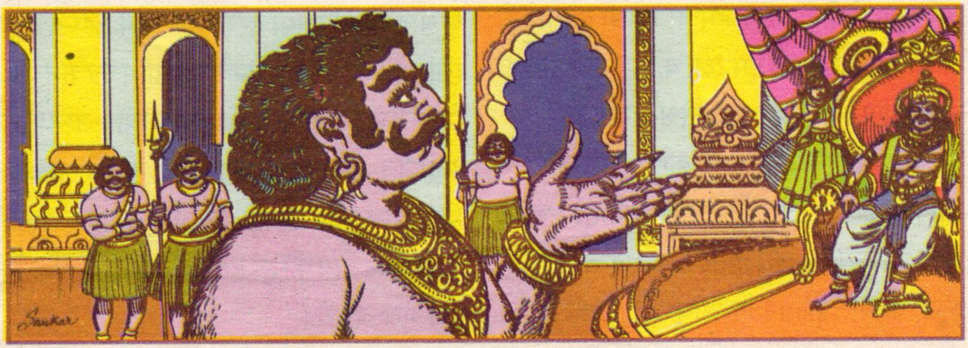

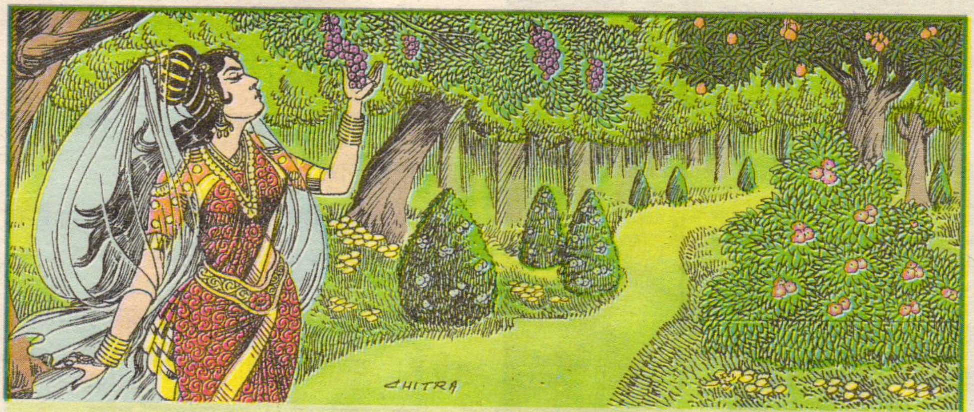

अग्नि-परीक्षा

पुरंदर राज्य की राजकुमारी लावण्या सौंदर्य में स्वर्ग की देवियों के समान थी। उचित वर के प्राप्त होने पर राजा लावण्या का विवाह करना चाहता था। उस जमाने में पुरंदर देश एक कोने में था। उसके चारों तरफ़ भयंकर जंगल फैले हुए थे। उस देश से यदि किसी दूसरे देश में जाना होता तो अनेक दिनों तक जंगलों तथा पहाड़ों से होकर यात्रा करनी पड़ती थी। लावण्या के लिए योग्य वर के न मिलने का यही एक प्रमुख कारण था।

लावण्या भी विवाह करने की इच्छा रखती थी। उसे अपने दैनिक जीवन में किसी प्रकार का आनंद प्राप्त नहीं होता था। राजमहल में उसकी दासियाँ भी उसके मनोरंजनार्थ वे ही कहानियाँ बार-बार सुनाती थीं, जिन्हें वे पहले सुना चुकी होती थीं। वे ही खेल प्रदर्शित करती थीं, जो इसके पूर्व खेल चुकी होती थीं। इस कारण राजकुमारी के लिए अपना समय काटना बड़ा मुश्किल मालूम होता था।

एक दिन राजकुमारी राजमहल में किसी से कहे बिना राजधानी की उत्तरी दिशा में स्थित जंगलों में अकेली चली गयी। वह किन्हीं विचारों में खोयी चलती गयी और एक अद्भुत उद्यान में जा पहुँची। उसे चतुर्दिक अत्यंत सुंदर झाड़ और उनमें अपूर्व पुष्प दिखाई दिये। ऐसे फूल या पौधे लावण्या ने कभी देखे न थे। वह उद्यान मानव निर्मित प्रतीत नहीं होता था और न वह प्रकृति सिद्ध उद्यान ही लगता था। वहाँ पर किसी के संचार करने के लक्षण भी नज़र नहीं आये। उसे जानवर और पक्षी भी दिखाई नहीं दिये। वह एकदम विस्मय में आ गयी।

लावण्या प्रत्येक पौधे के पास जाकर उसके फूलों के सौंदर्य और उनकी खुशबू देख प्रसन्न

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

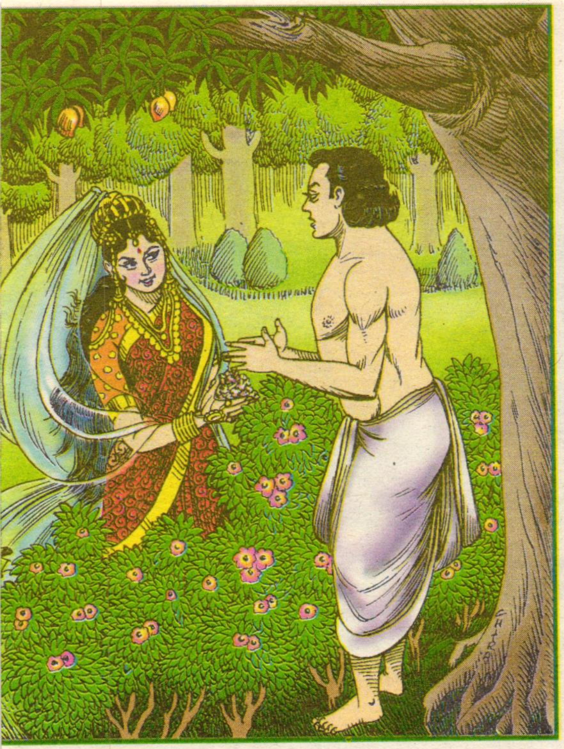

कोई नहीं रहता। मैं ही अकेले इस उद्यान का पहरा देते यहीं पर रहता हूँ।'' ये शब्द कहते हुए उसने उसी पौधे से थोड़े और फूल तोड़ कर लावण्या के हाथ में रख दिये।

''आपने अभी कहा था कि फूल तोड़ना मना है?'' लावण्या ने पूछा ।

''तुम जैसी सुंदरी के लिए यह नियम आवश्यक नहीं है।'' युवक ने जवाब दिया।

''आप कौन हैं?'' लावण्या ने पूछा।

''मेरा नाम सुव्रत है। मैं इस गंधर्व वन का रक्षक हूँ।'' सुव्रत ने उत्तर दिया।

सब की भांति लावण्या को गंधर्वों से डर था। साधारण मानवों के लिए उनकी मैत्री लाभदायक नहीं होती। गंधर्व तो अनेक विद्याओं में पारंगत होते हैं। पर लावण्या यह नहीं जानती थी कि गंधर्व उसके देश के निकट में ही हैं।

लावण्या को घबराये हुए देख सुव्रत ने कहा, ''राजकुमारी, डरो मत। मैं फिलहाल गंधर्वों का सेवक हूँ, मगर मैं जन्मतः तुम जैसे मानव जाति का हूँ। मेरे नाना पूर्वी दिशा में स्थित जय सिंधु देश के राजा हैं। मेरे बचपन में ही मेरे माता-पिता का स्वर्गवास हो गया है। तब मेरे मातामह ने अपने घर लाकर मुझे पाला-पोसा। बड़े होने पर मैं अपने नाना के साथ इस प्रदेश में शिकार खेलने आया। तब मुझे एक गंधर्व रानी पकड़कर अपने साथ ले गयी। उसका विश्वास था कि मैं उसके साथ प्रेम करके उसका पति बनकर रह जाऊँगा। लेकिन मैं उसके साथ प्रेम नहीं कर सकता।

होने लगी। एक पौधे पर उसे सबसे सुंदर फूल दिखाई दिये। उनकी सुगंध वर्णन के बाहर थी। वह कुतूहलवश एक फूल तोड़ कर वेणी में गूंथने को हुई।

''फूल तोड़नेवाली कौन है वह?'' ये शब्द कहते एक युवक पौधे की आड़ में से लावण्या के सामने आया। उसे देखते ही उस युवक के मन में एक विचित्र परिवर्तन आया। वह कुछ कहने को हुआ। पर चुपचाप वह उस युवती की ओर देखता ही रह गया।

''मैं नहीं जानती थी कि फूल तोड़ना मना है। पूछने के लिए भी यहाँ पर कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने सोचा कि यहाँ पर कोई नहीं है।'' लावण्या ने जवाब दिया।

युवक ने मुस्करा कर कहा, ''हाँ, हाँ, यहाँ पर

इसलिए उसने मुझे दिन के वक़्त इस उद्यान का पहरा देने का काम सौंप दिया। रात होते ही वह मुझे अपने लोक में ले जाती है। मुझे इन गंधर्वों और उनके लोक से भी दिन प्रति दिन घृणा बढ़ती जा रही है। मैं इस आशा में हूँ कि इनके मायाजाल से कोई न कोई मुझे बचा लेगा। मगर मेरी आशा कभी सफल नहीं हो सकती। उसके सफल होने का उपाय दिखाई देता प्रतीत नहीं होता।'' यों कहते युवक ने गहरी साँस ली। लावण्या उस युवक की ओर एकटक देखती रही। उसकी हालत पर सहानुभूति दिखाते हुए लावण्या ने पूछा, ''वह उपाय कैसा?''

सुव्रत ने लावण्या की ओर शंका भरी दृष्टि से देखते हुए यों कहाः

''हर पूर्णिमा की रात को गंधर्वरानी अपने परिवार के साथ आकर इस उद्यान में विहार करती है। मैं उस वक़्त उसके साथ ही रहता हूँ। उस समय कोई मानवजन्मधारी को मेरे साथ आलिंगन करके मुझे छोड़े बिना पकड़े रहना होगा। तब गंधर्वरानी अपनी मायाओं का प्रयोग करके उस व्यक्ति की भयंकर परीक्षाएँ लेगी। तब भी उसे उन परीक्षाओं का सामना करते हुए मुझे पकड़े रहना होगा। तभी मैं गंधर्व के जाल से मुक्त हो सकता हूँ। मेरे वास्ते इतने कष्ट उठानेवाले को मेरे प्रति कितना प्रेम होना चाहिये! मुझे संदेह होता है कि मुझे जाननेवाला ऐसा कोई मानवों की दुनिया में है कि नहीं? ऐसी हालत में मेरा यह सोचना केवल भ्रम ही होगा कि मेरी रक्षा करनेवाला भी कोई है।''

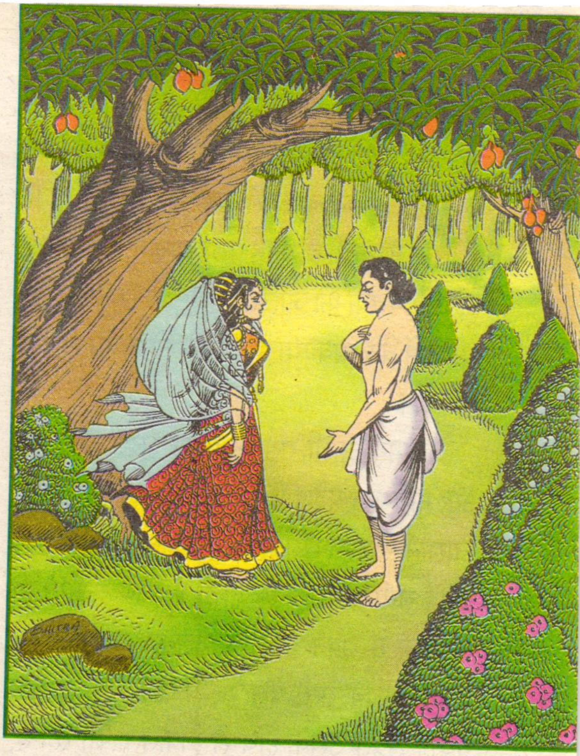

ये शब्द कहते हुए सुव्रत ने गहरी साँस ली और कहा, ''सूरज डूबने को है। न मालूम तुम्हें कितनी दूर जाना होगा। अंधेरा फैलने के बाद तुम्हारा यहाँ रहना खतरनाक है।''

''तुम शीघ्र ही गंधर्वों से मुक्त हो जाओगे। अच्छा, मैं चली।'' यों कहकर लावण्या अपने नगर को लौट गयी।

पूर्णिमा के आने में अभी चार दिन बाक़ी थे। ये चारों दिन लावण्या केवल सुव्रत के बारे में ही सोचती रही। उसकी रक्षा करने तथा आवश्यकता पड़ने पर इस प्रयत्न में अपने प्राण तक देने का लावण्या ने निश्चय कर लिया।

पूर्णिमा की शाम को लावण्या अकेली गंधर्व वन में आ पहुँची। वह काले वस्त्र धारण कर चुकी थी, ताकि वह किसी को दिखाई न दे। अंधेरा

फैलने के पहले ही वह पौधों के बीच छिप कर बैठ गयी और अपने बालों से चेहरे को ढक लिया।

रात के गहरी हो जाने पर उद्यान में कोई आहट हुई और गंधर्वों की जोड़ियाँ उद्यान में टहलने लगीं। झाड़ी में बैठे लावण्या हर जोड़ी को ध्यान से देख रही थी।

लगभग आधी रात के समय सुब्रत तथा एक और नारी उस प्रदेश में आ पहुँचे। लावण्या ने बड़ी आसानी से समझ लिया कि सुब्रत के साथ रहनेवाली गंधर्व रानी होगी। उस जोड़ी के निकट आते ही लावण्या ने सुब्रत के साथ कसकर आलिंगन कर लिया। गंधर्व रानी पल भर के लिए चकित रह गयी। सुब्रत उसके हाथ से निकलता जा रहा है, यह सोचकर उसने मायाओं का प्रयोग किया।

लावण्या के आलिंगन में रहनेवाला सुब्रत तुरंत एक अजगर के रूप में बदल गया। लेकिन लावण्या ने अपने आलिंगन को ढीला नहीं किया। इतने में अजगर एक सिंह के रूप में बदल गया। सिंह को देख लावण्या कांप उठी, फिर भी उसने सिंह के साथ आलिंगन किया।

इतने में सिंह एक तपते हुए कुदाल के रूप में परिवर्तित हो गया। लावण्या का शरीर जल उठा। उसे असहनीय पीड़ा हुई। फिर भी लावण्या ने दांत मींचकर कुदाल को जकड़ लिया, पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की।

इसके बाद क्या हुआ, वह नहीं जानती। जब वह होश में आयी, तब कोई गंधर्व वन में न था। उसके आलिंगन में सुब्रत जकड़ा हुआ था। उसी के साथ सुब्रत भी होश में आया।

''तुम ने गंधर्व रानी से मेरी रक्षा की। मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुका सकता हूँ? चलो, हम तुम्हारे नगर में चले चलेंगे। तुम को घर पहुँचाने के बाद ही मैं अपने बारे में कुछ सोच सकता हूँ।'' सुब्रत ने लावण्या से कहा।

लावण्या ने राजमहल में पहुँच कर सारी बातें पिता से कह सुनायीं। इस पर राजा ने सुब्रत से कहा, ''तुम्हारे वास्ते मेरी पुत्री ने अग्नि परीक्षा दी है। इसलिए तुम से बढ़ कर इसका पति और कौन हो सकता है?'' यों कहकर राजा ने उन दोनों का विवाह कर दिया।

सच्चा राजा

वैशाली राज्य का राजा महेंद्रपाल महावीर एक आदर्श शासक था। उसके राज्य में कोई अभाव नहीं था। प्रजा सुख और शान्ति के साथ जीवन बिता रही थी। सर्वत्र अमन-चैन था। कहीं चोरी, डकैती, हत्या जैसा अपराध नहीं था। इसलिए राज्य का उत्तरोत्तर विकास हो रहा था। प्रजा के कल्याण और प्रगति के लिए हमेशा कार्यक्रम होते रहते थे। उसके शासन काल में राज्य की सर्वतोमुखी वृद्धि हुई। उस राज्य को आदर्श मानकर कई राजाओं ने अपने-अपने राज्यों में कल्याणकारी कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया।

महेंद्रपाल जब वृद्धावस्था में पहुँच गया तब उसने इकलौते वारिस सुवर्णपाल को राजा बनाने का निर्णय किया।

चंद्रगिरि राजा की सुगुणवती, सौंदर्यराशि पुत्री लावण्यलता से उसका विवाह कराया। इसके बाद एक शुभ मुहूर्त पर वेद मंत्रों के पठन के साथ सुवर्णपाल सिंहासन पर आसीन हुआ।

उस रात को महेंद्रपाल ने अपने कक्ष में अपने पुत्र को बुलवाया और उससे कहा, "सौ सालों पहले हमारे राज्य में घोर अकाल पड़ा। बारिश न होने के कारण प्रजा को नाना प्रकार की तकलीफों का सामना करना पड़ा। तब के राजा मेरे पितामह विक्रमसिंह ने कितने ही यज्ञ व याग करवाये, फिर भी वर्षा नहीं हुई। उस समय हिमालय से पधारे एक योगी ने उन्हें एक अंगूठी दी और उन्हें आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि जब तक यह अंगूठी आपकी उँगली में होगी तब तक आपके राज्य को कोई हानि नहीं पहुँचेगी, आपकी जनता सुखी रहेगी। उसी दिन ज़ोर की बारिश हुई। क्रमशः राज्य का सर्वतोमुखी विकास होने लगा। उन्होंने वह अंगूठी मेरे पिताश्री विक्रमपाल को

रमेश

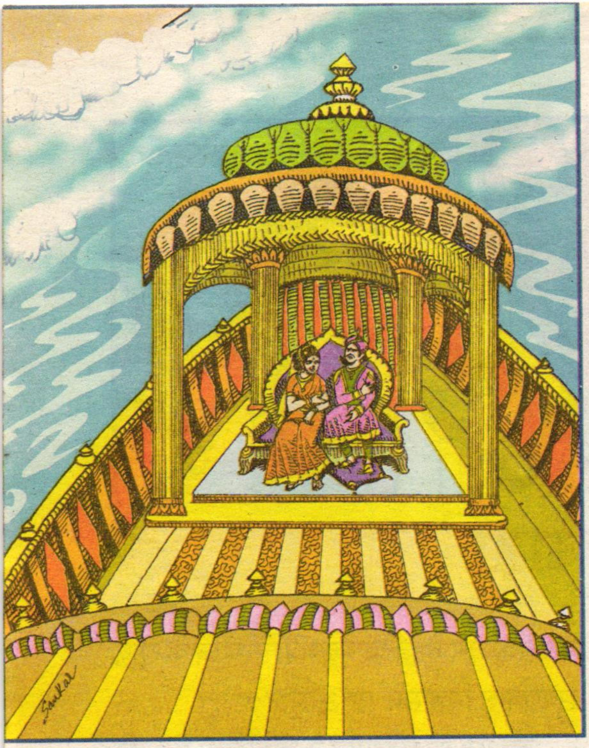

प्रदान की। उन्होंने वह अंगूठी मुझे दी। अब उसे तुम्हें दे रहा हूँ। याद रखना, यह अंगूठी महिमान्वित है। किसी भी स्थिति में इस अंगूठी को अपनी उँगली से निकालना मत। बाद में इसे अपने पुत्र को देना। इससे प्रजा की सारी इच्छाएँ पूरी होंगी। यह मत भूलना कि प्रजा का क्षेम राजा के लिए प्राण के समान है।'' यों कहकर उन्होंने उस अंगूठी को सुवर्णपाल की उँगली में पहनायी।

''आपकी आज्ञा का पालन करूँगा पिताश्री,'' कहते हुए वह वहाँ से चला गया।

इसके एक साल के बाद महेंद्रपाल का निधन हुआ। सुवर्णपाल अपने पिताश्री के कहे अनुसार राज्य का पालन सुचारू रूप से करने लगा। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। पिता के राज्यकाल में जैसी समृद्धि और सम्पन्नता थी, वैसी ही बनी हुई थी। राज्य में कोई समस्या नहीं थी। प्रजा पहले के समान ही सन्तुष्ट थी।

एक दिन महारानी लावण्यलता ने अपने पति से कहा, ''लंबे अर्से से समुद्र विहार करने की मेरी इच्छा है। क्या आप मेरी इस इच्छा को पूरी कर सकेंगे? लेकिन जब तक आप मेरे साथ नहीं होंगे, मैं भी नहीं जाऊँगी।''

लावण्यलता उस समय गर्भवती थी, इसलिए राजा ने उसकी इच्छा को पूरा करना अपना धर्म समझा। उसके समुद्र विहार के लिए आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध किया। इसके लिए एक बिहार नौका भी बनवायी।

नौका में बैठकर जब वे विहार कर रहे थे, तब लावण्यलता ने राजा की उँगली में चमकती हुई अंगूठी को देखते हुए कहा, ''महाराज, आपकी अंगूठी को एक बार पहनने की मेरी इच्छा हो रही है।''

महारानी की इस इच्छा को सुनते ही उसे अपने पिता की चेतावनी याद आयी, जिन्होंने कहा था कि किसी भी स्थिति में यह अंगूठी अपनी उँगली से मत निकालना। राजा दुविधा में पड़ गया। एक ओर पत्नी की प्रसन्नता है, और दूसरी ओर प्रजा का सुख चैन। 'क्या मैं पत्नी की इच्छा पूर्ति के लिए राज्य को संकट में डाल दूँ?' वह सोचने लगा। फिर भी उसने अंगूठी निकाली, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि इनकार करके रानी के मन को दुख पहुँचाऊँ।

वह अंगूठी लेकर अपनी उँगली में पहनने ही

वाली थी कि उत्तुंग तरंगें नौका से टकरा गयीं और वह अंगूठी देखते-देखते समुद्र में जा गिरी। इस घटना पर राजा निश्चेष्ट रह गया। उसने तुरंत अपने को संभाल लिया और आज्ञा दी कि तैरने में दक्ष तैराकों को बुलवाया जाये। तैराकों ने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन वह अंगूठी कहीं नहीं मिली।

महारानी को इसपर बहुत दुख हुआ और उसने राजा से क्षमा माँगी।

चिंताग्रस्त राजा राजभवन पहुँचा। इसके बाद भी महाराज़ ने मछुआरों द्वारा अंगूठी को ढूँढ़ने का काम बरक़रार रखा। किन्तु कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

पिता की चेतावनी के अनुसार अंगूठी खोने का फल दिखाई देने लगा। वर्षा ऋतु आ गयी पर वर्षा की एक बूंद का भी नाम नहीं। क्रमशः खेत सूख गये। अकाल पड़ा। राजा मन ही मन सोचने लगा कि इन सबका कारण अंगूठी का खोना है। पिताश्री की आज्ञा का पालन न कर सके, उसी का यह दुष्फल है। यों सोचकर उसने देवताओं से प्रार्थना की, यज्ञ, याग किये फिर भी वर्षा नहीं हुई।

इन परिस्थितियों में पड़ोसी राज्य से सुदर्शन नामक एक महापंडित आये और राजा से कहा, ''महाराज, मैं सागरदर्शिनी नामक विद्या को भली-भांति जानता हूँ, उसकी सहायता से सागर गर्भ में छिपी हर चीज़ को, महिमान्वित अंगूठी को जो आपने खोया, उसे ढूँढ़ने का प्रयत्न कर सकता हूँ। अगर वह मिल जाए तो आपके राज्य का कल्याण होगा, प्रजा कष्टों से बाहर निकलेगी।''

यह सुनते ही राजा को लगा, मानों भगवान ने इस पंडित को मुझे और मेरी प्रजा को उबारने के लिए भेजा। उन्होंने पंडित से कहा कि समुद्र भ्रमण के लिए अभी आवश्यक प्रबंध करता हूँ।

दूसरे ही दिन सुवर्णपाल, सुदर्शन को लेकर नौका में बैठकर समुद्र में यात्रा करने लगे। सुदर्शन मंत्र पढ़ते जा रहे थे और चौखटे में बंधी दूरबीत के ज़रिये समुद्र के जल की गहराई को देखने लगे। समुद्र के अंदर जो जीव, खनिज, संपदाएँ, बहुत पहले डूबी नावें, जहाज आदि स्पष्ट दीखने लगे।

कुछ घण्टों के बाद सुदर्शन का प्रयास सफल हुआ। उन्हें वह अंगूठी दिखायी पड़ी।

राजा की आज्ञा के अनुसार दक्ष तैराक समुद्र में कूद पड़े। पर उन्हें उस अंगूठी का पता न चला। खाली हाथों लौटे उन्हें देखकर राजा निराश हुआ।

तब सुदर्शन ने कहा, ''महाराज, वह अंगूठी महिमान्वित है न? वह योग्यों के ही हाथ आयेगी।''

''तो यह कार्य क़ौन साधेंगे'', राजा ने पूछा। ''यह आप ही से संभव होगा'', सुदर्शन ने कहा। ''क्योंकि आप ही उस महिमान्वित अंगूठी के योग्य हैं। महारानी के हाथ से भी अंगूठी इसलिए गिर गई क्योंकि वे भी इसके योग्य अधिकारी नहीं हैं। आप ही को प्रजा के हित में यह कार्य साधना होगा।'' ''महाराज को तैरना नहीं आता। वे समुद्र में कूदें? असंभव!'' राज्य के अंगरक्षकों ने स्पष्ट कह दिया।

''इन सब कष्टों का कारक मैं हूँ। मेरी वजह से प्रजा को कष्ट पहुँचना नहीं चाहिए। उनकी पीड़ा को देखने के बदले, प्राण छोड़ना ही बेहतर है। कोई बात नहीं, मैं उनके लिए प्राण निछावर करके के लिए भी तैयार हूँ।'' कहते हुए वह समुद्र में कूद पड़ा।

इन्हें एक जगह पर चमकती हुई अंगूठी दिखायी पड़ी। उसे लेकर वह ऊपर आया। नौका के पास आये राजा ने सुदर्शन के प्रति कृतज्ञता जतायी; मन ही मन पिताश्री से क्षमा माँगी और अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए वह अंगूठी अपनी उंगली में पहन ली।

उनके तट पर पहुँचते-पहुँचते आकाश मेघावृत हो गया और भारी वर्षा होने लगी। एक ही हफ्ते में झरने, तालाब, नदियाँ पानी से भर गये। थोड़े ही दिनों में राज्य-सस्यश्यामल हो गया। प्रजा बेहद खुश हुई।

राजा ने सुदर्शन पंडित को भरे दरबार में आदर-सत्कार किया। तब सुदर्शन ने कहा, ''महाराज, इसमें मेरा कोई बड़प्पन नहीं है। प्रजा के प्रेम के लिए जो राजा अपने प्राण भी त्यागने के लिए तैयार हो, वह राजा देव समान है। वही सच्चा राजा है, असली राजा है। ऐसे राजा की सहायता करने पंचभूत एक होकर आते हैं, राज्य को हरा-भरा कर देते हैं। वैशाली की वह प्रजा भाग्यवान है, जिन्हें ऐसे राजाओं की परंपरा लभ्य हुई है।''

दरबार में उपस्थित सब ने हर्षध्वनियाँ कीं।

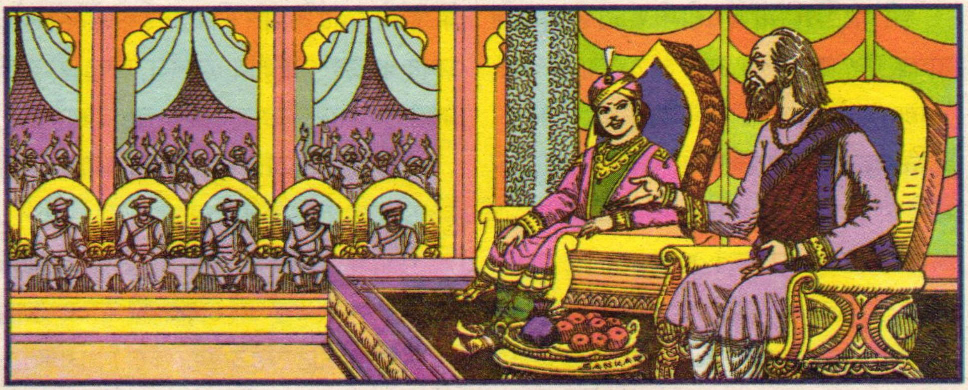

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१२

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने की प्रश्नोत्तरी से आप की यह परीक्षा हो जायेगी कि आप २००८ की हमारी उपलब्धियों की कुछ घटनाओं से कितने परिचित हैं।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को लिखो; २. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१२** लिखो ; ४. तुम्हारे उत्तर ३१ जनवरी तक हमें मिल जाना चाहिये। सही उत्तर मार्च २००९ के अंक में प्रकाशित होंगे।

१. भारत का पहला अनावासित हवाई अड्डा कहाँ बनाया गया है?

२. सिस्टर अल्फोंजा को विगत १२ अक्तूबर को सन्त घोषित किया गया। केरल में उनका जन्म स्थान कहाँ है?

३. चतुर्थ कौमनवेल्थ यूथ गेम्स में भारत ने सर्वाधिक पदक जीते। भारत द्वारा जीते गये पदकों की संख्या कितनी है? स्वर्ण पदक कितने हैं?

४. एक भारतीय दम्पति ने पिछले वर्ष का रैमन मैगसेसे पुरस्कार जीता है। वे कौन हैं?

५. ओलम्पिक खेलों में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाला प्रथम भारतीय कौन है? किस खेल में उसने इसे जीता?

६. भारत ने अपना पहला फिल्ड मार्शल खो दिया। उसका नाम क्या था?

PANGAA GANG

वन विनाश क्या है?

वन विनाश का अर्थ है वृक्षों की कटाई और वनारोपित क्षेत्र को घटाना।

वन विनाश क्यों किया जाता है?

आवास के लिए नई भूमि प्राप्त करने, कारखाने बनाने तथा बाग बगीचों के लगाने की माँगों को पूरा करने के लिए यह किया जाता है।

वन विनाश के कारण क्या हैं?

इसके अनेक कारण हैं। लोग वृक्ष क्यों काटते हैं, इसके मुख्य कारण हैं:

- लकड़ी की वस्तुएँ और कागज बनाने के लिए
- कीमती पत्थर तथा पेट्रोल निकालने के लिए जमीन की खुदाई के वास्ते
- भूमि विकास, घरेलू युद्ध तथा प्राकृतिक साधनों के अभाव के कारण

विश्व के सबसे बड़े बरसाती वन इस प्रकार हैं (अवरोहण के क्रम में बड़े से छोटे की ओर):

- दक्षिण अमरीका की आमेज़न-घाटी
- केन्द्रीय अफ्रीका की कांगो नदी-घाटी
- दक्षिण पूर्व एशिया
- न्यू गाइना
- मेडागास्कर

कुछ तथ्य:

- यदि वृक्षों को काटने से रोका नहीं गया तो पशु और पौधे नहीं रहेंगे और जलवायु जीवन के प्रतिकूल हो जायेगी।
- औसतन १३७ जातियाँ प्रतिदिन विलुप्त होती हैं, यानी ५०,००० जातियाँ प्रति वर्ष!

हमलोगों के लिए वन विनाश खराब क्यों हैं?

- पौधे, कीड़े तथा पशु विलुप्त हो जाते हैं।
- इससे जीवजातियों का प्राकृतिक निवास नष्ट हो जाता है।
- वृक्षों और पौधों के हट जाने से भूमि-क्षरण होता है। वर्षा का जल भूमि की सतह के पोषक तत्वों को बहा ले जाता है।
- जलस्तर ऊपर उठ जाता है, जिससे बाढ़ आ सकती है।
- जलवायु शुष्क और बहुत गर्म या बहुत ठण्ढी हो जायेगी।
- वृक्ष कार्बन डायोक्साइट लेते हैं और ऑक्सिजन छोड़ते हैं। परन्तु कम वृक्ष होने पर अधिक कार्बन डायोक्साइड वातावरण में छोड़ा जायेगा, इस प्रकार श्वास की समस्या उत्पन्न हो जायेगी।
- भूमि, जल तथा वायु प्रदूषण

इसलिए वन विनाश को रोकने के लिए तुम क्या कर सकते हो?

www.pangaagang.com को लॉग ऑन करो और वन विनाश के विरुद्ध उनके संघर्ष में पंगा गैंग में शामिल हो जाओ।

Copyright @2009 Shemaroo Entertainment Pvt. Ltd. all rights reserved

आप के पन्ने

तुम्हारा परिवेश

तैरते कंकाल

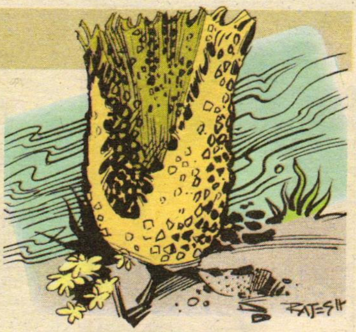

स्नान करते समय तुमने स्पंज का उपयोग किया होगा। लोग शताब्दियों से स्पंज का प्रयोग करते आ रहे हैं और वे समझते हैं कि ये पौधे होते हैं जो समुद्र-तल में पैदा होते हैं। बाद में वैज्ञानिकों ने अनुसंधान द्वारा पता लगाया कि ये स्पंज सांस लेते हैं और भोजन ग्रहण करते हैं और यह निर्णय दिया कि ये पशु हैं। यदि एक स्पंज को टुकड़ों में काटा जाता है तो प्रत्येक टुकड़ा स्वतः वर्द्धित होते हुए देखा गया है। यह कितना विचित्र है! है न?

स्पंज अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ छोटे और कोमल होते हैं। कुछ बड़े और सख्त होते हैं। ये कई आकारों और रंगों में बढ़ते हैं।

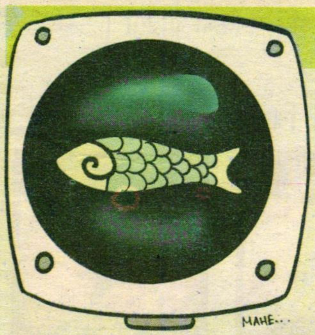

विज्ञान तुम्हारे लिए

अपना दिशा-सूचक यंत्र स्वयं बनाओ

तुम्हें आश्चर्य होता होगा कि कैसे वायुयान और जलपोत रात्रि में दिशा का पता लगाते हैं। वे चुम्बकीय कम्पास नाम के एक उपकरण से यह जानकारी पाते हैं। तुम अपने लिए एक चुम्बकीय कम्पास स्वयं बना सकते हो। इसके लिए, तुम्हें ३ से.मी. लम्बी एक सिलाई की सूई, एक छोटी चुम्बक पट्टी, एक कॉर्क का छोटा टुकड़ा और कटोरे में कुछ पानी की जरूरत पड़ेगी। कॉर्क से एक रुपये के सिक्के के बराबर एक टुकड़ा काट लो। फिर उस टुकड़े में सूई को चुभो दो। चुम्बक-पट्टी के नॉर्थ पोल को कम्पास की सूई के दोनों छोरों के पास ले जाओ। सामान्य तौर पर नॉर्थ पोल को सफेद बिन्दु से निशान लगा दिया जाता है। वह छोर जो विकर्षित कर दिया जाता है कम्पास सूई का वह नॉर्थ पोल है। इस पर 'एन' का निशान लगा दो।

अब इसे कटोरे में पानी के ऊपर रखो जिससे तैरती हुई सूई जल स्तर के समानन्तर रहे। जिस दिशा में सूई तैरती हो वह उत्तर-दक्षिण है। क्योंकि तुमने पहले ही नॉर्थ का निशान लगा दिया है, अन्य तीन दिशाओं का पता लगाना आसान है।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ
शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना
सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित
चित्रों के
अनुकूल हो?

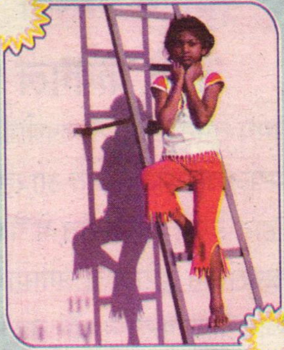

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

राजेश्वरी सिंघ
००४, सर्वप्रिय अपार्टमेण्ट्स
सर्वप्रिय विहार
नई दिल्ली-११००१६.

विजयी प्रविष्टि

साथ-साथ जीते हैं।
साथ-साथ पीते हैं।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. बाल गंगाधर तिलक; २. भारत-भारती; ३. शंकर कुरुप, मलयालम कवि, १९६५ में; ४. विष्णु शर्मा, २०० बी.सी. में; ५. विजय तेन्दुलकर; ६. वन मोर ओवर; ७. गीतांजलि, १९१३; ८. अबुल फज़ल; ९. मुहम्मद इक़बाल।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited,
JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**

पी सी आर ए साइट पर सर्फ करें – पी सी आर ए गतिविधियों की खोज करें!

मोहन वेब पर जब सर्फिंग कर रहा था, तभी उसका दोस्त सोहन घर पर आया। "पी सी आर ए क्या है", उसने स्क्रीन पर वेबसाइट को देखकर पूछा।

"पी सी आर ए पेट्रोलियम कन्जर्वेशन रिसर्च एसोसियेशन का लघु रूप है जो पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीन एक केन्द्रक अभिकरण (नोडल एजेन्सी) है। यह संस्था पेट्रोलियम संरक्षण के विषय में देश भर में शिक्षा-आन्दोलन के माध्यम से जन-जागरण उत्पन्न करने के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत है।" मोहन ने समझाया। "यह काफी दिलचस्प है! कुछ और बताओ!" सोहन बोला।

"ठीक है। पी सी आर ए प्रतिवर्ष १५ जनवरी से ३१ जनवरी तक तेल तथा गैस संरक्षण पखवारा (ओ जी सी एफ) आयोजित करता है। ओ जी सी एफ १९९१ में आरम्भ किया गया था और इसका आयोजन पी सी आर ए तथा सरकारी तेल तथा गैस कम्पनियों द्वारा संयुक्त रूप से, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय के निर्देशन में किया जाता है। यह राष्ट्र व्यापी आन्दोलन देश भर में ऊर्जा संरक्षण के महत्व के विषय में जन जागरण उत्पन्न करने और फैलाने में बहुत प्रभावशाली साधन बन गया। "मोहन ने कहा।

"ओह, मुझे अब याद आयी। विगत जनवरी में अपने स्कूल में आयोजित एक चित्र प्रतियोगिता में मैंने भाग लिया था और प्रथम पुरस्कार जीता था। प्रतियोगिता का विषय था, "बेहतर जीवन के लिए तेल तथा गैस बचाओ।" सोहन ने उत्तेजित होकर कहा।

"केवल चित्र प्रतियोगिता नहीं, ओ जी सी एफ पेट्रोलियम उत्पादों को बचाने की आवश्यकता के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए और भी अनेक प्रतियोगिताएँ संचालित करता है, जैसे- स्लोगन राइटिंग, साइकिल रैली आदि। हमलोगों के फॉसिल फ्यूल भण्डार तेजी से घट रहे हैं, परन्तु यदि हमलोग पी सी आर ए के सुझावों पर अमल करें तो आपूर्तियों को बहुत दिनों तक बरकरार रखने की काफी गुंजाइस है।" मोहन ने कहा।

"यह तो आश्चर्यजनक है!" सोहन ने कहा। "हमलोगों को इसके बारे में और अधिक लोगों को बताना चाहिये!"

"हाँ, जितनी अधिक जागरुकता होगी, उतना ही अधिक इन्धन हम संरक्षित कर सकते हैं। हमलोगों को याद रखना चाहिये कि मात्र २ प्रतिशत पेट्रोलियम उत्पादों को बचा कर हम प्रति वर्ष १०,००० करोड़ रुपये की बचत कर सकते हैं!" मोहन अपनी सहमति देते हुए मुस्कुराया।

इन्धन बचाने के कुछ सुझावः

- सर्वोत्तम इन्धन दक्षता प्राप्त करने के लिए ४०-५० कि.मी. प्रति घण्टा की गति से वाहन चलायें।
- कारपूल्स में अपनी कार साझा में दें– इन्धन और पैसे बचायें।
- यातायात लाल बत्तियों पर १५ सेकेण्ड से अधिक रुकने पर इन्जिन बन्द कर दें, इससे आप का इन्धन बचेगा और आप के पर्यावरण की रक्षा होगी।

Dear Children,
Please write a short slogan on "SAVE FUEL, SAVE MONEY" and send it to the PCRA address given alongside & win attractive prizes!

Name...

Age.............................. Class...............

Address...

....

E-mail...

MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS

PCRA PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION

Additional Director (EC),
Sanrakshan Bhawan, 10, Bhikaiji Cama Place,
New Delhi 110066.
E-mail : pcra@pcra.org

CHANDAMAMA (Hindi) January 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08